# अथ सतसंगसागर पूजरा ॥

## अथ संकल्प ॥

ॐ विस्वंविस्नुं जम्बूदीपे भारतखंडे आर्जावर्ते पुन्निछेत्रे कलउजुगे सम्बत्सरे रुद्रायदिने आत्माजसे सतसंगसागरे श्रवणाय वांछना फले प्राप्त महंकरिखे संकल्प इति ॥

( अथ अस्नान ) जलअस्नानं नीचयं भस्मअस्नानं उत्तिमं । ज्ञानअस्नानं परम्पद्म सोयं ब्रह्म नमस्त्वत्म इति अस्नान ॥ ( अथ चंदनमंत्र ) मलयत प्रमात्मं आनन्दब्रह्मं इति गंध ( अथ फूलमंत्र ) पुस्पाय पूँएमजसयत अनन्द्म इतिपुस्प ( अथ अच्छत ) साल्याय पूज्यमअच्छताय आचरण इतिमंत्र ( अथ भोगमंत्र ) भाव्त विसदय आत्माय भक्ष्यह इतिभोग ( अथ ताम्बूलमंत्र ) तत्त्राय ताम्बूलं ब्रह्म अर्पण नमस्त्वते ॥

इति पूजरा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

श्रीगणेशाय नमः ॥

ओं श्रीसालिग्रामायनमः । ओं श्रीगुरूभ्यायनमः । ओं श्रीहनूमानायनमः

ओं श्री सारस्वतायनमः ॥

# अथ सतसंगसागर प्रारम्भः ॥

दो० नाम गणपती गुरुचरण हनोमान मनरंग ।
सारस्वत बन्दनकरौं कहौं सागर सतसंग ॥
अहंब्रह्म उरध्यान धरि सतगुरु पद बलपाय ।
करौं प्रघट सतसंग जग बिश्वासं फलदाय २॥
सो० ज्ञानभक्ति परकाश प्रातकालकी समयसम ।
ऐसाहै सतसंग जानत निजप्रभु दासकोउ १॥

चौ० बन्दहुगणपतिनामत्रिकाला * बुद्धिहीनमोंहिजानिकृपाला॥
चितवोउकोर ओर मोरि ताता * मैं तव पुत्र ज्ञानकर नाता ॥
गणपति ज्ञान नात जो मानौं * आपनदास सत्तिनिज जानौं॥
तव मोहिं बुद्धि मिलै बरदाना * कहौं संतसं सागर परमाना ॥
आप गजबदन मूस सवारी * अपनैंभार अपनिसिरधारी॥
कुछु औकाति मूसकै नाहीं * जो तुमका धारै तन माहीं ॥
आपै आंगुश आपै हाथी * आपमहाउत दोसरु साथी ॥
अपनै आपै भार सँभारा * दीन्ह्यौं मूँसे सुजस अपारा ॥
मैं हौं मूस ज्ञान हैं गणपति * इतनीसालिकरामकेसमपति॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो॰ गणपति नाम समूहता पतिपाती है संदेश।
मूसदुआ निज दासहैं आई नामके देश ३॥

चौ॰। बन्दौं सालिकराम सनेही * जे कोउ बसे सघनके गेही॥
बन्दौं सालिक राम विदेही * जे मीरा के परम सनेही॥
रूप प्रघट उर सुन्दर स्यामा * भयो सांप के सालिक रामा॥
तिनके बलबिख कीन्ह्यों पाना * जहर हलाहल सुन्दर ज्ञाना॥
रूप नील मणि सदा अमोले * पूरन ब्रह्म जग्त दृग खोले॥
रहैं जौहरिन के नित संगा * रामरूप कोउ भक्त अभंगा॥
दास रामकर मिश्रित नामा * सालिक दास राम हैं रामा॥
सालिकराम नाम अभिनासी * दास राम दोउसंग विलासी॥

दो॰ सालिकराम कि मूरती नयनन करै बिहार।
यक तिलके उनमान तन देखै सब संसार॥
बन्दिनामनिजइस्टमम पतिब्रतात्रियहितजानि।
गणपतिसरिस प्रनामकरि सदाबुद्धिके दानि ५॥

चौ॰ पुनिबन्दौंफिरिगुरुकेचरना * मोहदरिद्रकस्ट सबहरना॥
जासु कृपा बुधि पावौं ज्ञाना * होउ दयाल गुरू भगवाना॥
आतम रूप चराचर व्यापे * कहि महिमा सब देवल थापे॥
अपनि आतमा गुरूजो करही * पूरन ब्रह्म अनँद मन भरही॥
और गुरू कहुँ नहिं संसारा * दीखलोक तिहुँ कीन विचारा॥
जबलगिमानैं न अपनिआत्मा * गुरुचहैकोउकरै लाखमहत्मा॥
जबलगि हिर्दयनहीं बिस्वासा * तबलगि तिहुँपुर परै उपासा॥
जल भे प्यास अन्न भे भूखा * लगे बसन्त झरे सब रूखा॥
रुपियापास दरिद्र न संका * यहिविधिआतमगुरूअसंका॥
गुरू वहै निज रूप लखावै * आतम चीन्हि जीव सुखपावै॥
तब गुरु चेला ते भे पारा * वोहु चहै मानैं चहै न गँवाँरा॥
चेला अस गुरुते कब पारा * आपनि प्रान मानि गुरुसारा॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सब संसार हिर्दय गुरु थापै * करै प्रनाम मिलै सुख आपै॥

दो० गुरू ब्रह्मास्रस्टिहिरचैं गुरूबिस्नु करैंपाल।
गुरू रुद्र सिंघार करैं आपै काल कृपाल॥
अपनिआतमा गुरूहै सत्तिकहौं यहरीति।
लाखकोईकोटिनकहै जबलगिउरनप्रतीति॥
सर्बरूपमयगुरूलखि असचेलामनध्यान।
सकलपदारथ सिसिमिलैंजीवनमुक्की ज्ञान ८॥

चौ० असगुरुबन्दिअपरकरौंबंदन*जयहनुमानअंजनीनंदन॥
राम रसायेनि ध्यान अधारा * कवि कपि बन्दौं बारम्बारा॥
राम रंग तन अरुन विशालं * ज्ञान सरूप निशाचर कालं॥
भक्ति अनन्य अनामय ब्रह्मू * गेरहौं रुद्र रूप कपि सम्भू॥
राम काज कारण हित आतुर * बुद्धिप्रवीन सभाबिच चातुर॥
जहँ जस तहँ तस करैं सँभारा * रामकाजहितकछु न बिचारा॥
लंका सह्यो लात अरु घूँसा * फिरिवइमाख्यो निस्चरहूसा॥
निस्चर शक्ति लेन हित मूँसा * हनोमानसहि लातरु घूँसा॥
रावण ब्रह्मण संकर दासा * मारत दास सक्ति भै नासा॥
यह रावण नहिं जानैं गँवारा * गेरहौंरुद्र हनुमत अवतारा॥
हनोमान सिव शक्ति छोड़ाई * दीन्ह्यौं आय जीति रघुराई॥
जिमि कोउ संतक मारै लाता * ताहिसक्ति सबलेय बिधाता॥
कुछु दिन बादि बंस कै हानी * राम दास मारै सुति बानी॥
कोउ कुछु कहै सन्त गम खावै * छठे मास तेहि मूल बहावै॥
आपनि शक्ति नास जो चहै * सो वोहु चहै कुछु सन्तककहै॥
हनोमान अस दास राम के * जस मायाबस जीव दामके॥

दो० हनोमान पदबन्दिप्रभु जिमि मन जग्तपियार।
सालिकरामके हिर्दयअस हनुमत सदा बिहार॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हनोमान के नाम का अर्थ कहौं समुझाय।
जो कोइ प्रभुकेदास जग सुनौं बचन चितलाय॥
अपनामान अहारकरि फिरि निस्चरनकेखाय।
रामकाजअतुलितकियो नहिंअभिमानसुभाय॥
महाबीर कबते भयो राम नाम लै भार।
कबिकपिनामधरायजग कियोजगतउपकार १२॥

चौ॰ तीनिनामहनुमतकहौंबंदन* अबसारस्वति करौं प्रबंधन॥
सारस्वति माता मम स्वामिनि * करौकृपा सुतसेवकजामिनि॥
पतनी ब्रह्म चतुर श्रुति गावै * सो ब्रह्मा ब्यापे लखि पावै॥
सोइ जो ब्रह्म सक्ति मम माहीं * तब मानस मुखपंकजआहीं॥
रसना बैठि कहौ पति लच्छन * तीनिलोकजो ब्रह्मबिलच्छन॥
गावत जाहि सेस श्रुति सम्भू * सनकादिकनारद अबलम्भू॥
ब्रह्मा विष्णु महेस अधारा * जो ब्यापे तिहुँ पुर संसारा॥
सकलसृस्टि जोइ सिरजनहारा * सबसंतन प्रभु परमअधारा॥
बालिमीक सुकदेव ब्यास मुनि * तुलसीसूरकबीर हिर्दयगुनि॥
कुम्भज कागभसुंड प्रान पति * तीनिलोक जानैं अंतरगति॥

दो॰ अधम उधारन दीनहित जो ब्यापे संसार।
दसऔतारजोधरेउसोइसरस्वतिपतीतुम्हार १३॥

चौ॰ गजद्रुपदीप्रहलादध्यानधरि*जैंकहुँहनाँआयतिनकेअरि॥
कपि सुग्रीव बिभीखन तारा * अधम जाति निस्चरसंसारा॥
सेवरी गीध कसाई गनिका * जिनके पेट समानेउँ बधिका॥
पीपा छीपा दास मलूका * जिनअपन्यायदीनजगटूका॥
धना जमन पारासर मीरा * सोना दासी दीन नजीरा॥
दस अवतार धरे जग माहीं * सो ब्यापे तीनिहुँ पुर माहीं॥
अस पति सारस्वती तुम्हारा*जिनजगमाअसअधमउधारा॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जिन २ के मैं नाम गनाये * अधम जाति वेदनजसगाये॥
यहि कारण बन्दौं महतारी * पिताचरित कछु कहौंविचारी॥

दो० त्रिगुन रूप तुम जगतधरि माता नारी कन्य।
माता पैदा पाप त्रिय कन्या कल्यां न्धन्य॥
मातापारवतीरमात्रियसरस्वति कन्याजानि।
पैदा पालन मारन तुम्हरे कर जग रानि १५॥

चौ० तुमबिनजीभकढ़ैनहिंबानी * तुमचर अचर ब्रह्ममहरानी॥
राम चरित हित बन्दन करहूँ * बार बार शिशु चरनन परहूँ॥
रसना सुफल हेत जस गाऊँ * तुम्हरी कृपा सुजस जसपाऊँ॥
ममअति रचित विरति संसारा * तुम्हरी कृपा होउँ भव पारा॥
निरंकार तुम जोति भवानी * नहिंतवआदिमद्धिअवसानी॥
ज्ञान भक्ति सागर सुख देनी * ब्रह्मलोककी विमल नसेनी॥
बुद्धि सुधारौ सेवक जानी * देउ बिमल सुन्दर बर बानी॥
जोसुनि मनभव उतरै पारा * आदिमद्धिलखिबिमलबिचारा॥

छं० नहिंआदिमद्धिअवसानिबानिपुरानिब्यापीनिरंजनिं।
गुणअगुणजगसृजिपालिसालिमरालि मानसनंदनिं॥
गावत गनेस महेस सारद सेस मन जन रंजनं।
सनकादि नारद गुण बिसारद भक्ति तव दुख भंजनं॥
ब्रह्म त्रिय प्रिय पतिब्रता गुण सुजस तिहुँपुर छावनं।
ब्रह्म व्यापिक आतमाहं बाणि तव आनन्दनं॥
अस बन्दना सारस्वती करि दास सालिक रामनं।
सतसंग सागर चरित अब वरणौं जथा मति भावनं॥

दो० नामगणपती गुरु हिर्दय हनोमान मनसाथ।
सारस्वत मम वानि है करौ सो सत्ति सनाथ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सो० कहौं सागर सतसंग ब्रह्म आतमा ध्यानधरि ।
सांतिरूपप्रभुअंग कामक्रोधमदमारिअरि १७॥

इति श्रीसतसंगसागरेमानसेआनन्दकन्देब्रह्मचरितेपंचदेवता प्रार्थनेवरणननामप्रथमोध्याय १ ॥

सुमति आगरी प्रश्न

चौ० एकसमयनिजसुमतिसुआगरि ❋ संतप्रियातिहुँलोकउजागरि ॥
महा कलेस भयो मन माहीं ❋ बिनानाम कतहूँ सुख नाहीं ॥
ममपति मिलै कहौ केहि देसा ❋ केहिते पूँछौं मिटै कलेसा ॥
येहि विधि सोच भयो मनमाहीं ❋ पतिकैमिलै न कहुँ परछाँहीं ॥
बिनुपति सकलभयो सुखछारा ❋ को तारै भवसिन्धु अपारा ॥
तबलगि एकसन्त मिलिगयऊ ❋ पूरबजन्म भाग खुलिगयऊ ॥
देखिसन्त चरनन लपट्यानी ❋ बोली प्रेम मनोहर बानी ॥
दीन बन्धु मम हरौ कलेसा ❋ सेवक जानि देउ उपदेसा ॥

दो० सुमति कुमति सब उररहै तेहिकर सुनौंबयान ।
अगुवाकारी तन जेहीं तेहि कर तस जगमान ॥
अगुवाकारी कुमति जहँ भई बिडम्बन जग्त ।
सुमती अगुवाकारि जहँ सोइ अगरी जससक्त ॥
लखै अगन्त सो आगरी नस्सु रूप संसार ।
जो पैदा तेहिकाल है लेउँ नाम जस सार २० ॥

चौ० आगरिसुमतीलखैअगन्ता ❋ कहौउपकारबचनकुछुसन्ता ॥
कहौसन्त निज नाम बखानी ❋ करौ हमार मोह भ्रम हानी ॥
विस्नुलाल तेहिनामसन्तकह ❋ जिनकहिभेदलोकतिहुँअंतयह ॥
रामनाम बिनु कहुँसुख नाहीं ❋ करौ बिचार प्रिया मन माहीं ॥
तवमति अगरी कहकरजोरी ❋ कसप्रियतुममोहिंकह्योबहोरी ॥
कौन नात मान्यों तुम साधू ❋ बोल्यो बचन दुस्टसम ब्याधू ॥
येहिकर भेद कहो समुझाई ❋ दुचित हिर्दय मम देउ मिटाई ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कहासन्त सुनु सुमतिसुआगरि * सुमतिजगतमाजेहिकैंजागरि ॥
सो हमारि त्रिय वेद बखाना * जहांसुमतितहँसम्पतिज्ञाना ॥
लेहुवचन मम हिर्दय बिचारी * अगरी सुमतिजगत ते न्यारी ॥
चारि वेद खट सहस बखानैं * कोउकोउ सन्त भेद यह जानैं॥
विस्नुलाल जे विस्सुके लालन * अगरीगोपि संग नँदलालन॥

दो० वृन्द नाम सामूहता बन बाना भगवान।
अगरीगोपीसुमतिउर रचैं रहस नितकान॥
चारहुजुग तिहुँकालमा सुमति आगरीहोय।
सो हमारि त्रिय सत्ति उर मनपति सेवैसोय॥
जोतुमहींपतिसुमतिके विस्नुलालसुनौसन्त।
तौ हमारिभ्रमनासिये कहिकुछुजसभगवन्त॥
तुम्हरेभ्रमनहिंकुछुहिर्दय सुमिरौआत्माराम।
यहुपतिममतवजग्तकर सति रसालिकराम२४॥

चौ० तवसुमतीअगरीकहबानी * कहिकुछुवचनकरौभ्रमहानी॥
जो तुमहीं पति अहहु हमारे * तीनि लोक दाता करतारे॥
अगरी सुमति गयौ पतिखोई * काम क्रोध मद लोभ विगोई॥
रहिगै सुमति आगे जस नासे * आगरिगै भ्रम मोह प्रकासे॥
सुमति हिर्दय जब राम बिलासैं * वह आगरिमति वेद प्रकासैं॥
अबहमसुमति भईनजगअगरी*पायसन्तपतिसुखनिजझगरी॥
पारवतीजस सिव पति पायौ*अपनिसकलभ्रमहिर्दयमिटायौ॥
पूछ्यौ राम चरित सुखसागर * तस हमारिभ्रम हरौ उजागर॥
रामचरित कुछु भाखौ स्वामी * तीनिलोक उर अंतर जामी॥
मोह निसाते लेहु जगाई * देउ विलास बानि सुखदाई॥
राखौ पास परस सुख सागर * देउ सुजससुत परमउजागर॥
रामचरित मन कहौ अभंगा * सुन्दर नाम प्रेम सतसंगा॥
जस महिमा गावैं श्रुति चारी *निरगुनसरगुनविमलाविचारी॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

उतपति परलय कहौ कहानी * चारौजुग सुन्दर बर बानी ॥
बिद्या भक्ति ज्ञानकी बातैं * रहस विलास प्रेमकी घातैं ॥
ब्रह्मा विस्नु महेस पसारा * इनके केहिविधि भयेऔतारा ॥
सतीरमा सारद कसआई * निज २ पति पायौ सुखदाई ॥
सनक सनन्द वसिस्ट कुमारा * नारद के केहि विधि औतारा ॥
आदि जोतिका कीन्ह्यौं लीला * सकल कहौ स्वामीसुखसीला ॥
नारद श्राप दीन गुरु भारी * केहिविधि भयो श्राप निरधारी ॥

दो० सनकसनन्दन मंत्रकस लीन्ह्यो संकरजाय।
दोवादस अच्छर मंत्रलै परमहंस बर पाय ॥
विस्नुमंत्रकेहिविधिलियो निजसंकरते जाय।
संकरलीन्ह्यों मंत्रहरि कहौ बचन समुझाय २६ ॥

चौ०रामनामजसप्रघटकृपाला * सकल कहौ प्रभुदीनदयाला ॥
जेहिविधि ब्रह्म सृस्टि प्रघटाई * सकल कहौ स्वामी मनलाई ॥
कच्छ कथा प्रभु कहौ बखानी * रतन निकारि बाँटिसुखखानी ॥
जेहिविधि मच्छ भयो औतारा * वेद छोड़ाय संखसुर मारा ॥
होय बराह धरनी लै आये * हिरन्न्याच्छ निजधाम पठाये ॥
हरनाकुस मार्यो दुखदाई * जिनप्रहलादकिबन्धिछोड़ाई ॥
होय बावँन नाप्यो तिहुँलोका * बलिवसहोइगे नाथअसोका ॥
परसरामकी कथा बखानी * सहसबाहु भुजकीन्ह्यों हानी ॥
रामरूप होय रावन मारा * दासनतिलक असुर सिंघारा ॥
भयो क्रेस्न बलदेव सुखारी * गोपिन संग केलि विस्थारी ॥
भयो बोध फिरि जाय गुसांई * त्रिपुरासुर मार्यो दुखदाई ॥
अब जस होंय कलंकी आगे * हनैं मलिच्छी रूप अभागे ॥
इतिममप्रस्न सकलसुखखानी * आगरिसुमतिविमलममबानी ॥
कहौ रामके चरित सुहाये * चारिहु वेद सन्त जेहिगाये ॥
बिस्नुलाल बोले तब बानी * आगरिसुमतिधन्निसुखखानी ॥



CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

धन्नि २ तुम्हरी बुधि अगरी * पकस्योप्रस्नहरिलकी लकरी॥
दो० मतिआगरि अबसुनहुजस रामनामके गूढ।
जोसुनिहैं अरु बाँचिहैं मतिसुधरै मन मूढ॥
आगरिसुमतिपुनीतजस सुनिआगरिमतिहोय।
प्रथम सम्भुकीबन्दना कहौंकपट उरखोय २८॥
इति श्रीसतसंगसागरेमानसेआनन्दकन्दे ब्रह्मचरितेमतिआगरि
प्रस्नसमाप्तनामदुइतीयोअध्याय २॥
कलमतीनिविभाग॥
चौ० अबबन्दौं संकर बृखकेतू * कीन चहौं भव सागर सेतू॥
राम नाम जेहि परम अधारा * ज्ञान अखंड भक्ति श्रुतिसारा॥
जेहिबल मुक्तिदेउ मधिकासी * सोइवर रामनाम अभिनासी॥
देउ मोहिं सोइनाम अभंगा * जेहिबल कहौं ग्रन्थ सतसंगा॥
मैं अनाथ यक दास तुम्हारा * पावहुँ बाणि भीख दरबारा॥
तुम्हरी कृपा तरे बहु पापी * निस्चर अधम देव परतापी॥
मैं तुम्हार अनुचर सुरखम्भू * देवभक्ति आपनि उर सम्भू॥
संकर महा दानि अनुमानी * सुफल करौ जग जाचकबानी॥
दीनबानि सुनि भयो दयाला * दैं संकर यक कलम कृपाला॥
ममलै कलमसही कस्योपाई * विस्नुपास अब मांगौ जाई॥
पायकलम सुख उरन समाई * चल्यौं विस्नुपुरसिवसिरनाई॥
दो० गयों विस्नुपुर जबहिंउर बैठि जहाँ जगनाथ।
मैं गरीब तहँ पहुँचिकै चरनन नायों माथ॥
लाग्यों अस्तुतिकरनमैं जग्तहेत होय दीन।
प्रेम ज्ञान निज भक्तिलै कीरति सदाँनवीन २९॥
चौ० जै२बिस्सुविस्नुसुखसागर * माया रूप छिपे नटनागर॥
लीला अगम जानिनाहिं परही * नटकृतकपटजाल जगकरही॥
है कछु और और ही भासै * बिस्सु नहीं यह ब्रह्म प्रकासै॥
CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बिस्नु रूप सब है संसारा * पालन तीनिलोक उपकारा ॥
मानस देहँ बिस्नु कर रूपा * लछिमीपति तीनहुँपुर भूपा ॥
जैति बिस्नु माया तव भारी * सबचर अचरमोहि नरनारी ॥
जेहिपर दया न होइ तुम्हारी * सो कस देखै प्रघट मुरारी ॥
मैं अनाथ तव दास भिखारी * कहँलगिअस्तुतिकरौंतुम्हारी॥
सुनि अस्तुतिभै बिस्नु दयाला * दीन्ह्योंआपनि कलमकृपाला॥
भस्यो अंक यहिभे सुचिसुन्दर *अबजावोब्रह्मपासअभिअंतर॥

दो० बिस्नु चरन सिरनायकै गयों ब्रह्मके धाम।
जहांसृस्टिबिधिरचतहैं पहुँच्योसालिकराम ३०॥

चौ०हिर्दयसृस्टिब्रह्मारचैं रचना*सालिकराम धस्योसिरचरना॥
लखचौरासी जुइनि जहाना *सकलहिर्दयनिजब्रह्मसमाना॥
जै २ ब्रह्म सकल उर बासी * घट २ सृष्टिरचैं अभिनासी ॥
तिलमा तेल दूध घृतजानी * बंसपती मा सहत प्रमानी ॥
फूल बासना तूलै धागा * येहि बिधि ब्रह्महिर्दै अनुरागा॥
गँगँन समान देहँ नहिं ताही * ममहितसगुणमेघ जगमाही ॥
कीन चहौं तुम्हरो गुन गाना * सतसंगति सागर परमाना ॥
करौ सहाँय ब्रह्मउर बासी * सतसंसागर रचौं बिलासी ॥

दो० रुद्रदया जेहिबिधि कियो बिस्नु कीनउपकार।
अपनी अपनी कलमदै तुमहूँ करौ सँभार ३१॥

छं० तुमहूँ करहु सँभार भार अपारमम सिरदारुनं।
सतसंगसागर गुण उजागर कहत मतिसकुचावनं॥
जैब्रह्मव्यापक शरणजाँचक सुफलकरुममवाणिनं।
ममकलमल्योहोयप्रगटब्रह्मकरयोधामघरआनंदनं॥
अंकधरलै धाम सुन्दर बिस्नु अच्छर भारनं।
लैरुद्रलेखणिपाइकरि धन पायसालिकरामनं १॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सो॰ तीनि कलमलै हाथ ब्रह्म चरन सिर नायकर ।
तीनोंदेव भै साथ तब निज भवनै चरन धर२॥

चौ॰आयउँधामकलमलैतीनी * तीनौं गुनलायों जग बीनी ॥
रजगुनकलमलकीरै करिहौं*सतगुणपालिविस्नुअंकभरिहौं॥
तमगुण सम्भु सही सिंघारा * करि पाई घर दीपक बारा ॥
माया कागद निज स्रुतिसारा * स्याही समता नाम विचारा ॥
ईगुरु गुरु मन भट हनुमाना * लै हटतार हटकि मद माना ॥
निन्द्याअस्तुति समै दुआइति * सत्ति वचन सुन्दरलै साइति ॥
दिन दीनता सो तिथी अतीता * समसम्बतलिखौंग्रन्थप्रतीता ॥
मान रहित बर मास पुनीता * सतसंसागर प्रारम् मीता ॥
सालिकराम दास लिखवइया * हनोमान मन हैं बतवइया ॥

दो॰ भवन भाव सुन्दर रचित लागेयौ प्रेमकेवार ॥
सारद हिर्दय विचारकरै लिखौंग्रंथ स्रुतिसार ३२॥
मति आगरिके कारने बिस्नुलाल स्रमकीन ॥
मति आगरि का हेतभा जग्त कामसब कीन ३३॥

चौ॰ बन्दौं ब्रह्मण ब्रह्मसरूपा * बरण अठारहके जोइ भूपा ॥
बन्दौं संतसमान जाहि चित *सान्तिअकारसदामनपरहित॥
बन्दौं सतगुरु निज उपदेसा * परस्वारथमनजिमिजगसेसा॥
बन्दौं जीव सकल चौरासी * राम नात मानौं अबिनासी ॥
बन्दौं गंगा धार त्रिबेनी * भक्ति बाणिक्रम समसुखदेनी॥
बन्दौं कासी अवध प्रयागा * विस्सुनाथ औ राम नुरागा ॥
बन्दौं गोकुल औ वृन्दाबन * जहँ श्रीकृस्नकेलिकीन्हौंमन॥
बन्दौं जगन्नाथ बलिभद्दर * तीनहुँ मूर्त्ति सहोद्रा वद्दर ॥
बन्दौं रामेसुर सुखदाई * सब चर अचर रमेसुरभाई ॥
बन्दि दोवरिका औ रनछोरा * निजआतमकहुँओर न छोरा॥
बन्दौं बद्रीनाथ केतारा * तप मूरति व्यापी संसारा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो० कच्छमच्छ बाराहपद नरसिंघ बावनरूप।
परसराम औरामक्रेस्न बोध कलङ्की भूप॥
कल्कीकरि सिंघारकरि भयो सुन्नि संसार।
आप जोतिकेहिर्दयमा लागेयौंकरनबिहार३५॥

चौ० रही जोति दासी दोउमूरति * विद्याभक्ति एक रंग सूरति॥

इति श्रीसतसंगसागरेमानसेआनन्दकन्देब्रह्मचरिते कलम
तीनिविभागशुभलग्न ततनामनक्षत्र बन्दनाब्रह्म
समूहताप्रलयदेसनामत्रितीयोध्यायः॥ ३॥

जोतिकथा

चौ० भक्ती सोयगई तेहिबारा * दस हज़ार बरसै संसारा॥
विद्या दासी करै बयारी * तब उठिबैठि जोति विकरारी॥
बरसै दस हजार माजागी * आपन रूप भूलि अनुरागी॥
जैसे मति आगरि तुमचेती * पाससदा पति नहिं मति नेती॥
तैसे भक्ति जोति गै भूली * पायो पती कमोदनि फूली॥
बिनपति को दुखहरिहै तोरी * अगरी सुमति भक्तिसुनुमोरी॥
तीनिलोक तक नयन उघारी * देखेउ नहिं आपन पतिनारी॥
भई विकल अभिअंतर सोची * सोय गये मति होइगै पोची॥
यह विचार सोचै मनमाहीं * पति विहीन मम जीवननाहीं॥
पति विहीन जगसुख सब ऐसे * बिनुपति वारि मीन जियकैसे॥
हे विधि मोहिं दीन दुखभारी * पतिविहीन उरलागि दँवारी॥

दो० कहुकलेस यह केहिकहौं कोऊसुननिनाहिंहार।
कहनेजोगिनबातयह मनमासोचुबिचार ३६॥

चौ०बिनुपतिसृस्टिचलैकसमोरी* हे विधि देउँकौन पर खोरी॥
पराजोति पर अस दुख भारी * जिमि ईश्वर ढूंढ़ै संसारी॥
ईस्वर हिर्दय मिलै कहँ आना * कस्तूरी बिन मृगा भुलाना॥
ईस्वर आप अंत मिलै नहीं * लागेउ भानुजाइउरमाहीं॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चन्दै उस्न सतावन लागी * येहिविधिबिलखैजोतिअभागी॥
सोये बुद्धि भ्रस्टि भै ऐसी * मोह निसा भै यहि जगजैसी॥
जोति न पतिजगमानहिंरामा * जब मिलिहैं तबउरसुखधामा॥
विलखैजोति त्रास दिनराती * हिर्दयभुलानि ज्ञानबुझिबाती॥
रोय रोय असकहैं भवानी * बृथाजग्त मैं जिअतअज्ञानी॥
मिलै कहां पति कहँ मैं जाऊँ * रचौं सृस्टि जगतबसुखपाऊँ॥
महाविपति नहिं जाय बखानी * यकपलकोटिनजुगसमजानी॥
इतना दुख आनत उरमाहीं * मनबुद्धिहिर्दयमांझउठिजाहीं॥
देखि कलेस बुद्धि मनभागे * कहांपरेनयहि हिर्दयअभागे॥
ज्ञान ध्यान धीरज ध्रमजाहीं * रामविहीनन उरकबों रहहीं॥
प्रघट न कहै जोति दुख भारी * निजपतिसोच सरम उरनारी॥

दो० देखारूप मलीन जब निजमालिक उरखेद।
तबदासी बोलतभई जिमि समुझावैं वेद३७॥

छं० कसमातु मनमुरझानअपनेहालप्रगटबखानहूँ।
तुमअलखजोतिअखण्डमण्डलदुखनसपनेउजानहूँ॥
तुमभक्तिरूपभवानि अस्त्रमचारि परेतवरूपही।
तुम्हरेदरसकटैंकोटिपातकतुमसोकसभ्रमकूपही॥
तुमहौअनन्यअनामिनिरंजनिलोकत्रैतवहिदैंभरे।
असकहत सालिकरामदासी तुम्हरेउरदुखकसपरे२॥

सो० तबबोली असजोति सुनुदासी जो दुखहिये।
बिनपानी जग मोति कावहिपापी जगजिये॥
कोउनहिं बांटैकलेस वृथाकहे जगभांड़ि है।
चहैंजावदेसप्रदेसमिलिवहैलिखाविधिडांड़िहै४॥

दो० सुने जोतिके वचन अस दासी दीन जवाब।
निरंकारका सोचक्या है यह बात खराब॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चौ० तबहिंजोतिबोलीमुसक्याई * निरंकार को कहौ बुझाई ॥
पुनि दासी फिरि कीन बयाना * तुमहीं निरंकार परमाना ॥
हुकुम होयतो कथा पुरानी *कुछुकहौंप्रघटसोसुनोभवानी॥
मैंकहि कथा हरौं दुखभारी * तुम बिसवाँस धरो अवतारी ॥
बिनबिसवाँस सकल जगमाहीं * कबहूँ सुखसिधिसपनेउँनाहीं॥
बिन बिसवांसी सदा दुखारी * जिमिरमसर खलजमैंउखारी॥
धरो जोति जो तुम बिसवाँसा * यकपल करौंदण्ड सबनासा ॥
कहौं कथा निज प्रघट बखानी * तुमहीं ब्रह्म ब्रह्म महँरानी ॥
तुरत करौ कुछु बेगि उपाई * जेहि बल मूल कलेस नसाई ॥
बिपति तुम्हें हमरे दुख भारी * कलपवृच्छ तुमसबसुखकारी॥

दो० भान ठंढ कहँ उस्न है चन्द उस्न कहँ सीत।
रूपसँभारो आपदोउ फोउ न हरण भवभीत॥
तैसे भूली जोति तुम करो निज रूप सँभार।
अबहीं नासौं दंड सब होउ बेगि भव पार॥
सुनिदासी के बचन अस हिदैं बैठि बिस्वास।
जानौं येहि के बचनते होय कलेस बिनाँस ४१॥

चौ०सुनौंबेवस्थाअबयहमोरी * कुछु भाखौ पुनि जतनबहोरी॥
निज पति शोच बसै दिनराती*पियामिलनकहुजेहितेहिभाँती॥
निजपतिखोजकहो केहि देसा * जो पूँछेउ तौ हरौ कलेसा ॥
पावों पति चलै स्रस्टि हमारी * इति मम दंड हिर्दय भै भारी ॥
पुनि दासी बोली कर जोरी * सुनितवहित कुछु कथा बहोरी॥
कहौं प्रेम रस बात पुरानी * सुनु तिहुँलोकजग्त महँरानी ॥
पूरब जन्म कथा सुनु रानी * निरंकार जस जोति भवानी ॥
पूरब जन्म एक जुग लागा * नामताहिकलि परमअभागा ॥
नर औ नारि पाप के रासी * हिर्दयहेरायगयो अभिनासी ॥
काम क्रोध मद मोह अपारा * ई निस्चर व्यापे संसारा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

घर घर पाप कथा धुनिलागी * निसदिन लोभप्रेम अनुरागी॥
संसै ध्यान करैं दिन राती * जेहिबिधितुमपतिबिनबिलखाती॥

दो० सुनु अगरी मति कलिधरम महापापके घोर।
मोहनिसा तहँअगमहै काम क्रोध मद चोर४२॥

चौ० गुरुश्रुतिसाधुबचननहिंमानैं * निजत्रियबचनकरैंपरमानैं॥
इरखा पुरखा छल दिन राती * चलैं अधर्मज्ञान बुझिबाती॥
पेट सोच सोचै चौरासी * निसदिन चढ़ी कालके फाँसी॥
बरनचारिनिजनिज मरजादा * तजि२ सहैंनितविषयबिखादा॥
भा पसु सकल भिस्ट संसारा * राजनेति नहिं धर्म विचारा॥
ज्ञान बिहीन भक्ति नहिं सपने * जांयदेवसनिसिकारजअपने॥
मायाके नर नारि सयाने * रामरूपहित सकल अजाने॥
करैं श्रुतिनका खल नरतरका * जियतै दंड परे खल नरका॥

दो० बेद धर्म मरजादगय उठा सन्त दुजमान।
मातपिता मानैं नहीं करैं क्रोधबस दान॥
महाँपाप जग देखिकै कल्की आयो राम।
सुन्निभयो संसार सब कीन बिखम संग्राम॥
महाँ मलिच्छी तुर्कहनि पापकीन सिंघार।
महाँप्रलयजगमाभईभयोब्रह्मअवतार४५॥

चौ० फिरिमेघनदैहुकुमकृपाला * करौबृस्टि सब जग्तबेहाला॥
चढ़े मेघ जग घोर घमंडा * करिकर सुन्ड धार ब्रहमंडा॥
सब परलय होइगै संसारी * आप अक्षयबटरहेयोखरारी॥
गा कल्की उर सब संसारा * तुम्हरे हिर्दय ब्रह्म पगधारा॥
कल्कीउर सब जग्त समायन * तुम्हरे उर कल्की नारायन॥
लै तिहुँलोक सकल उरमाहीं * सोइगइउ तन मन सुधिनाहीं॥
जैसे कोउ मरिजन्मैं आई * ताहि खबरि पुरबाँत भुलाई॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सोना मरना एक समाना * गयो भुलाय जन्म परमाना ॥
तैसे तुम सोइउ महँरानी * पूरब जन्मके खबरि भुलानी ॥
तीनिलोक अपने उर जाना * मम सुनि कथा करौ परमाना ॥
पूरब जन्म कथा मैं गाई * अपर उपाय कहौं समुझाई ॥
तुममा है तुम्हार पति रानी * करिनिजज्ञान लखौमहँरानी ॥
जिमि कस्तूरी मृगके माहीं * नहिंपायो बनबन बिलखाहीं ॥
मृतिका के त्रेइ पिंड बनाई * ब्रह्म विस्नु सिव नाम धराई ॥
करौ प्रघट निजकर्म भवानी * वइतुम्हारिपतिश्रुतिममबानी॥
वइपति वइसुत सुनौं बिचारा * जैसे बीज वृच्छ अवतारा ॥
पैदा बीज बृच्छका करहीं * बृच्छ बीजलै फलअवतरही ॥
पढ़ि निजसोहं मंत्र भवानी * होय पिंड सरजीव सयानी ॥
पिंड प्रघट करि मन सुखलेहू * आसिरबाद हमैं तुम देहू ॥

दो० सुनिदासीके बचन अस जोतिभई आनन्द ।
मनहुँरंकपारसमिलेउ कटेउ भरमकेफन्द ॥
पिंडबनायो तीनितब ब्रह्मा बिस्नु महेस ।
लैजलसोहंमंत्रपढ़िसुमिरेयोज्ञानगनेस ४७ ॥

चौ० मारेयौब्रह्मपिंडजलजबहीं * भयउप्रघट ब्रह्मा तेहि तबहीं॥
दोउ करजोरिकहेयौ बिधिबाता *केहिहितप्रघटकीनमोहिंमाता॥
अरसपरसहित तय अवतारा * चलै स्रस्टि उपजै संसारा ॥
तब बिधि जोरि कहा करतारी * मैं नहिं अर्स पर्स महँतारी ॥
यतरा सुनत जोति मन माखा *क्रोधअगिनिकरिब्रह्माहिखाखा॥
दूसर पिंड फोरि वहि तारी * दोउकरजोरि ठाढ़ि त्रिपुरारी ॥
केहि हित प्रघट देउ उपदेसू * मम पति होउ तौ कटैं कलेसू ॥
जोति वतायो सिव नहिं माना * कीन महेसउ खाखअजाना ॥
पुनि करिसोच दोऊकरजोरेसि * तीसरपिंड बिस्नुकर फोरेसि ॥
बिस्नु प्रघट होइ दोउकरजोरी * केहिहितप्रघटसो कहौबहोरी ॥

दो० जगत हेत मैं प्रघट करि सुनौं बिस्नुममकर्म ।



CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

असकुछ हिर्दयबिचारिये चलैं जग्तकेधर्म ४८॥

चौ०कहाजोतिममपतिकरुनाता*येहिहितप्रघटकाजइतिताता॥
सृस्टि हेत मैं पैदा कीना * त्रियादासिबचन अस दीना॥
सुनि अस जननीबचनकराला *पुनिफिरिबोलेउविस्नुकृपाला॥
जो जननी यह जतन बिचारी * बिद्यादासि तुम्हैं उपचारी॥
सोयहसुलभसकलसुखदायक *मुलुमैंकहौंमतिसरिससुहायक॥
दोउ ममबन्धु जिआवउआछे * तब तुम्हारिकारज होइँ पाछे॥
तुमहूँ धरौ तीनि तन माता * तब कुछु आगेबचनबिधाता॥
सुनि सुतबचन जिआयउ दोऊ * विस्नुचरनआयपरेभटदोऊ॥
जेठ बिस्नु जानि दोउ भाई *बिस्नुलीनदोउहिर्दयलगाई॥
ब्रह्म महेस प्रथम अवतारा * बिस्नु मानै यह नातअपारा॥
ब्रह्म महेस गुरू करि जाना * दूसर जन्म नात असमाना॥

दो० प्रथम पिंडफोरेजोई बिस्नुमानि गुरुनात।
दुसरे पैदाभयोबिधि बिस्नुदेखितिवतात ४९॥

चौ० उइउनके उइ उनके गुरू *तीनौ मूर्ति ध्यान असउरू॥
तीनौं जने परस्पर मिलेऊ *आगिलचरितभयोतससुनेऊ॥

इति श्रीसतसंगसागरेमानसेआनन्दकन्देब्रह्मचरिते जोति
दुखेदासीप्रचारेकलउचरितेजोतिआनन्देपतिलाभे
मनआनन्दनामचतुर्थोध्यायः ४॥

गात्रीकथा॥

चौ० ब्रह्मैदीख जोति,महतारी * तब निजअंतर बचनबिचारी॥
सिद्धिरूप मम है महतारी * अब ई असुध होइँ त्रैनारी॥
इनके नाम मंत्र लिखिलेहौं * सो गात्री ब्रह्मै कुल देहौं॥
आदि जोति गात्री अवतारा * तेहिकर अर्थ करौं बिस्थारा॥
गात्री नाम प्रथम ओंकारा * भूर भूर भुँइँ सरिस अपारा॥
स्वह स्वोहा पैदा लैकारी * तत नम्र पाँचौ तत्त बिचारी॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सबितुर सत्तितुरी जिउ रूपा ❋ नाम बरणनं बरण अनूपा ॥
भरगो नाम इन्द्रियन केरा ❋ देवस्से नम्र देवन केरा ॥
धीमहि नाम ध्यान है भाई ❋ चौरासी भरि ब्रह्म समाई ॥
जोना जुइनि लाख चौरासी ❋ प्रचोदयत्तु दया अबिनासी ॥

दो॰ निजमाताकी अङ्क के अच्छरदिब्बि निकारि।
ताके चौबिस अङ्ककरि ब्रह्मकुलै निरधारि ५० ॥

चौ॰ येहिबिधिअच्छरचौबिसजानी ❋ गात्त्री ब्रह्मरूप महँरानी॥
प्रात ध्यान बालक कर रूपा ❋ मद्धि जवान पाल जगभूपा ॥
ब्रिर्ध अवस्था सायङ्काला ❋येहिबिधिकरित्रिकालकटैंजाला॥
जनौंजानि निज जान उपासं ❋ ब्रह्मा बिस्नु महेस सुपासं ॥
ई तीनौं लर जग्योपवीता ❋ ग्रन्थि जोति परवर परमीता ॥
मम सुत ब्रह्मण असअवतारा ❋ तेहिकुल गात्त्री देहौं बिचारा॥
तेहि ब्रह्मण मँहिते नहि भेदा ❋ सनकादिक सम चारौं वेदा ॥
ब्रह्मण ब्रह्म रूप अवतारा ❋ सदाँ अकाम जग्तहितकारा ॥

दो॰ तिनिहींपन संसारके चौरासी भरजान।
बालअवस्थाजुआब्रध असगात्त्रीपाढ़िध्यान ॥
येहिबिधि गात्त्री ब्रह्मलै उरअनंद अनुराग।
लागेयौअस्तुतिकरनबिधिभक्तिसोजोतिबिराग ५२

छं॰ भक्तिसक्तिचंडनिंअखंडब्रह्ममंडनिं बिरागजोगसंप्रदाअने कदैत्तिभच्छनं। तोयंमातुलच्छभच्छकच्छसेससर्वभार भगवती भगानिमानिविलच्छनीनपच्छनं ॥ सर्वरूपभामिनिंअनेककाम कामिनिं सरूपभाँणमंडनंमुखारबिन्दक्रान्तिनं । प्रवेसदेसदेसनिं अनेकभेसभेसनिं कलेसकर्मकाटनंसोदासनासिभ्रान्तिनं ॥ ब्रह्म बिस्नुअरुमहेससिद्धिसकलअरुगनेस गंगनिंअभंगनिं समान सर्वभावनं । ओंसालिग्रामसकलकामगात्त्रिसुपात्त्रित्रिकालअ हमब्रह्मआदिमद्धिअंतएकरूपआवनं ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो॰ निरंकार गात्री की ब्रह्मै अस्तुति कीन।
तेहिछिनजग्तके हेतलगि जोतितीनतनलीन॥
सती सारदा रमातन ब्रह्मा बिस्नु महेस।
तबहिं बिस्नु बोलतभयो दीन त्रियन उपदेस॥
लच्छनलछिमीसतीसति सरस्वतिसूरतिवेद।
ब्रह्माविस्नुमहेसगुन रजतमसतसोनरेस ५५॥

चौ॰ सारदब्रह्मसतीसिवपावा ※ बिस्नुलाच्छिमी छीर पठावा॥
सती दच्छ घर सम्भु पठावा ※ निजनिजभवनगईंमनभावा॥
बिस्नु कीन बैकुंठ निवासा ※ जाय बसे संकर कैलासा॥
प्रथम कर्म ब्रह्मा संसारा ※ आतम पूजि बाल अवतारा॥
दुसरे तम गुण संकर जानी ※ भ्रम सिंघार प्रबलतनध्यानी॥
तिसरे बिस्नु दया पालन करि ※ वृद्ध अवस्था मान मोह हरि॥
ई पिंडी तीनौं गुण केरी ※ मन माटी सरजीउँ बनेरी॥
भक्ति जोति कीन्ह्यौं उपकारा ※ तबते करम चले संसारा॥
ब्रह्मण पूजा ब्रह्मा पिंडी ※ पूजा लिंग सो सिव ब्रहमंडी॥
पूजा विस्नु दया संसारा ※ इति पिंडी करमन अवतारा॥
बिना भक्ति को कर्म जगावै ※ बिन बिद्याको भक्ति उठावै॥

दो॰ भक्तिजोति गुनिके कथा ताके अर्थ सो एह।
सालिकरामअनंदमनसुनिजनकरैंसनेह ५६॥

इति श्रीसतसंगसागरेमानसेआनन्दकन्देब्रह्मचरितेगात्रीअर्थे
कर्मबिभागेभक्तिप्रतापेकर्मअर्थेनामपंचमोध्याय ५॥

बिध्वादासीप्रश्न॥

चौ॰ तबदासी बोली करजोरी ※ मातु सुनौं बिनती कछु मोरी॥
तुमनिज निजपति पायो नारी ※ ममपतिकहाँसोकहौबिचारी॥
सुनि दासीके बचन भवानी ※ तब सारद बोली अस बानी॥
तुम्हरेव पति ब्रह्मै जगजाना ※ अपरनतिहुँपुरपतिकहुँआना॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मैं श्रुति भीतर बाहेर नाहीं * तुम विद्या बाहेर प्रघटाहीं ॥
हम रानी तुम सदा नृित्तकी * तव पति बहु हम एकबृत्तकी ॥
मम पति तव पति एकै रूपा * ब्यापेउ ब्रह्म चराचर भूपा ॥
ब्रह्मलोक ब्रह्मा तब गयऊ * नारिनसहितअनँदमनभयऊ॥
अर्स पर्स दोउ नारिन कीन्हा * गर्भदान सुन्दर बिधि दीन्हा ॥
जिमि त्रेइगुन देवलकोउथापै * हाथ जोरि माँगै कुछु आपै ॥
तब तेहिते देवल कहैं बानी * तम भक्ती माता मम जानी ॥
हमतुम्हारिसुत कसकरिकामा * जो पति होय कामकरि बामा ॥
येहिबिधिजोतिहिस्टिजबकीना * तबहि बिस्नुयहमारग दीना ॥
देवल ते भक्ती लै कामा * तबते कर्म भृस्ट जग सामा ॥
भक्ति अकाम जोतिअवतारा * वहि भे तीनिलोक उपकारा ॥
आसा भक्ति तीनि भईं नारी * रजतमसतपतिकीअधिकारी॥
यहै भोग ब्रह्मै जब कीना * अपने हिर्दय पाप का चीना ॥
चढ़े ब्रह्म सिर पातक भारी * दासी भोग भोग महतारी ॥
बिद्या परस अंक उर धरही * आरस परस कामकुछु करही ॥
सारद जोति रूप अवतारा * तेहि भे भयो सकल संसारा ॥

दो॰ लखचौरासी जुइनि जो सकलब्रह्ममय जानि।
चौरासीपरेदेंहनर सत्ति सत्ति मतमानि ५७॥

चौ॰ बिस्नुदेस संसारबसावा * संत देस संकर प्रघटावा ॥
पैदा बिस्नु बिस्नु संसारा * संकर संत कीन अवतारा ॥
अपरजुइनि जो लखचौरासी * सारदब्रह्म प्रघटिअभिनासी॥
पातक देहजानि बिधिजबहीं * तनुतजिगयोबिस्नुउरतबहीं ॥
ब्रह्मलोक रहि सारद दासी * हिर्दयअनन्दसोगर्भबिलासी॥
कछुक दिवस बीते ब्रह्मलोका * हिर्दयअनन्दगयो सब सोका॥
सारद पंच पुत्र अवतारा * यक दासी के भयो अधारा ॥
सनक सनन्दन सनतकुमारा * अपर बसिस्टभयो अवतारा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भयो प्रघट दासी के नारद * जिन सब धर्म कीनजगगारद॥
सनक सनन्दन सनत कुमारा * चारि बेद जान्यौं अवतारा॥
नारद नाद बसिस्ट बासना * उपरहिती के कर्म आसना॥

इति श्रीसतसंगसागरेमानसेआनन्दकन्देब्रह्मचरितेब्रह्मदेंह तजेपातकहेतेसनकादिबेदजन्मेनारदनादेवसिस्ट उपरहितेकर्मनामखस्टमोध्यायः ६ ॥

नारद गुरूकथा ॥

चौ० बीनलियेनारदअवतारा * गयोबिस्नु पहँ पगसिरधारा॥
नारद देखि बिस्नु मुख फेरा * गुरु बिहीन उरपाप घनेरा॥
तब नारद कह गुरु कहँ पाऊँ * कहौ देस केहि कहँ मैं जाऊँ॥
पुनि फिरि बिस्नु कहा अनुरागे * जाउ चले कोउ पायौ आगे॥
दो० नारद आतम गुरूकरि सो ब्यापी संसार।
सोआतमतवहिर्दयमामानिवचनानिरधार ५८॥
चौ०जोपहिलेकोउमिलैसुजाना* कीन्ह्यौंगुरुममबचनप्रमाना॥
बिस्नु बचन सुनि नारद उठेऊ * चले जात यकसरितटगयऊ॥
यक निखाद तहँ जार लगाये * नारद देखि चरण सिरनाये॥
कह निखाद तुम को कहँ जाहू * तव उर जरै सोचकै दाहू॥
तब नारद अस बचन बखाना *हमगुरुबिनजगफिरतअज्ञाना॥
कहाँ मंत्रलेहौ कहौ बिचारी * पुनि नारद बोले सिरधारी॥
तुम ताजि गुरूआन कहँ जाऊँ * देवमंत्र मोहिं सिस्सि बनाऊँ॥
तब निखाद कह मैं बड़ पापी * तुम गुरु करौ कोऊ बड़ जापी॥
दो० हमपापी चण्डाल हैं जीवै सदा अहार।
भच्छअभच्छबिचारनहिं केहिबिधिधौंभवपार॥
जाति हमारि निखादकै महाँ नीचते नीच।
सब जाती जगबारिहैं हैहमारि जगकीच ६०॥
चौ०हमअसअधमनकोउसंसारा*अधरमज्ञानरहितअवतारा॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तिनका तुम करै गुरू बिचारा * यह मति तुम्हैं कैं दै संसारा ॥
तब नारद बोले कर जोरी * बिस्नु पठायो मोहिं बरजोरी ॥
जो प्रथमैं कोउ मिलै जहाना * कीन्ह्यौं गुरू बेद परमाना ॥
अधरम धरम न कुछुमैं जानौं * बिस्नु बचन परमान प्रमानौं ॥
अस नारद सुनिवचननिखादा * दै निजमंत्रसो हरेयो बिखादा ॥
दीन दीनता मंत्र खरारी * कीन्ह्यो सदा नाम रखवारी ॥
जो चलिहौ तुम राहकुचाला * होय खराब नाम निज काला ॥
जो निज नाम न सेवै प्रानी * चलै कुचाल नाम निज हानी ॥
ताहि कुदसा होय संसारा * बिस्नु बैर मानैं करतारा ॥
जपेउ नाम निज उरलै रामा * होइहैं सुजस परम सुखधामा ॥

दो॰ येहिबिधिजानौं मंत्रनिज जपेयौसदानिंहँकाम।
परस्वारथ राखेउहिर्दय पइहौ रामकानाम ६१॥

चौ॰ निजगुरुचलनिचलेयौनाहिंनारद * नहिंतवधर्महोंयजगगारद॥
गुरु नहिं चलनि बचन लैलेहू * होय प्रसन्न जो वै कुछ देहू ॥
नीलकंठ कीरा निज चुनहीं * दरसिकामगुनसुजननगुनहीं॥
जाहि कीट पैदा पाटम्बर * अगिनिनी चधुँअँमेघसोअम्बर॥
गंगाजल महात्म ते कामा * रहेयौसधन घर सालिकरामा ॥
होय बराह बिस्टा प्रभु खावा * पतिब्रत तुलसा जाय छोड़ावा॥
येहिबिधिगुरुकोटिनधरिभेखा * सिक्खिकबोंचहि करैनलेखा ॥
नारद सुनो धर्म सति एहा * गुरु के बचन प्रेम करो नेहा ॥

दो॰ देंह गुरू नहिं बचन गुरु गुनगुरु वेद प्रमान।
नारदसमुझायोगुरू सिक्खिनमन विश्राम॥
नारदउरअसबरतही गोडिया जाति असुद्ध।
बिस्नु बचन काकाकरी मोंहिंसमुझावैबुद्ध ६३॥

चौ॰ नारद उरअस दुबिधाआई * ऊपर ते चरणन सिर नाई ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जो तुम कहा सत्ति हम माना * तुम्हरे बचन सुनत भै ज्ञाना ॥
अब आज्ञा मोहिं देउ कृपाला * जाउँ धाम निज दीनदयाला ॥
जाउ धाम मानेउँ मम बचना * नारद चले धरे गुरु चरना ॥
अन्तर सोच चले मग जाहीं * करि गुरु उर प्रतीत भै नाहीं ॥
तजि निखाद तन बिस्नु कृपाला * गये बैकुंठ सो दीनदयाला ॥
गये नारद जब बिस्नु के पासा * लीन्ह्यौं गोद जानि निज दासा ॥
पूछेयौ गुरु कहँ कीन सुजाना * गुरु पै कीन्ह्यौं कृपानिधाना ॥
दीन गोद ते बिस्नु चलाई * पैकर अर्थ कहौ समुझाई ॥
बिस्नु कोप लखि नारद काँपा * दीन बिस्नु चौरासी श्रापा ॥
आँखिन ओट होउ तुम नारद * गुरु धर्म कीन्ह्यौं तुम गारद ॥

दो० अब चौरासी जाउ तुम गुरु निन्द्या के हेत।
बिस्नु चरण सिर नायकै नारद चलेयो अचेत ६४॥

चौ० नारद करन चलेयो चौरासी * जनु उर चढ़ी काल कै फांसी ॥
फिरि धरि बिस्नु निखाद सरूपा * गये सरि तीर पाप के भूपा ॥
चले जात नारद उर मांहीं * भइ पेरन चलौ गुरु के पाहीं ॥
पहुंचेयौ नारद जब गुरु पासा * लखि गुरु सिसि सो बहुत उदासा ॥
नारद परे चरण गुरु केरे * गद२ बचन न आय मुख तेरे ॥
केहि कारण सुत मुख नहिं क्रान्ती * कहु निज हिर्दय प्रघट कुछ भ्रान्ती ॥
तब नारद निरछल कह बानी * जस भये आपसो प्रघट बखानी ॥
मैं गुरु कीन अधिक अपराधा * तेहि हित दीन बिस्नु मोहिं बाधा ॥
अब करुनानिधि लेउ उबारी * कहौ कुछु बचन श्राप निरधारी ॥
दीन्ह्यौं श्राप बिस्नु मोहिं घोरा * अब कहो जाउँ कौनि मैं ओरा ॥

दो० कहौ नाथ निरधार कुछु थोरे मा कल्यान।
तुम तजि दीनदयाल को मम हित हौ भगवान ६५॥

चौ० पाँहि२ सरनागति स्वामी * मम अपराध छिमो अनुगामी ॥
तुम गुरु बिस्नु एकही रूपा * भेद भिन्न नहिं दोउ जन भूपा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

असमुनिसिसिकेबचनदुखारी * गुरुअभिअन्तरबचनबिचारी॥
नारद जाउ बिस्नु के पाहीं * कहेयौ चौरासिमेंजानतनाहीं॥
मोहिं महिसबलिखिदेउबताई * जबलिखिहोंयतबलोटेवभाई॥
यह करिजतन पाप करुनासा * गुरुके बचन धरौ बिसवाँसा॥
हम गुरु बिस्नु एकही रूपा * बिन बिसवाँस परेयौ भवकूपा॥
अब न तुम्हैं माया कुछु ब्यापी * गुरुके बचन सत्ति उर थापी॥

दो॰ वहि चौरासी लोटियो जो लिखिदेंयकृपाल।
परेयौ बिस्नुके चरनतब सबकटिहैंतवजाल॥
सुनि नारद गुरु बचनतब गयो बिस्नुकेपास।
मोहिं चौरासी लिखिकहौ तब बैठे बिस्वास॥
लिखाबिस्नुचौरासिमहिपुनिनारदगयेलोटि।
बिस्नुआगेठाढ़े भयो मिटेउकरमसबखोटि॥
होय चौरासी आयौं मैं जयजयकृपानिधान।
यहगुरुजतनबतायमोंहिंभयोसहज कल्यान॥
कहा बिस्नु नारदसुनौं असगुरु पर पै धारि।
कोटिजन्मकेपापतवछिनमा दीन्हौंटारि ७०॥

इति श्रीसतसंगसागरेमानसेआनन्दकन्देब्रह्मचरितेनारदोगुरूकरते अमनास्तेआपनिरधारेनामसप्तमोध्यायः॥७॥

संकादिगुरूकथा॥

चौ॰ जावोकबों असकामनकीन्ह्यौं * मनबचगुरुचरननचितदीन्ह्यौं॥
गुरु द्रोहीतिस्टै नहिं ताता * ममप्रणसत्ति मान्यो यहबाता॥
गुरुममब्रह्म सत्ति सिवबानी * मनिहौं सत्ति होय नहिं हानी॥
यहिबिधि हरि नारदसमुझाई * आगिल चरित कहौं सुखदाई॥
वह नारद गुरुभयो निखादा * जिन मांग्यो प्रभुचरनप्रसादा॥
मांगि बिदा नारद तजि सोका * बिस्नुचरनधरिगयेविधिलोका॥
मिलेउजाय अपनी निजमाया * सारस्वति चरनन सिरनाया॥



CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जांय देवस निसिआनँदभारी * सनकादिकन सहित सबनारी॥

दो० नारदब्रह्म अनन्दमा तनमनधन सुधिनाहिं॥
कोहमकोसंसारको देवसअनँदसमजाहिं ७१॥

चौ०सनकादिक पूंछैं हरखाई * नारद कहां गयो रहे भाई॥
तब नारद सब कथा बखानी*कहीबिपतिनिजसकलअजानी॥
बिनु गुरुकिये तात यह देही * कोउ नाहीं जग परम सनेही॥
पति बिहीन जिमित्रिय संसारा* अपर चहै कोटिन परिवारा॥
तेहिबिधिगुरुबिनजन्मअकारथ*जिमिछत्रीकुलबिनमहभारथ॥
गुरुबिहीन मुख बिस्नु न देखैं * तृणसमान नर तन नहिंलेखैं॥
गुरु बिन जग्त पापके रासी *कबहुँनमिलैंहिर्दयअभिनासी॥
बिनु दीपक घर सकल अँधेरा * असमूरख गुरुबिन उरतेरा॥

दो० जैसे कंचन धामबर मनु कुबेर के बास।
बिनुदीपकजनौंभूतघर भयोजमनकेत्रास ७२॥

चौ०गुरुबिहीनपसुसरिसअभागा*जबलगिहिर्दयनहींअनुरागा
सुनि सनकादिक नारद बैना * खुलिगे बिमल हिर्दयके नैना॥
कह सनकादिक कहौ गुरुभाई * नारद हमहुँ करब गुरुजाई॥
सुनि नारद बोले सुख सागर * संकर गुरू करौ मति आगर॥
कहसनकादि कहां हैं संकर * जिनते जायलेउँ मैं मंतर॥
नारद कहा चलौ मम साथा * हम कराय गुरु करन सनाथा॥
लीन साथ सनकादिक बालक * नारद चले सुमतिके घालक॥
सनकादिक उरगुरु अनुरागा * जिमिचुम्बकपत्थरलोहलागा॥

दो० सारदहिंयाँ बिलखत फिरै कहँसुतगैममचारि।
कहँ नरदाधौं लैगयो ममसुत डारि बिगारि॥
नारद लै सनकादि का गयो सम्भु के पास।
हुँआँसंकरतारीलगींमँगनध्यानकैलास ७४॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

छं० कैलास बास संकरं। श्रीरामनाम अंतरं॥
समाधि जोग ज्ञाननं। तवनाम जग्तभाननं॥
कुभेख भेख धारनं। डिगम्बरं अपारनं॥
गनेस सेस बन्दितं। सोभाल सुभ्र चन्द्रितं॥
नाग वस्त्र धारनं। बिभूति सैन सारनं॥
अजातिपन्थ पन्थनं। हिर्दयसो स्वासग्रंथनं॥
अनेक रूप रूपनं। सो कोटिभान भूपनं॥
ज्ञान भाव सक्तिनं। तुएव बिन्न भक्तिनं॥
अपार पार मायनं। तु ब्रह्म जग्त छायनं॥
जागियो कृपालपाल। दासठाढ़ोअतिबिहाल॥
भर्मकोटिठाढ़ोकाल। जागोनाथमेटोजाल॥

दो० सुनि अस्तुतिसनकादिकी जाग्योसम्भुसुजान।
पाँचोसुत द्रिग देखिकै बोले कृपानिधान॥
तुमको कहाँते आयहौ कहौ पिता निजनाम।
स्वावत मोहिं जगायो है कहौनामनिजकाम॥
ब्रह्म हमारे पिता हैं दासी सारद माय।
नामसो नारद सनतसम मंत्रलेन हम आय॥
जाना संकर मरम सब ईसुतआहिं हमारि॥
पाँचो सुतनिजगोदलैपूछेयोहाल बिचारि ७८॥

चौ० क्रम२नारदकहेयोबखानी * निजउतपतिसनकादिकबानी॥
जेहि बिधि गयो बिस्नुके पासा * सबनिजकर्मसोसकलप्रकासा॥
जेहिबिधिगुरुकीन्ह्योंअभिनासी * सो नारदसबबचनप्रकासी॥
जेहिबिधिसनकादिकभे साथा * सोसब कहेयो नाय महिमाथा॥
सुनिसबहाल सम्भु सुखपावा * मंत्र भाव सनकादि बतावा॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सुनौं मंत्र निज ज्ञान प्रकासी * सबघटध्यान करौअभिनासी ॥
तजि निज धर्म आनकुलुनाहीं * राम भक्ति राखेयो उर माहीं ॥
ओंकार सोहं जपु मंत्रा * सदाँ बाल त्यागौ जग तंत्रा ॥
ममहं माया सब संसारा * जीउचराचर बिबिधि प्रकारा ॥
निजहं रूप सकल चौरासी * तीनिलोक तक ब्रह्म बिलासी ॥
ततहं पाँचौ तत्त पसारा * तीनौं लोक रूप संसारा ॥
हं आत्मा ब्यापि संसारा * नमस्कारकरि जिउभव पारा ॥
इति दोवादस मैंमंत्र बतावा * राजा मनु जपि मन सुखपावा ॥
ओंसोहं ओंममहं ओंनिजहं * ओं ततहं ओं आतमाहं ॥
पायनमः ॥ इति दोवदास मंत्र ॥

---

दोवादस अच्छर मंत्र बिरागा * विनुयहि जपेनहोय अनुरागा ॥
दोवादस गुरु अन्तरके माहीं * ताहिभेद कोउजानत नाहीं ॥
इच्छयामनअरुपवनबारिवर * अगिनिधरनिआकाशजलनिवर ॥
पितामंत्र जहँ अरु सतसंगा * दोवादस नाम हनायो गंगा ॥
दो० दै सनकादिक मंत्रअस गुरूध्यान यकसाथ ।
कोटिजन्मके पापकटे भै सनकादिसनाथ ७९ ॥
चौ० सनकसनन्दनसनतकुमारा * मंत्रपाअगय सकल बेकारा ॥
सनकादिक व्यापे संसारा * जीव तत्तु लै विमल बिचारा ॥
दोवादस गुरुधरि अंतरमाहीं * सोक मोह सपनेउँ उर नाहीं ॥
अहं ब्रह्म सुत पाप न पुन्नी * है निज रूप हमारा सुन्नी ॥
मंत्र पाय गय भ्रम संसारा * जीवन मुक्ति भये भव पारा ॥
तजितनसकलभरोस असंका * रहारामबल त्रिगुन सो अंका ॥
रामा पाई अंतर भाखी * तिनकरअर्थ कहौं सिवसाखी ॥
दो० राम नामके तीनघर व्यापे सकल जहान ।
रामापाईबिलगकरि तीनबिभागसोज्ञान ८० ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चौ०रजगुनराब्रह्मा ब्यापे जग * रचैं सृस्टिचौरासी रहैंलग ॥
बिस्नु सतो गुण पाई अन्तर * पालैं सृस्टि रहैं लछिमी पर॥
तमगुण संकर त्रिकट मकारा * तीनौं लोककरैं सिंघारा ॥
एक तरह यहिबिधि जगरामा * दूसर अर्थ कहौं सुख धामा ॥
परसराम रा अच्छर जानी * पाई राम पालि रजधानी ॥
कृस्न मकारभयो अवतारा * करिगोपिन सँगकेलि अपारा॥
दूसर भाव राम असपावा * तीसर सज्जन सुनौं सुभावा ॥
अगिनि रकार रजोगुन जानी * तीनिहुँलोक काम पहिंचानी॥
पाई सुर्ज प्रकास जहाना * पालनसतगुन बिस्नुप्रमाना॥
चन्द्र मकार सम्भु सिंगारा * सकलनींदबसि करि सिंघारा॥

दो० रामरूप अस अर्थलै तीन प्रकार बिभाग ॥
गुरुप्रताप असिमतिभई सम्भुचरन अनुराग८१॥

चौ०चउथाअर्थसुनौंसुभदायक* देवसरकारपालफललायक ॥
पाई प्रात रजोगुन जाना * सृस्टिरचैं सब जग्त प्रमाना ॥
होति भोर सब लागेयौ कामा * रजगुन बास ब्रह्म सुखधामा॥
राति मकार तमोगुण सम्भू * बिकट भयंकर भरमकेखम्भू ॥
पंचम अर्थ सुनौ सुखदाई * नाम रकार अचल पद पाई ॥
जिउ पाई तन जानि मकारा * अस मम राम इस्ट संसारा ॥
खस्टम अर्थ सुनौं मन रंगा * अगरीसुमतिहनायलेवोगंगा॥
रा आकास पाइ मधि लोका * सदाँ मकार पताल असोका ॥

दो० रामनाम अस हिर्दय बल अपर न देहँ भरोस ।
सत्ति सत्ति सतिकहौं मैं सुनौं नाम निज कोस॥
राम नाम के बीच मा तीनों लोक समान ।
यह रचना कब जानिपरै जब सतगुरु पहिंचान॥
राम नाम अस हिर्दय लै संकरपद सिरनाय ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सनकादिक गवनतभयो जग्तहेत सुखदाय८४॥

इति श्रीसतसंगसागरेमानसेआनन्दकन्देब्रह्मचरितेसनकादि कोमंत्रेसम्भुउपदेशेरामनामलाभेब्रह्मरूपे दोवादसमंत्रे नामअस्टमोध्यायः ८॥

विश्नु शंकर गुरु कथा॥

चौ०कहुँनारदगे कहुँसनकादी * पाँचौ पुत्र ब्रह्म के बादी॥
तेहिछिनबिस्नुआयसिवपासा *दोउजनउठिमिलेहिर्दयबिलासा
देखिगरुड़ भागे सब नागा * रहे बेपर्द सम्भु अनुरागा॥
बिस्नु हँसेतेहि छिन ठहठाही * संकर रहे नयन सिरनाई॥
भे मिलि भेंटि बैठि दोउ भाई * गय गुरु करनबिस्नु सुखदाई॥
कह सिवनाथ कीन बड़िदाया * ममऊपर तुम्हारि बड़िछाया॥
पुनि बोले अस बिस्नुकृपाला * सुनौं नाथ मम दीन दयाला॥
तुम गुरु छांडि अपरकहँजाहूँ * जेठि बन्धु दाहिन सुभ बाँहूँ॥
दो० हमैं मंत्र तुमदेव सिउ तुम हमते लैलेउ।
दोउजनमहापवित्रहोये जग्तसुजसवरसेउ ८५॥
चौ०मोहिंउपदेसदेउकरुनानिधि* पावौंपारजग्तमाजेहिबिधि॥
कह संकर ममगुरुपहिलेतुम * सेवौ नाथ मोहिं अपने द्रुम॥
बिस्नु कहा यह उचितननाथा * प्रथमै हमैं तुम करौ सनाथा॥
जेठि बन्धु स्वामी अवतारा * राखौ धर्म ब्रह्म संसारा॥
तुम हमका जेठे करि माना * दूसर जन्म नात परमाना॥
मंत्र प्रथम हमैं फिरि तुमलेहू * हम गुरु तव तुम गुरुहमगेहू॥
सुनि असबिस्नुबचनउरसंकर *लागेयोकरनबिचारसोअंतर॥
मंत्रदेत इन्हैं मन सकुचाहीं * ई गुरु हिर्दय बसैं मम माहीं॥
मुलुमनिहैं नहिं बिस्नु कृपाला * बिस्नुसुमिरिउर दीनदयाला॥
दो० संकर हिर्दय बिचार करि इन्हैं मंत्रका देह।
जग्त धरमइनका चही बिस्नुबिस्सुपर नेह८६॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चौ०करिहरध्यानहरीउरमाहीं ❋ लागेयौ मंत्र देन छल नाहीं ॥
बिस्सु बिस्नु लेहू यह मंत्रा ❋ करौ जाय संसारी तंत्रा ॥
पालौ सकल चराचर जाऊ ❋ अपनि आतमा मानेयोभाऊ ॥
येहि पालन हित तवअवतारा ❋ तीनहुँ लोक बिस्सु करतारा ॥
बिस्सु बिस्नु ते नहिं कुछु भेदा ❋ एकै रूप सत्ति गुण वेदा ॥
तुम गिरिस्त हम साधुसोजाना ❋ चाहिय दया लेहु यहु ज्ञाना ॥
बिस्सु बिस्नु बिस्वास सरूपा ❋ बिन बिसवाँस परेयौभवकूपा ॥
मैं अरु मोर तोर तैं नाहीं ❋ लेहु मंत्र यहु धरौ उर माहीं ॥
मथौ समुद्र छीर तुम जाई ❋ जस जलनी सुत छीरपियाई ॥
रतन निकारिबाँटि जग देहू ❋ आपन रूप लच्छिमी लेहू ॥

दो० सान्ति चही तुमका धरै सदाँ सतोगुण रूप ।
जीव आतमा आप तुम सदाँ बिस्सुके भूप ॥
सो० भक्ति भाव के धाम सदाँ चही तुमका बसै ।
अपनारहतअकाम जिमिजलपुरयनिनाफँसै ८८ ॥

चौ०सदाँदीनपर राखेयौदाया ❋ सब तिहुँलोकतुम्हारी माया ॥
करौ राजि तुम जगमा जाई ❋ होउ लच्छिमी पति सुखदाई ॥
पालौ प्रजा चराचर जीऊ ❋ प्रजा आपनी जानेउँ पीऊ ॥
जबतक प्रजा तबहिंतक राजा ❋ प्रजा नास नृप भयो अकाजा॥
जिमि कोउनारिभयौ पतिहीनी ❋ गई अनन्द भई मतिदीनी ॥
रहिगा लुंड कटे कर जबहीं ❋कहौ कौन सुख पावै तबहीं ॥
प्रजा नेति राजा का जानैं ❋ अपने मात पिता सम मानैं ॥
राजा नेति अपन सुत जानी ❋ दोउजन परसरूपसुखखानी ॥
राजा मन रइयत भई इन्द्री ❋ दोउजन एकरूपसुखासिन्द्री ॥
मन बिनु इन्द्री कुछु नहिं माँगैं ❋ इन्द्रीबिनु मननहिं अनुरागैं ॥
राजनेति अस बिस्नु कृपाला ❋ जाउ लेउ आपन जंजाला ॥
राम नाम राखेयौ उर माहीं ❋ यहिजगमा कुछुदुरलमनाहीं ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पालहु प्रजा अपनि संसारी * दीनबन्धु तुम सदा खरारी ॥
तुम जानहुँ सब अंतरजामी * चतुरप्रबीन सदाँ अनुगामी ॥
कीन मोंहिं गुरु दीन बड़ाई * यह दाया जनपर अधिकाई ॥

दो० जो कोउ तुम्हरीभक्ति करै जानैं तुमको अन्त।
तेहिपर सदा दयालतुम करि गुरु थापौ सन्त ॥
येहि बिधि संकर मंत्रदै बिस्नु भयो आनन्द।
तब संकर बोलत भयो अब काटौ मम फन्द ॥
बिस्नु कहा संकर सुनौं अपने मंत्र बिचार।
तुम साधू हमग्रिहींहैं तव दरसन भवपार ६१ ॥

चौ० तुमबिनअसकोदेयेउपदेसा * दीनबन्धु तुम धर्म नरेसा ॥
संत सेये गिरही कल्याना * पावैधर्म आपनि निजज्ञाना ॥
अब कुछु सुनहुँ संतकेलच्छन * जसहमारिगुरुब्रह्मबिलच्छन ॥
तुम साधू निरलोभ सरूपा * तीनहुँ लोक बिस्सु के भूपा ॥
तुम्हैं साँति चाही उर माहीं * संसय सोक मोह भ्रम नाहीं ॥
निज आतमा ध्यान दिनराती * मानस नामभजन येहि भाँती ॥
निन्द्या अस्तुति एक समाना * निरंकार निसदिनकरौ ध्याना ॥
चाहिय कोमल संत सुभाऊ * जगत बचन दै कान न काऊ ॥
सदाँ राम धुनि प्रेम बिचारा * आठौ पहर ब्रह्म मतवारा ॥
तजिनिजधर्म आनगतिनाहीं * चौंसठि घरी भजनमन माहीं ॥
पर दारा पर सम्पति त्यागी * अपने रूप मस्त अनुरागी ॥
जाति पाँति धनधाम बिहाई * परस्वारथ पर साधु गुसाई ॥
ज्ञान सरूप गँगँन सम देहीं * दै सब कर्म सुजस जग लेहीं ॥
तुमजानौं सिवभजन उपाई * कहेयौं सन्त हित मैं सुखदाई ॥

दो० यहिबिधिजानौं मंत्र निज जपेयोसदा निजनाम।
परस्वारथ भरि धर्म नहिं सर्ब भाव उर राम ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कर्म सम्भु दैं बिस्नु का बिस्नु सम्भु दैं ज्ञान।
दोउ जन महाँ अनन्द भै प्रेमरूप कल्यान॥
सम्भु चरन सिरनाय कै गयो बिस्नु बैकुंठ।
सालिकराम अजानलिखि जानौं साँच न झूंठ ९४॥

इति श्रीसतसंगसागरेमानसेआनन्दकन्देब्रह्मचरितेबिस्नुसंकर गुरूलाब्भेनामनौमोअध्याय ९॥

सतसंग तालाब कथा॥

चौ० चाँवलभरिसाँवलगुनआवै * झूँठिसाँचिजगतबलखिपावै॥
बिस्नु सम्भु कै कथा पुरानी * कह्योंसरिसमतिबिमलबखानी॥
जो यह कथा सुनैं नर नारी * मोह निसा उघैरैं उर तारी॥
सम्भु बिस्नु गुनमिलैबिसेखी * कह्यौं कथा सबआँखिनदेखी॥
बर्तवान सुन्दर सतसंगा * धरै बिसवाँस लगै हरि रंगा॥
सकल पाप भ्रम भंजनहारा * सतसंसागर बिमल बिचारा॥
नहिं कोउजग पुरानकै आसा * सालिकराम बिबेक बिलासा॥
सकल चतुरता सबछल हीना * कहौंनिजब्रह्मचरितमतिदीना॥

दो० सतसंसागर जो सुनैं होय रामकर रूप।
दयाधर्म उरमा बसै परै न सो भवकूप ९५॥

चौ० सज्जनसुनतश्रवनबिस्रामा * मनबसकरनसुजसतेहिनामा॥
जाहि सुजस निज नाम पियारा * रामभक्तमतिबिमलबिचारा॥
सतसंसागर अगम तलावा * सुनहुसुजनजेहिभाँतिबनावा॥
सकल सतगुरन सुमिरनकीना * तिनबिबेकमतिअसमोहिंदीना॥
भक्ति भूमि दीनता गँभीरा * ज्ञान प्रेम निरमलभर नीरा॥
इस्ट नाम निज ईंटसो लागी * पाकी सुपक भावकी आगी॥
चैंना चुप संसार कि बानी * अस्तुतिनिन्द्यासमसुभजानी॥
चूँना सत्ति मसाला साजा * लागिबनावैंनमन निजराजा॥
इन्द्रिन देव मँजूर समाजा * सुजस मँजूरी धर्म के काजा॥



CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो० असमसतसंसागरबनेयौं देसअलउकिकमाहिं।
दया धर्म जाके नहीं तेकबहूं न हनाँहिं ६६॥

चौ०मासतीनिलागेयहिजोरत * भयो तयार जग्त भै सोरत॥
सोहं सोत प्रेम कढ़्यो बारी * फूट्यो बम्ब अगाध मुरारी॥
स्वाद बिचार बारि सुखदाई * सीढ़ी सील सुभाव सोहाई॥
मगरा गर्भ कच्छ खट कर्मा * नेम मीन सुन्दर जग धर्मा॥
सतसंसागर महिमा भारी * सुनि जग चलेदेखन नरनारी॥
भा मेला सागर के ऊपर * बहुतकबूड़ि कचरिमतिमूसर॥
बहुतक गये मेला मा लूटी * बहुतक गांठिगयो कुछु छूटी॥
बहुतकगे हेराय निज साथी * बहुतकबचनकोटिकहैं पाथी॥
लागिबजार सो ब्रह्म बिचारा * चहै जो लेय जौन संसारा॥
होंय तमासा बिबिधि प्रकारा * बहुतक भूले देखि बिहारा॥

दो० सागर अतिनागर भयो देखत बनैं सुजान।
मुखते कहिआवत नहीं मूकस्वादपरमान ६७॥

चौ० बहुतककूदैं सागरमाहीं * बहुतक बैठि किनारे हनाँहीं॥
बहुतक ध्यान करैं भगवाना * बहुतक बाँचैं बेद पुराना॥
बहुतक कुछु मेला ते लइगे * बहुतक दान गुप्त कुछु दइगे॥
तीनलोक आयो सब देखन * मेला भयो अपार अलेखन॥
जिनकर भै मेला कुछु हानी * ताहिचरितकुछुकहौं बखानी॥
अगरी सुमति सुनौं मनलाई * मेला देखो परम सुहाई॥
ताल अलउकिक देखौ रानी * ज्ञान नैन निरखौ बर बानी॥
चहै जो लेउ अनन्द अघाई * सउदा मेला परम सुहाई॥
कटि हैं पाप करत अस्नाना * मिलिहैंप्रघटतुनहिं भगवाना॥
लाभ हानि कुछु सुनहु भवानी * करौ प्रतीत प्रेम बर बानी॥

दो० जाके कुछौ विचार नाहिं ते बूड़े नर नारि।
राम रूपमा पैठिपरे संड भंड बिबिचारि॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अधकचराते कचरिगे कुछन लाभभै भूलि।
कामक्रोधमदलूटिगे भयौ छिनकमा धूलि॥
रहे ठगठगे ठाढ़िजे गांठि छूटि कुछ जान।
करनलागिनिन्द्याजोइ ते रोवैं अज्ञान १००॥
बहुतक करते बादबहु सपनेउं नहिं उरराम।
यहु हल्ला मेला भयो बात परै नहिं कान॥
बहुत खरीदैं मालबहु जिनके दया है दाम।
जिनके पइसा है नहीं दयारहित बिनु काम॥
रहसरंग निज रामकर देखि रहे बहु लोग।
प्रेमअनन्द न खबरितन सपनेउं मोह न सोक॥
बहुतक प्रेम अगाधमा कूदि परैं आनंद।
बहुत किनारा खैंचहीं परि ना जाईं फन्द॥
बहुत रामके रूप निज लीन होंईं संसार।
जे पैरैं जानैं सदाँ करि बिचार तरि धार॥
बहुतक बानी बाँचहीं रामरूप नहिं छार।
वइ पंडित सागर तटै करैं पाट सुकसार॥
बहु सागर सतसंग सुनि लइगे रामके रूप।
वई खरीदैं माल बहु सुन्दर शब्द अनूप॥
गुप्त हिर्दय प्रभुमिलेबहु कोउनहिं लखै सरूप।
गुप्तदान इन मन दियो वई जगतके भूप॥
जस सतसंसागर भयौ प्रघट्यो यहि संसार।
कह्योंसकल सतगुरुकृपा सुनतजीव भवपार १०९॥
चौ० सेस कोटिसत पार न पावैं * सोसतसं कोउकहँलगिगावैं॥
सतसं महिंमा अगम अपारा * तीनहुँ लोक धरे सिरभारा॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ताहि सुजसबरनत मतिहारी * अपर ब्रह्मजस कहौं बिचारी ॥
अगरी सुमति धन्नि तवभागी * रामरूप लखुअसअनुरागी ॥
सागर कथा सुनैं नर नारी * ताहिबिमलमतिहोइबिचारी ॥
सब कामना देइँ भगवाना * हिर्दय प्रघटहोइहैं सुभज्ञाना ॥
धरि बिसवाँस सुनैं नर नारी * प्रेम नसा उर चढ़ै खुमारी ॥
कह्यौं कथामति सरिस बिचारी * मोह निसाकी सबभ्रमहारी ॥

दो॰ सुनहुँ आगरी सुमतिउर बैठि हिर्दय लखुभाव ।
सालिकरामप्रतीतधरु तजिदे हिर्दयकुभाव ११० ॥

इति श्रीसतसंगसागरेमानसेआनन्दकन्देब्रह्मचरितेसतसंगसागरे प्रमाणउत्पन्नेविधिसंजुक्तनामदसमोअध्याय १० ॥

ब्रह्मसृस्टिप्रघटकथा ॥

चौ॰ जबते ब्रह्मबिस्नुउरगयऊ * बैठि बिस्नु उर रचनाठयऊ ॥
गुरिया बिस्सु लाख चौरासी * तेहिबिच सूतब्रह्मअभिनासी ॥
लागि बनावन तीनहुँ लोका * सुनियह कथा मिटैं भवसोका ॥
बैठि सकल उर पिंड बनाई * जहँजसतहँ तसभावदिखाई ॥
अंडज पिंडज उखमज थावर * चारिखानि जग जीवबनावर ॥
जलचर थलचर नभचरजाती * कीन्ह्यौंप्रघटबिस्सुयेहिभांती ॥
सकल हिर्दय ब्रह्मा अवतारा * चारि लाख चौरासी धारा ॥
जीउ ब्रह्म ऊपर तन माया * जिमिभूषणबिचकंचनछाया ॥
फूल बासना तिलमा तेला * येहिबिधिब्रह्मसकलउरमेला ॥
भाजन बीच मृत्तिका सानी * अस उर ब्रह्म वेदकहैं बानी ॥
निज २ उर रचि रचना न्यारी * यक उर प्रघट होंयनरनारी ॥

दो॰ माया ब्रह्म न भेद कुछु दोउ जन एकै रूप ।
तनसूरज मूरतभयो माया छाया धूप १११ ॥

चौ॰ आपनिसृस्टिआपरचिलेहीं * जीउ भै आप मायभै देहीं ॥
आपै खुदा आन नहिं दूजा * आपै देवल महिजित पूजा ॥
तीनहुँ लोक हिर्दय ते आवा * प्रघटदेखु मनसमुभुसिखावा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

नहिं कोउ निकर्‌यौ बादरफारी * सकल हिर्दय प्रघटी संसारी ॥
कोउनहिंनिकर्‌यौफोरिपताला * नहिंकोहुकाजगखायो काला ॥
आपै प्रघट आप उठि जाना * जिमि दीपक दीपकै समाना ॥
कोइला मा गै आगि समाई * येहिविधिआपमाआपगोसाई॥
अभिअन्तर कढ़े वेद पुराना * यह कब जानै होय उरज्ञाना ॥
तीनिलोक रचिभे बिधिजबहीं * पुनिबिचार कीन्ह्यौं उरतबहीं ॥
तीनि मुहल्लाकर बिधि गाऊँ * करिबिचार यहिकरधरौंनाँऊँ ॥
तीनि गुनन लै सृस्टि सँवारी * रज सत तम मन लेउविचारी ॥
रजकरि प्रघट सतोकरिपालन * तमसिंघार भयो जगकालन ॥
रजगुण रा सत पाई जानी * तमगुण मा सिंघार प्रमानी ॥
जिउ रकारमा माया धारी * पाई दास भयो उपकारी ॥
पाई नाम सो बीच बिलासा * रामा मद्धि दास कर बासा ॥

दो॰ टोलातीनिकगाँवविधि धरा नाम येहिराम।
तीनिलोक देहीं लखो सालिक नामहैं राम ॥
जैसे गाँवबसावै कोउ ताहि नाम धरै जउन।
तैसे ब्रह्मा रामधरि लोक तीनिकर तउन ॥
रा अकासमधि पाइभइ तमगुण मा पाताल।
मायब्रह्मलैसृस्टि सम लखौ ख्यालगोपाल ११४॥

चौ॰ नाम देंहँ नहिं जानौंभेदा * लिखे लिलाटकर्म सुभवेदा ॥
जो जसकरै सो तस फल पावै * प्रघट लिलाट वेदअसगावै ॥
येहि विधि ब्रह्म लिखे सबकर्मा * धरिबिसवाँसलखौश्रुतिधर्मा ॥
रच्यौसृस्टिविधिबिमलविसारद*तेहिछिनआयगयोपुनिनारद॥
ब्रह्मपितै करि दण्ड प्रनामा * नारद बैठि गयो सुखधामा ॥
देखि सृस्टि पूँछा नारद मुनि * कहौ पितायहहालहिर्देंगुनि ॥
जस बिधि रचा सकल संसारी * क्रम २ भेद कह्यौ बिस्थारी ॥
जेहि विधि अपन बसायोगाँऊँ * धर्‌यौबिचारिसुभगसुभनाँऊँ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अच्छर कर्म कथा समुझाई * पुनि नारद बोले सिरनाई ॥
नैनतरे ऊपर लिखि कर्मा * केहिविधिबाँचीजिउनिजधर्मा॥
अंकलिलाट लिखौ करमाहीं * जिमि सज्जनकोउबाँचेपाहीं ॥
जोइ कपाटकरसोइलिखौ बेदा * जेहि बलबुध पावैं क्रमभेदा ॥
यतनी बात लिखाई नारद * नाहिंतो धर्म होत सब गारद ॥

दो॰ तीनिजगा लिखि कर्मकर कर कपाट अरुवेद।
करिसतसंगति बाँचहीं मिटैं हिर्दय भ्रमखेद ॥
राम नाम कर भेदलय जसप्रघट्यो संसार।
ब्रह्म चरन शिरनायकै नारद चल्यो उदार ॥
राम नाम अरु जग्तकर कह्यों कथासुखदाय ॥
सालिकरामजोसुनैंनर मिलैंब्रह्ममाजाय ११६ ॥

इति श्रीसतसंगसागरेमानसेआनन्दकन्देब्रह्मचरितेब्रह्मस्रस्टि प्रघटेग्रामनामेत्रेइगुनेकर्मलिखतेनारदउउपकारे नामएकादशोअध्याय ११ ॥

ब्रह्मणरूपकथा ॥

चौ॰ ब्रह्मसुन्नितन सदाँबिदेही * सबतन मन्दिर परमसनेही ॥
अपर न पूजा कहुँ संसारा * ब्रह्मण मूरति ब्रह्म बिचारा ॥
जन्म जायते सूद्र बखानी * संसकार द्विज वेदन बानी ॥
वेद पढ़ै तब बिप्र जहाना * जानैं ब्रह्म सो ब्रह्मणज्ञाना ॥
सूद्र और द्विज कलि बहुजाना * विप्रचहै कोउ कहुँकहुँआना ॥
ब्रह्मणते कलि भयो बिहीना * तजिनिजधर्मबिसयलौलीना ॥
ब्रह्मण ब्रह्म परापर धर्मा * असब्रह्मण पूजे सुभ कर्मा ॥
जन्म जायते सूद्र बखाना * संसकार बनियां जगजाना ॥
बेद पाठि छत्री अवतारा * ब्रह्म भयो ब्रह्मण संसारा ॥

दो॰ ब्रह्मणके असकर्म जग चारहु वरण सरूप।
तीनिलोकचरअचरसब वरणअठारहभूप ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चारि वरण श्रुतिचारिजुग संध्यातीनौकाल।
तीनिलोक दसअस्टवर ब्रह्मणब्रह्मकृपाल ११८॥

चौ० जन्म जायते सूद्रप्रवीना * करैं मँजूरी कर्म विहीना॥
संसकार बनियां सुभ कर्मा * देव पितर लायक भै घरमा॥
वेद पाठि छत्री धरि छत्रा * बाँधे अत्र फिरैं कर पत्रा॥
रइयति पालि सकल संसारा * छूति दोस निस्चर सिंघारा॥
साइति हुकुमुचलै संसारा * कुछु मद्धिम कहिदंड बिचारा॥
धर्म तसील जग्तमा करहीं *राजिनेतिनउगुननितचलहीं॥
छिमासरल चित दम्भविहीना * हिंस्यामद अभिमानसुछीना॥
थिरता संजम गुरुकी सेवा * राजनेति इति छत्री देवा॥
पूज्जनीयँ ब्रह्मण कै मूरति * गात्त्री रूप ब्रह्म कै सूरति॥
अस ब्रह्मण ब्रह्माजग पूजा * अपर लोक तिहुँ ब्रह्मनदूजा॥

दो० सूद्र बइस छत्री जगत ब्रह्मण ब्रह्म सरूप।
गात्त्रीअच्छर रूपधरि हरैं जगतभवकूप ११९॥
ब्रह्मा विस्नु महेसलर सुभ तन जग्योपवीत।
गात्त्री जोतिसो ग्रंथिहैं भिच्छुकब्रह्मअतीत॥
भिच्छुकचारि प्रमानजुग बावँणविस्वामित्र।
दास सुदामादुरबलै ब्रह्मण ब्रह्म पवित्र १२१॥

चौ०चारहुजुगनचारिभिखियारी* पाय सम्प्रदा भयोसुखारी॥
ब्रह्मकथा मति सरिस बखाना *अगरीसुमति ब्रह्मअसज्ञाना॥
जसमैं कथाकह्यौं सुखसागर *सुनैंसकल मतिजाहिउजागर॥
चारिहु बरण सदाँ सुख सोई * ब्रह्मणका विसेसि हितहोई॥
सुनि यह कथा न ब्रह्मण भावै *सो ब्रह्मणनहिं असस्तुतिगावै॥
भेख धरे पै भेद न जानौं * जैसे पसू स्वांग पहिंचानौं॥
कउवा का कपूर का जानी * मरकट भूषण का पहिंचानी॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

खरके का मलयागिरि लाये * स्वानैं का भै गंग नहायें ॥
दो० का सर्फन मलै गंधमिलि विषनहिंतजेन भुवंग।
काब्रह्मणभै कर्मबिनु मिलेवनब्रह्माअंग १२२॥

इति श्रीसतसंगसागरेमानसेआनन्दकन्देब्रह्मचरितेब्रह्मण
ब्रह्मरूपेकर्मसंजुक्केब्रह्मणोंप्रतापेचरित्रेवरणन
नामदोबादसोअध्याय १२॥

विश्नुनारदसतसंगकथा ॥

चौ० ब्रह्मै सृस्टि रचासंसारी * तबनारद असहिर्दय बिचारी ॥
सृस्टि प्रघट अहार कुछुनाहीं * कीन्ह्यौं राम ध्यान मनमाहीं ॥
तीनहुँ लोक गाँव जोइ नामा * नारद हिर्दय सुमिरिअसरामा॥
गयौं विस्नु पहँ लैकर बीना * गावतहरिगुणअचलनवीना ॥
करि अस्तुति बैठ्यौ महि माहीं * रतनसोच कुछुकहिसकैंनाहीं ॥
पूँछा विस्नु कहाँ चल्यो ताता * तब नारदकहिरतन कि बाता ॥
हिर्दय सृस्टि ब्रह्मारचि गयऊ * प्रघट होनकर अवसरभयऊ ॥
करहु अहार जतन अनुगामी * मथौ छीर दधि अंतरस्वामी ॥
विस्नु सुनें नारद के बैना * महा अनन्द बढ़ी उर चैना ॥
दो० पातक देंहँ बिचारिविधि तनुछांड़्यो संसार।
आयोतुम्हरेहिर्दयमा रच्योसृस्टिस्रुतिसार १२३॥
चौ०हिर्दयहालकेहिबिधितुमजाना*तनुतजिममउरब्रह्मसमाना॥
तब नारद बोले कर जोरी * गयौं हिर्दय तस कहौं बहोरी॥
ज्ञान रूप बालक धरि देहीं * गयौं हिर्दय तव परमसनेही ॥
देखौं जाय सृस्टि कै रचना * देखत बनैं न मुखकढ़ैंबचना॥
जेहि बिधि ब्रह्मै गाँव बनावा *धर्‌यौ नामतस बिस्नुबतावा ॥
तुम्हरे हिर्दय तीनहूँ लोका * रामनाम सुनि भयोअसोका ॥
यह नहिं जानैं विस्नु वोदारा * की ममहिर्दय ब्रह्मपगधारा ॥
जानैं बिस्नु ब्रह्म ब्रह्मलोका * हुँआँसृस्टिरचिपरमविसोका॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो॰ तीनिलोक उर जानिकै विस्नु भयो आनंद ।
जैसेसंकरधारि सिर मिटयो कलंकसोचंद १२४ ॥
चौ॰ तीनिलोकअपनेउरजाना * तब भै विस्नु विस्नु भगवाना ॥
जानत भेद सक्ति उरआई * रतन हेतु कछु रच्यो उपाई ॥
लै उर ज्ञान बाल तन धारी * बिमलहिर्दयनिजगयोखरारी ॥
आठमास कर बालक भयऊ * क्षीर उदधि तब पहुँचत भयऊ ॥
नारद सहित गयो उरमाहीं * मिलेउ जाय ब्रह्मा मनमाहीं ॥
जो नारद कह निजमुखबाँची * रचनाविस्सुविस्नुलखिसाँची ॥
मिलेउ ब्रह्मका विस्नु सुखारी * विस्नु चरन ब्रह्मै सिर धारी ॥
दोउ जन मिले परस्पर भाई * तबहिं विस्नु बोले सिरनाई ॥
हम नहिं तुम्हैं जानि उरमाहीं * रहेंन अज्ञान ज्ञानउरनाहीं ॥
दो॰ चूक छिमौं यह नाथ मम भा हमते अपराध ।
तुमतो हमरे हिर्दयमा नहिंजाना भैव्याध १२५ ॥
चौ॰ ब्रह्मलोकहम तुमकाजाना * यहनारद मुनिदीन्ह्योंज्ञाना ॥
क्रम २ कथा कह्यो चौरासी * तुम्हैंबतायहिर्दयअभिनासी ॥
तब होय बाल ज्ञान धरि देहीं * मिलेनआयतुम्हें परमसनेही ॥
मुलु यक भूल तुम्हरे उरमाहीं * रह्यो निकट चेतायहमैंनाहीं ॥
तब ब्रह्मा बोले यह बानी * करिसतसंगजानैंमोहिंज्ञानी ॥
जो हम तुम्हैं चेताइ अनंगा * तौं उठि जात धर्म सतसंगा ॥
बिनु सतसंग हमैं नहिं पावै * जिमिमेंहँदी अरुणाइछिपावै ॥
येहिविधिदोउजनमिलिबतलाने * अपरचरित कछुसुनौंपुराने ॥

इति श्रीसतसंगसागरेमानसेआनन्दकन्देब्रह्मचरितेविस्नु
ब्रह्मामिलापेज्ञानरूपेनारदउसतसंगेविस्नुसक्तेत्राभे
नामत्रयोदसोअध्याय १३ ॥

---

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कच्छकथा ॥

दो० कच्छरूपकै कथा अब कहौं मतिसरिस बिचारि ।
सज्जनसुनिविस्वासधरिहिर्दयममिलैंखरारि १२८॥

चौ० चारिवेदखटसहसपुराना ✻ सब गुरिया जानौं परमाना ॥
यहु सतसंसागर है सूता ✻ नामसुमेर जपैं अवधूता ॥
देहँ सकल खट वेद पुराना ✻ सतसंसागर जीउ प्रमाना ॥
गुरियादेहँ कथा सब जाना ✻ जीवसूत उरज्ञान भुलाना ॥
दस अवतार कथा उर माहीं ✻ ताहि भेद कोउजानत नाहीं ॥
दसअवतार हिर्दय अवतारा ✻ ताहि कथा बरणौं संसारा ॥
तीनौं लोक हिर्दय के माहीं ✻ सज्जन सुनौं छुआछल नाहीं ॥
ज्ञान प्रेम औ भक्ति सरूपा ✻ सतसंसागर स्तुति कर भूपा ॥
वेद पुरान नदी सम जाना ✻ सतसंसागर नरबद ज्ञाना ॥
सब पूरब यहु बहै पछाहाँ ✻ कढ़ा उदधि ते बहै अथाहा ॥
हिर्दय कथा यहिमा अधिकारा ✻ तीनौं लोक विराट पसारा ॥
जेहि बिधि छीरमथा भगवाना ✻ सुनौं सुजनमन चितदैकाना ॥
कह नारद ते विस्नु बुझाई ✻ छीर मथन हित रचौ उपाई ॥

दो० चारि वेद खट सहस सब ई बन भै परमान ।
मन सारंग माछी भयो लायो सहत सुजान ॥
कच्छ रूप कै कथा अब सतसंसागर रूप ।
सुन्दर अर्थ सो सहतहै खाँय सुजन जन भूप ॥
लावहु मन्दर ज्ञान बर डारौ हिर्दय पयोधि ।
देवअसुर सबजोरिये काढौं रतनसुसोधि १२९ ॥

चौ० डाँड़ी प्रेमकटोरीज्ञाना ✻ अँइँचनियाँ सूरति सुभजाना ॥
सूरति सेस बिकट अवतारा ✻ ज्ञान मन्दराचल स्तुति सारा ॥
नारद चले दइतन के पासा ✻ विस्नु बचन लै परम हुलासा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

काम क्रोध मद मोह अपारा * अहंकार छल भ्रम मतवारा॥
त्रिसुना दुबिधा अरु अज्ञाना * दगाबाजिअधरमदुखनाना॥
संसय चिन्ता इरखा पुरखा * भूल गुमानसोमान सुसुरखा॥
कपट मयावी लोलुप कर्मा * चोरीजुआँ सो अपर अधर्मा॥
मान गुमान सान भट भारी * तामस तमाँ सोच उर धारी॥
आतमघाती अरु मन पापी * परदुख सदाँ सो परसंतापी॥

दो॰ सबदइतनते कहत फिरैं नारदमुनि समुझाय।
चलौ छीरके मथनहित पठवा बिस्नु बोलाय॥
पइहौ अमृत सब जनें अमर होउ संसार।
महाबली कोउ जीतै नहिं देव न पइहैंपार १३१॥

चौ॰ परद्रोहीमोंही अभिमानी * कोही लपटी सान गुमानी॥
बिन बिसवाँसी बे परतीती * तजिनिज धर्मसदाँअनरीती॥
छूति दोख चंचल दुरबुद्धी * हिंस्या जीव सो सदाँ कुबुद्धी॥
लम्पट कपटी कुटिल गँवाँरा * चुगुल चवाई चपल छिनारा॥
दम्भ दइत इति नाम गनाये * ई नृप अपर सैन समुदाये॥
इनका नेवत दीन नारद मुनि * सैनसैनमिलिआयसुभटधुनि॥
तब नारद ते कह भगवाना * अबदेवतनका लावोसुजाना॥

दो॰ दया सांति बिस्वास सति भक्तिभाव बैराग।
प्रेमप्रीतिनिज २ धरम राम नाम लौलाग॥
दानी नेमी सातुकी बिज्ञानी धमवाँन।
प्रीतिबिबेकसमानचित दुबिधारहितअमान१३२॥

चौ॰ द्रिढ़ताबिरतिसदाँसन्तोखी* परहितहिर्दय प्रेममनपोखी॥
दम्भ रहित हिंस्या मद नाहीं * प्रेम प्रतीति भजन मनमाहीं॥
निरछल कपट रहित संसारा * वेद प्रतीत सो ब्रह्म बिचारा॥
स्रुति पालक घालक मदमोहा * सकल सनेह न मन परद्रोहा॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

इरखा छल मन सपनेउँ नाहीं * नाम सनेह देवस निसि जाहीं॥
हारि जीति उर बैर न प्रीती * नहिंसपनेउँमनआवैअनीती॥
स्रवण वेद नयनन मा भानू * असुनीकुमार घ्राण हनुमानू॥
जिब्भ्या बरुण इन्द्रकर जाना * सब इन्द्रियन देव अस्थाना॥
इन्द्री देवता निज उर माहीं * लै आवौ बेलम्ब कुछु नाहीं॥
सुनि नारद देवतन के नामा * चले बुलावन मुनि सुखधामा॥

दो॰ देवलोक नारद गयो कह्यो सुरन ते हाल।
चलहुसकलममसाथमिलितुम्हैंबोलायकृपाल १३४॥

चौ॰ चलेसकलनारदकेसाथा * आय धरा हरिके पद माथा॥
सकल सुरासुर अंतर माहीं * भयो भीर कहिजातसोनाहीं॥
तबहिं बिस्नु बोल्यौ असबानी * सुनौं सुरासुर बचन प्रमानी॥
मथन समुद्र जतन हम कीना * तुम्हरे हेतसो श्रम मन दीना॥
जाव दैत तुम लावो मन्दर * डारौं निज उर छीर समन्दर॥
चले दइत सुनि बचन प्रमाना * लइ आयौ मन्दरचल ज्ञाना॥
नारद सहित सो देव पठाये * जाउ सेस तुम देउ जगाये॥
चले सकल सुर नारद साथा * गयो पताल सेस पद माथा॥

दो॰ धरि अस्तुति करने लगे जाग्यो सेस सुजान।
बिस्नुबचनसबप्रघटकहि सुनासर्फस्रुतिज्ञान १३५॥

चौ॰ चल्यौसेससबसुरनकेसाथा* आय बिस्नुपद नायोमाथा॥
तब प्रभु कहा सकल ते बैना * सुनु सुर असुर बातममचैना॥
सेसनाग मुखकी जो ओरा * पकरे ऐंचनि भट बरजोरा॥
तेहिका अमृत देहौं पियाई * पूँछ तरफ सो मदिरा खाई॥
येहिबिधिछलकीन्ह्यौं भगवाना *असुरनसुनतभयोअभिमाना॥
डाँड़ी प्रेम ज्ञान लै मन्दर * सूरति सेस सो ऐंचनि सुन्दर॥
डार्यौ छीर समुद्र के माहीं * लाग्यो मथन महाँ बलजाही॥
मुखकी ओर दइत धरिलीन्हा * पूँछ पकरि देवन श्रम कीन्हा॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

लाग्यो मथन सुरासुर जबहीं * कच्छ रूप हरि धार्यो तबहीं ॥
पीठि धर्यो मन्दरचल भारा * मन्दर ज्ञान सो भार अपारा ॥

दो० एकबार मन्दर घुम्यों सेस दीन फुफकार।
चउथ्याईसोअसुरजरे भयो निमिखिमाछार ॥
दूजिबार मन्दर फिरा आधे असुर सिंघार।
तीजिबार मन्दर जबहिं भयो तिहाँवाँ छार ॥
चउथयाँई खजरहिगयो निकरिरतनदसचारि।
सालिकरामअनंदजग फूलबरखिसुरभारि १३८॥

चौ०छीरउदधिअंतरकढ़ेरतना*चउदहअपरसुजनसुनौंजतना॥
कहौं रतन के नाम बखानी * प्रेमसहित मृदु कोमलबानी ॥
चन्द्र लच्छिमी जहर बखाना * कामधेनु मदिरा अरु पाना ॥
रम्भा अमृत औ ऐरापति * तुरँगघृत्तऔ औखदिसति २ ॥
चिन्तामणी कल्पतरु जाना * इ कढ़ि रतन वेद परमाना ॥
इति उर रतन काढ़ि भगवाना * ताहिअर्थ कुछु सुनौं सुजाना ॥
लच्छन लछिमी मन है चन्दा * बिखहैं बिसय कालकरफन्दा ॥
कामधेनु कामना पसारा * मदिरा मद अभिमानबिचारा॥
पान प्राण पांचो उर सारा * प्रान वदाँन बयान सो सारा ॥
रम्भा रमण सुरति संसारा * तेहि भे प्रघट देहँ अवतारा ॥
अमृत आत्मा अँवर जहाना * करि गनेस निजनामबखाना॥
तुरँगतुरी यक हिर्दय अवस्था * जाहिपास नहिं आवै बेवस्था॥
ज्ञान सो घृत औखद है दाया * चिन्तामणि चिन्ता मनपाया॥
दुइ चिन्तना प्रघट संसारा * यक साँची यक झूँठि बिचारा॥
झूँठी उर आवै उड़ि जाई * राम कृपा साँची नर पाई ॥
कल्पबृच्छ कल्पना जोई मन * सालिकराममिलैं सोइ२धन ॥
रतन अर्थ दै ब्रह्म प्रसादा * सुनत सुजनदेहैं आसिरबादा॥
छीरमथन जस कह्यों बिचारी * अब जस बांध्यो सुनौं खरारी॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो॰ लच्छनलछिमी बिस्नुलै पालन हित संसार।
मद मदिरा दइतनंदियो पियत भये मतवार॥
हाथी दीन्ह्यों इन्द्रका पूजउ नाम गनेस।
पायो भानु तुरंग तुरि उड़ैं अकास नरेस॥
अमृतआत्मासुरनदय पियउध्यानधरि अमर।
तुम कबहूं मरिहौ नहीं कोउनहिं जीतै समर॥
आत्मा निश्चय भूलिहौ तब होइहौ हैरान।
कोटिनमिलैंकलेसतन नहिंमरिहैं उरप्रान १४२॥

चौ॰ज्ञानसोघृतसंतनकादीना * रामरूप लय भयो अधीना॥
रम्भा रमण दीन संसारा * माया रूप सृष्टि बिस्थारा॥
कामधेनु कामिन का दीन्हा * लेउ कामना जैं जस कीन्हा॥
चिन्तावालेन दै चिन्तामणि *सेससमानधरा निजफणिफणि॥
तेहि छिन जौन कामनावाले * कल्पबृच्छ करि ताहि हेवाले॥
बैदन सतगुरु दीन धनत्तरि * अज्ञानिन रोगिन मारौ अरि॥
दीन्ह्यों पान प्राण संसारा * एकुइ एकु सो करौ अहारा॥
मन चन्द्रमा सकल घटबासा * मोह निसा उर गँगँनप्रकासा॥
धरि चन्द्रमा बिस्नु उरमाहीं * चन्द्र हिर्दयविस्सुम्भरिछाहीं॥
ग्यारह रतन बाँटि संसारा * बिखनहिं कोउकरि अंगीकारा॥
तब नारद ते हरि कह बानी *कुछु बिष जतनसोकहौबखानी॥

दो॰ तबहिं बिस्नुते जोरिकर कह नारद असज्ञान।
बिनु संकर जग कोकरै जहर हलाहलपान॥
कहा बिस्नु नारद सुनों सकल सुरन लैसाथ।
संकर जाय जगाहू नायो चरनन माथ॥
बिस्नु बचनसुनि सुरनलै नारदकीन पयान।
लाग्योअस्तुतिकरनसुर नारदसहितप्रमान १४७॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

छं॰ लाग्योकरन सुरझारी। अस्तुतिविमल त्रिपुरारी॥
जै दीनबन्धु दयाला। अब आव ममहितकाला॥
मथिछीर विस्नु वोदारा। करि चउद रत्न पसारा॥
मन जाहिभाव सोदीना। यहिविधि जतनहरिकीना॥
त्यारा रतन दै बांटी। अब जहर रह परपाटी॥
तेहि देखि सबकोउ भागा। जनु काल सबका जागा॥
कोउजातनहिं तेहिपासा। जो खाय तनकर नासा॥
तब बिस्नु हमते बोले। सुन्दर बचन अनमोले॥
तुम जाउ संकर पासा। जो चहौ प्रान बिलासा॥
हुँआँ सम्भु लागीतारी। अस्तुति करौ सुरझारी॥
जो जागैं दीन दयाला। तब खाँय सबकर काला॥
अस सोर भै कैलासा। तब जागे शम्भु विलासा॥
तब देखि सुर सिवझारी। मुख छाई कालखुमारी॥
कहबचन सम्भु सुहाये। तुम देव सब कहँ आये॥
जसकीन अस्तुतिझारी। तस कह्यो प्रघट कमारी॥
सुनि सुरनके सब बैना। भै सम्भु के उर चैना॥
भै दीन बन्धु तयारा। वृखसाजि चले वोदारा॥

दो॰ नारद सुरन समेत सिव अस सोहत मगजात।
भक्ति रूप संकर धरे ज्ञान सो सभा बतात॥
बिस्नु पास पहुँचत भयो संकर सभा समेत।
साश्टांदंडवत करि परिगे धरणि अचेत १४६॥

चौ॰विस्नुउठावासिवनिजभाई* बारबार निज हिर्दयलगाई॥
रतन कथा क्रम २ सब भाखा * गुप्त भेद कुछु गोय न राखा॥
तब सिव कहा जोरि करतारी * अबहमैंमरजी कहा तुम्हारी॥
कहा बिस्नु यहु जहर कराला * जोकोउ पियै ताहिकर काला॥
तीनिलोक मा असकोउ नाहीं * जोकोउ जान जहरका खाहीं॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जान जहर जो खाय सुजाना * तेहि के होइ हैं बाहुँ अजाना ॥
जो कोउ भक्ति रूप अवतारा * अस्त्रम परे चहै करै अहारा ॥
वहिका बिख ब्यापै नहिं भाई * यहिलायकतुम अहौगोसाँई ॥
भक्ति जहर जैं कीन अहारा * वहिका का करि बिख संसारा ॥
यतने बचन बिस्नु जब बोले * तब संकर कृपाल द्रिग खोले ॥
गुरु पितु मातु साधु की बानी * चहै जो होय लेब हम मानी ॥
सबकर हित जेहिमा होइ भाई * सो हम लेब मानि सुखदाई ॥

दो० अस कहि प्याला जहरका संकर लीन उठाय।
रामनामउर सुमिरिकै चरणामृतअसपाय १५० ॥
जाय दीन नहिं जहरउर बिस्नु सम्भुगरदाब।
बिस्नुबसैं संकर हिर्दय जाना हम मरिजाब १५१ ॥

चौ० नीलकंठ तब ते हर भयऊ * सकलसुरनउबार करिदयऊ ॥
खाय बिखै बिख सब संसारा * सालिकराम अनन्द वोदारा ॥
यहिबिधि रतन बाँटि करतारा * धरि मोहिनी रूप अपारा ॥
अमृत देव बटत सुखदाई * राहु दइत छलकीन्हों आई ॥
मार्‍यो हरि होयगे दुइ खंडा * राहु केतु दुइ भयो प्रचंडा ॥
अपर दइत भट करि सिंघारा * पुनि कुछु कथाकहौंस्रुतिसारा ॥
दूसर रतन अर्थ सुखदाई * सुनोंहरिजनमनबुधिचितलाई ॥
लछिमी भे सबधन संसारा * कउड़ी लै हीरा अवतारा ॥
और सकल धन येहिके बीचा * अन्न बस्त्र औ ऊँचरु नीचा ॥
बिखभेसकल जहरजग भयऊ * सर्फआदिसब नसा सो लयऊ ॥
कामधेनु भे भइँ सब गाई * धर्मबेलि यहि जगमा आई ॥
दीन धर्म गइया कर रूपा * सबचरअचर ब्यापिजगभूपा ॥

दो० कल्पबृच्छ सबतरु किये पातनसहित बनाय।
चिन्तामणिसबउपलकरिदीनागिरिनप्रगटाय १५२ ॥

चौ० वहिपरबतनिजउरमणिबासा * पावैंखोदिजग्तकोउदासा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ऐरापति हाथी संसारा ❋ कीन गनेस रूप अवतारा ॥
स्यामकरण घोड़ा प्रघटाई ❋ सुर्ज आदि सबराजन पाई ॥
मदिरैं सब जग मद प्रघटावा ❋ वेदरूप कुलधन सुतिगावा ॥
रम्भैं सकल नारि उपजाई ❋जहँलगिरतिपतितहँछबिछाई॥
चारिखानि सबजोइनि जहाना ❋ सबमा रतिपति बेद बखाना ॥
पापबेलि अस जग्त बनाई ❋ कीन्ह्यौंमुक्ति भजनसुखदाई ॥
औखधि सकल बेलि प्रघटावा ❋ होंय धनत्तरि बैद बनावा ॥
घृतभे भयो काम अवतारा ❋ जिनरतिकासुखदीन अपारा ॥
यह माया बिच पैदा सृस्टी ❋ करैं आप सब ईसुर दिस्टी ॥
सब रस येहि घृत पैदा कीना ❋ सकल स्वाद सृस्टीका दीना ॥
अमृत प्रघटकीन सब दासा ❋ नामअमरहारिजनकहिंखाँसा ॥
पान भे भयो पात संसारा ❋ बेलिरूप चर अचर पसारा ॥
पान प्रान ब्यापे जग जाना ❋ प्रान बदाँन बयान समाना ॥
मान रूप जगमा अवतारा ❋ बीरा सकल बीरता सारा ॥

दो॰ येहिबिधि चौदह रतनभै प्रघट्यो सब संसारि ।
जेआयेतेहिबिदाकरि बेहिलच्छिमीप्यारि १५३ ॥

चौ॰शेसगयोलैमणिनिजधामा❋करिअस्तुतिसुरगयसुखसामा॥
बिस्नु चरण धरि सिउकैलासा ❋ छीर समुद्र आपकरि बासा ॥
येहिबिधि भयोकच्छ औतारा ❋ कीनसरिसमतिबिमलपसारा॥
सुनु अगरीमति बिमलपुराना ❋ कच्छकथायेहिबिधिभगवाना॥
अगम अपार पारनहिं जाही ❋ रामकृपा कुछु भाख्यों ताही॥
निरगुण सरगुण बिमलमयङ्का ❋ चन्द्रसुर्जलखि म्याँटौ सङ्का ॥
यक औतार हिर्दयके माहीं ❋ निरगुणकोउजगजानतनाहीं॥
निरगुणजसयहिमा अधिकारी ❋सुनुअगरीमातिदिलमनप्यारी॥
सरगुण सुजस बिदितसंसारा ❋ निरगुण नहिंकोउकरैबिचारा॥
जेहिबिधि तीनिलोक उरमाहीं ❋ अगरीकह्योंसकलतोहिपाहीं ॥



CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो० कहा आगरिमति सुनौंप्रभु धनिपदशब्द तुम्हारि।
नारि अहिल्याजसतरी तसतरि मतहिमारि १५४॥

इति श्रीसतसंगसागरेमानसेआनन्दकन्देब्रह्मचरिते कच्छअवतारेसमुद्र मथेदेवतादइतसंगुक्रेचउदहरत्नेबाँटनेनामचतुर्दसोअध्याय १४॥

ब्रह्मकमल प्रगट कथा॥

चौ० पूजिविस्नुपदछीरसमुन्दर * पायोबर लछिमीहरिसुन्दर॥
रहे ससुरारि जग्त के नाथा * नायो छीर बिस्नुपद माथा॥
दीन बास पाताल सुजाना * जहाँ सेस तहँ रहो भगवाना॥
सूरति सेस सेजपर सयना * लक्षिमीसहितकरौसुखअयना॥
सुनि अस बिस्नु गयोपाताला * कीन सैन फनपर निजकाला॥
कीन्हेंकाल सहसफन छाया * कीन्ह्यों सैन बिस्नुमन भाया॥
लागीं लछिमी चरन पलोटन * द्याखैंपदनिजतृणकी ओटन॥
तेहिछिननाभिकँवलकढ़्योएका * कँवलफूटिभै ब्रह्म बिबेका॥
ब्रह्मा चारि वेद लै आये * चारौ भुजा प्रेम छबि छाये॥
चतुरबरणश्रुतिमुखविधिचारी * जनुसोभा तिहुँलोक पसारी॥
यक्कर जजुर एक रिगिधारी * एक अथरबण स्यामसँवाँरी॥

दो० चारिवेदलय ब्रह्मकढ़ि रिगिजजु स्याम अथर्ब।
वेदते भयो सास्त्रखट न्याय पतंजल सर्ब॥
सास्त्र मिमांसा विशेखिका सांखि और वेदान्ति।
सास्त्रनकर्मनप्रगटकरिकर्मतेजग्गिनक्रान्ति १५६॥

चौ० जग्गिनमेघप्रघटिसंसारा * मेघनेजलजलसृस्टि पसारा॥
तिनते भई पुरान अनेका * प्रघट अस्टदस एक विवेका॥
सुना ब्रह्मपति भये अवतारा * दासी सारद हिर्दय बिचारा॥
लै वसिस्ट सुत दोउजनितहँवाँ * आईप्रघट भयोबिधिजहँवाँ॥
तेहि अँवसरनरदौमुनि आये * नित नवीन ब्रह्मा गुनगाये॥
सनकादिक आयो तेहिंबारा * परमहंस वेदन अवतारा॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सबन धरा ब्रह्मा पद माथा * पितुपति देखतभयोसनाथा ॥
पाँचो सुत सारद लै आगे * कहा ब्रह्मा ते बचन विरागे ॥

दो० दासी सारद सहित दोउ पाँचो सुत यकसाथ।
लै ब्रह्माके आगे भई चरनन नायोमाथ १५७ ॥

चौ०सुनहुनाथईममसुतपाँचा * करौ उपकार इन्हैं कुछुसाँचा ॥
कुछु मारग इन्हैं देउ बताई * निज२ काज जाँय सबभाई ॥
तब दै ब्रह्म वेद सनकादी * लेव सुत सदाँ ब्रह्मतुमबादी ॥
दै वसिस्ट मुनि शास्त्र पुराना * दीन गात्त्री सब सुखदाना ॥
उपरहिती वसिस्ट मुनि दीन्हा * सो वह ब्रह्मपुत्र नहिंलीन्हा ॥
नहिं मैं लेहौं उपरहिती कर्मा * सबते नीच महाँ यहु धर्मा ॥
तबविधि कहा साँचि यहबाता * मुलु यकलाभ बड़ी है ताता ॥
त्रेता मद्धि लेहैं अवतारा * पूरन ब्रह्म राम संसारा ॥
सो तुम्हारि होइहैं उइ सेवक * ध्यावत जाहि चराचरदेवक ॥
सुनि वसिस्ट करि अंगीकारा * तब नारद दै नाद बिचारा ॥

दो० येहिविधि सुतनासिखायविधि भयो पुत्रआनन्द।
ब्रह्म पिताउरवचनधरि कटयोभरमकेफन्द १५८॥

चौ०वेदरूपसनकादिकभयऊ * नारद नाद रूप होयगयऊ ॥
सकल जग्त दै राज वसिस्टा * तारौ खल जगसबपापिस्टा ॥
जग्त रूप वसिस्टमुनि भयऊ * आगिलचरितसुनौंसुखदयऊ॥
तब ब्रह्मै अस हिर्दय बिचारा * करिहौं वरण प्रघट संसारा ॥
मुख ब्रह्मण छत्री भुज भयऊ * कटिभैबइस जग्तसुखदयऊ ॥
सूद्र चरण अवतार जहाना * येहिविधिब्रह्मसृस्टिपरमाना ॥
ब्रह्मण पुज्जि छत्रि दै राजू * बइस कर्म कीन्ह्यौ सुरकाजू ॥
सेवक सूद्र सदाँ निज धर्मा * निज २ धर्म परापर कर्मा ॥
ब्रह्मण ब्रह्म आप अवतारा * जसमैं प्रथमैं कह्यौं बिचारा ॥

दो० यहि विधि चारौ बरण भय एकरूप अवतार।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कोउमुखकोउभुजकटिकोऊकोऊचरणश्रुतिसार १५९॥

चौ० अबजसप्रघटभयोजुगचारी*कहौंकथामतिसरिसबिचारी॥
सतजुग ब्रह्म रूप अवतारा * परसराम करि राज अपारा॥
भये त्रेता सनकादि सो छत्री * वेद विप्र कर बाँधे अत्री॥
भये सनकादि राम अवतारा * कीन्ह्यों असुर कर्म सिंघारा॥
भये वसिस्ट दोवापरकर रूपा * कर्म प्रधान बइस कृस्नभूपा॥
नारद सूद्र भयो कलिकाला * घर २ विग्रह राज कराला॥
येहिविधि प्रघट भयो जुगचारी * चारहु वरण राज संसारी॥
सकल विराट रूप संसारा * नहिंबिचारकरिकुमतिगँवारा॥

दो० आगरिसुमति पुनीतजस येहिविधि सबसंसार।
जेसुनिहैं अरु बाँचिहैं ते उतरैं भवपार १६०॥

चौ० येहिविधिसुतनदीनउपदेसा*जाउबासजहँनिजनिजदेसा॥
तब अस्तुति नारदमुनिकीन्हा * जयनिजपितानादविधिदीन्हा॥
विधि मूरति चर अचर समानी * धरिउर ब्रह्मगयो मुनिज्ञानी॥
पुनि अस्तुतिकीन्ह्योंसनकादी * ब्रह्मपिता दै वेद अनादी॥

श्लोक॥ रिग्तिधुनिअखंधुअज्तज्ञानभानं। प्रसीता दिसाल्यमसमद्रीस्टिसंत्वह॥ जज्रुरस्सोय्महंश्रुतिस्वरस रीरं। भज्तत्मासिवोहंवरकल्पकल्पहः १ स्म्यत्ततोहंप्रण य्तचौलच्वं। त्रेयलोकभास्ममममप्तसोतुरित्म॥ रूप्से थरबँणसुंन्यमसोआत्मा। सुंन्यमसरूपाकाल्तसोदा त्मह २ देब्ममहात्माप्रतीत्पसोछंन्दद्म। अनंद्मपर प्ब्रह्मसुच्तितासरूप्म॥ यत्तधुनिअखंड्मब्रजित्भ्रमसोका ल्म। प्रसीतादिसतग्रुरआनंदकन्द्म ३॥

दो० करि अस्तुति सनकादि श्रुति वेदगयो संसार।
परहितबिचरनलागिमहि वेदबाल अवतार १६१॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चौ॰पुनिअस्तुतिवशिस्टमुनिकीन्हा✱आशिरवादब्रह्मबरदीन्हा
बस्यो वशिस्ट अवधमाजाई ✱ ब्रह्मरूप उपरहिती पाई ॥
सारद दासी रहिं उरमाहीं ✱ कँवल मद्धि ब्रह्मा बसे जाहीं॥
कँवलब्रह्मगयकँवलहिर्दयहरि ✱येहिबिधिब्रह्मसोसृस्टिप्रघटकरि॥
मतिअनरूप कथा मैं बरनी ✱ भवसागर के सुन्दर तरनी ॥
यह सुनिकथा परमपदपावै ✱ जीवन मुक्ति वेद जस गावै ॥

इति श्रीसतसंगसागरेमानसेआनन्दकन्देब्रह्मचरितेब्रह्मप्रघटेकँवल
मध्येभगवतहिर्देपुत्रउउपदेसेबरणनाम
पंचदसोऽध्यायः १५ ॥

पापी लछिमीकथा ॥

चौ॰अबलछिमीजससुनौंबिचारा✱जुगुलरूपजेहिविधिअवतारा॥
एक धर्म यक पाप बिचारा ✱ तेहिकर भाग करैं श्रुतिन्यारा॥

दो॰यकब्रह्मणकन्यारहै तेहिलछिमिनियाँनाम ।
तरुणअवस्थासमयजब तबलाग्योतेहिकाम॥
तबकन्याबोलतभई सुनोपिता निजबात ।
ममलछिमिनियाँनामहै करौंविस्नुब्यहतात १६३

चौ॰कहब्राह्मणसुनुसुतासयानी✱ का तुम नसा खाय बौरानी ॥
कहां बिस्नु हैं यहि संसारा ✱ जो ढूढ़ौं मैं नर जग न्यारा ॥
तेहिते कोहु नर करौ बिवाहू ✱ लेई हम सब नयननलाहू ॥
नहीं हँसउवा होय हमारा ✱जो तुमनिजउर बातबिचारा ॥
बहुकुछु पितैं दीन निज ज्ञाना ✱नहिं कन्यैं कीन्ह्यौं कुछुकाना ॥
तब ब्राह्मण घर दीन निकारी ✱ जाव ढूढ़ौ बर जहां खरारी ॥
सुनि पितुबचन सुताभइठाढ़ी ✱ चलिभै बन अनन्दउरबाढ़ी॥
गइ यकबन जम्बूतरु देखा ✱ पोल हिर्दय बैठीं पितुलेखा ॥
कन्द मूल बनके फल खाये ✱येहिविधिदोवादसबर्खगँवाये॥
निसदिन विस्नुध्यान उरमाहीं ✱ सपनेउँ आन भरमउरनाहीं॥
जय अंतरजामी भगवाना ✱ कब लेहौमम खबरि सुजाना॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जोप्रभु दीनबन्धु श्रुति गावा * इच्छयाफलदासन कहुँपावा॥
तब हमारि पूजौ अभिलाखा * जोहमउरकुछु छलनहिंराखा॥
हुँआँविस्नु असमनअनुमाना * यहकन्या मम दास सोजाना॥
यहि मँशा पुरवब हम जाई * असकहिहरिचलिभेहरखाई॥
धारि सन्ततनु पहुँच्यो तहँवाँ * कन्याब्राह्मण तपकरै जहँवाँ॥

दो॰ गये पीपर के पास हरि कन्यैं दीन अवाज।
को जम्बूतरुमा घुसा कौन काहिकाकाज॥
हम ब्राह्मण की छोहरी कीन्ह्योंजम्बूधाम।
बिस्नुपतीमनममचहै लछिमीहमरोनाम १६५॥

चौ॰ तबकहहरिहमतुमपरपरसन * बाहेरकढ़उकरौममदरसन॥
हम आयेन तव करन बिवाहू * बाहेर कढ़उ लेहु तप लाहू॥
देखि सन्त तन मन सकुचाई * फिरि पीपरतरुमाघुसिजाई॥
कह तुम को छलकीन्ह्यों आई * देहौं श्राप तन मूल नसाई॥
कहा सन्त हमहीं हरि इच्छेया * नहिंपरतीतितोलेहुपरिच्छेया॥
कह कन्याँ कस जानी मम बर * मोरमुकुट नहिं तनपीतम्बर॥
जस कन्याँके वर मन भावा * तेहिछिनतसहरिरूपदेखावा॥
कन्याँ देखि विस्नु उर आगे * कोटिनउपमाजग लघुलागे॥
जो ब्यापे चर अचर समाना * सोइकन्याँ बरलख्योसुजाना॥
तब करजोरिचरण रहिगयऊ * कीनबिवाह बिस्नुसुखभयऊ॥

दो॰ लायो लछिमी वेहिकै गयो लच्छिमी पास।
हाल बतायो ताहि कर छीरसोसुता उदास॥
छीर सुता कह बचन अस ईतौ पाप औतार।
मम इनके सरबरि कहाँकहौसोनाथ बिचार॥
पाप धर्म यक साथमा कबों न रहैं कृपाल।
पापआगिनि जल धर्म है एक २ कर काल १६८॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चौ॰कहाबिस्नुईतुमसमनाहीं * पापै धन पाइहैं मन माहीं ॥
इन्हैं तुम्हार हिसाहै आधा * तुम धम जगा इ जइहैं बाधा॥
चोरी जुआँ पापके माहीं * ई रहि हैं उन के निज पाहीं॥
हाकिम डाँड़ै परै जग डाँका*तुमलगिहौजहँ चलिममसाका॥
सकल सूमघर इनका बासा * जहँ ई होंय सजसतहँनासा ॥
भाँड़ तमासा खइहैं बेड़िया * कीमहिमिलैकिखाँयपतुरिया॥
छूटि परै कर कोऊ उठाई * जाय जहाँ बहुरै नहिं भाई ॥
जहँ पापी लछिमिनियाँ जइहैं * तहाँ धर्मके बेलि उठइहैं ॥
अँवर बेलि बिन जर अवतारा * परैं जाहि तरु करि हैं छारा॥
तइसे पापी लछिमी जानौं * बिना धर्म जर वेद बखानौं॥
जहँ तुम तहँ मम कारज होई *कोइमन्दिरमहिजितितनकोई॥

दो॰ दुइ हमारि हैं रूप जग एक पाप यक धर्म ।
धर्म भे सुजस अनेकबिधिपापभेसदाँअकर्म ॥
इनका मिलिहै पाप पति पापैसुत औतार ।
तुमकामिलिहै धर्मबरु सुजसअजससुतसार ॥
अजस पुत्र भय पाप के धर्मपुत्र जस सार ।
येहिबिधिहिर्दयबिबेककरिदुखतजिकरौबिचार १७१॥

चौ॰सदाबर्त ब्रह्मण सेवकाई * गउवन सन्त हेत जगजाई ॥
ताल कुवाँ परस्वारथ माहीं * खाँय खँवावैं मद कुछु नाहीं ॥
सदाँ दीनहित लागै जोई * इनके घरन बास तव होई ॥
लीला राम औ ठाकुरदोवारा * करैं पाठ पंडित दरबारा ॥
रहस रंग प्रभुहित जहँ होई * तहाँ तुम्हार बास हम सोई ॥
तीरथ धाम बर्त के माहीं * तहाँ तुम्हारबासश्रुति कहहीं॥
काम क्रोध मद लोभ विहाई * तहाँ धर्म लछमी बसौजाई ॥
इन्हैं तुम्हार नाम कर नाता * तुमजहँ धम ईजहँ उतपाता॥
दया रूप तुम लछिमी छीरा * ई हैं सुता ब्रह्म अदैनीरा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दूनौं जनी रहौ घर माहीं * सवतिसुभावनमनअरसाहीं॥
यहि बिधि दुइ लछिमीसंसारा * कह्योंकथामतिसरिसबिचारा॥
दो० सुनैं कहैं लछमी कथा करैं बिबेक विचार।
हौंयचहैंनरनारिकोउ सहजतरैंभवपार १७२॥
इति श्रीसतसंगसागरेमानसेआनन्दकन्देब्रह्मचरितेलछमीजसे
पापपुन्निविभागेवरणननामखस्टदसोअध्याय १६॥
रामनामप्रतापकथा॥
दो० कछु कथाइति श्रि भई जो सुनिहैं नरनारि।
सालिकरामसोसबकरैं इछेयापूरखरारि १७३॥
चौ०अपरब्रह्मजसकहौंबखानी * सुनौं आगरी सुमतिभवानी॥
निरगुन ब्रह्मसगुनजगकरिहौं * आतमतालसूखिजलभरिहौं॥
गुप्तसकल इतिहास पुराना * करिहौंप्रघट विवेक पुराना॥
जेहिबल मुक्ति सम्भु दै कासी*जेहिबलब्रह्मस्रस्टिअभिनासी॥
जेहि बल विस्नु पाल संसारा * जेहि बल सेसधरे महिभारा॥
जेहि बल सकल धाम जगपूजे * तीरथ सकल गनाओंदूजे॥
जेहि बल चन्द्र भान तमटारा * कछु प्रकास जेहिबलदैतारा॥
जेहिबल भार धरनिसबलीन्हें * सब चरअचरजीउतनदीन्हें॥
जेहि बल हनोमानगिरिलाये *लायसजीवनि लखनजियाये॥
जेहि बल अंगदभट जगभयऊ * पाँव रोपि लङ्का मा रहेऊ॥
दो० जेहिबल सब चरअचर जग करैं देवसनिसकाम।
सोईनामजससारश्रुति सुनुमति सालिकराम १७४॥
चौ०जेहिबलसन्तकरैंपरमारथ * कहैं पुरान कोटि महभारथ॥
जेहि बल नारद नाद बनावा * ईसुर असुरन समरकरावा॥
ईसुरता ईसुर जेहि बल करि * तीनिलोक अपने उरमाधरि॥
जेहि बल कर्म धर्म संसारा * चलै स्रस्टि आगे परिवारा॥
जेहि बल टिकै दया उर भाऊ * कर्म कलेस पाप भ्रमजाऊ॥
CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

टिकै भाव बिश्वास जहाना * निश्चयरूप प्रघट भगवाना ॥
जेहि बलभयो अधम परतापी * गनिकाजमनसधनजगपापी ॥
सेवरी गीध काग अरु मीरा * जेहिबल भयो दासरणधीरा ॥
जेहि बल कर्मरेख टरि जाई * कहौं कथा सोइ सबसुखदाई ॥

दो० जेहि बल चीन्हैं आपका लै ऐना कर कर्म।
सोइसबकथाप्रसंगअब सुनुअगरीमतिधर्म १७५ ॥

चौ० देस काल सब वेद पुराना * संतसकलसुरमुनिइतिज्ञाना ॥
तजि आतमा राम संसारा * अपरन तिहुँपुर तेजपसारा ॥
सतसंसागर आतम रामा * भवसागर कर सेतुसमाना ॥
धरि बिस्वास उतरिहैं दासा * जीवनमुक्ति ब्रह्मपुर बासा ॥
वेद पुरान सकल रस जानी * मन सारंग लायो बर बानी ॥
सतसंसागर सहत प्रमाना * सकल रोग नासैं भगवाना ॥
राम दास जो कोउ जगमाहीं * ते यह कथा सुनतसुखपाहीं ॥
सुनि यह कथा करैं खलतर्का * बानी बान लगत उरखर्का ॥
सोइ निस्चर जान्यो संसारा * सालिकराम तेहिबधऔतारा ॥
खलभुवंग बिख भरे सरीरा * सुनत राम जस लागैं तीरा ॥
परसिहाँतिमतिमलिनजहाना * नहिं सपनेउँसतसंसुनिकाना ॥
लागै फीकि कथा सुनि तेही * उर बिश्वास नहिंरामसनेही ॥
सदाँ कुसंग हिर्दय अभिमाना * इरखा पुरखा सान गुमाना ॥
तिनके हेत कथा यह काला * छूटे चक्र जहान कराला ॥

दो० मान बड़ाई ते रहित राम कथा संसार।
सुनैं रामकेदास कोइ जिनके बिमल बिचार ॥
कहौं प्रबंध बिचारि उर मच्छ राम औतार।
बर्तवान सुन्दर रचित सालिकराम बिचार ॥
सुनुअगरीमतिसतधरम जेहिविधिसतजुगमाहिं।



CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सोसबकहौंप्रबंधअब हिर्दयछुआछलना।हिं १७८॥

इति श्रीसतसंगसागरेमानसेआनन्दकन्देब्रह्मचरितेरामनामप्रतापे दासतारेजसेवरणननामसप्तदसोअध्याय १७॥

---

संखासुरकथा॥

चौ० एकसमय सतजुगकेमाहीं * धर्म सेवाय कतहुँ अघनाहीं॥
घर घर होंय आतमा पूजा * सत्ति सेवाय धर्म नहिं दूजा॥
ज्ञान अखंड राज मन माहीं * तामसछल सपनेउँ उर नाहीं॥
घर २ कर्म धर्म निज जाती * निसदिन करउर बिधिकैपाती॥
पुरुखन लोलुप नारि पतीव्रत * आतमराम चढ़ा हिरदैं सत॥
चोरी जुआँ कपट नहिं सपने * रहैं अनन्द धर्म निज अपने॥
आवा जाही तिहुँपुर माहीं * कोउपरधननहिंदेखि सिहाहीं॥
सतजुग जुइनि लाखचौरासी * घट २ ब्रह्म हिर्दय अभिनासी॥
यह जानैं सब नर अरु नारी * सुनुअगरीमति हिर्दयदुलारी॥
ब्रह्म बिचार ब्रह्म के लोका * बिस्नु सत्ति बैकुंठ असोका॥
नाम बिचार बिमल कैलासा * साधुरूपयह बिमल बिलासा॥
सिद्धि सतोगुण सब नर नारी * माया चिंता बिरति बिसारी॥

दो० सब जोगी बैराग उर चढ़ाहिर्दय अनुराग।
तनमनधनकैखबरिनहिं रामचरणलवलाग १७९॥

चौ० चारौबरणसोनिज २ धर्मा * निसदिनहिर्दयब्रह्मनिजकर्मा॥
चरण चारिजुग धर्म पसारा * सकल नारिनर ब्रह्म बिचारा॥
पुर्ष रकार नारि सो मकारा * यह बिचार सब के संसारा॥
दया सांति सब के मन माहीं * यक २ जिउ सब जीव समाहीं॥
सब जिउ सब सब करहे रूपा * एक द्रिस्टि मानस सम भूपा॥
यहिबिधिसकलहिर्दयभैज्ञाना * तीनिलोक अपने उरजाना॥
सब विद्या निज बचन अहारी * सब्द पदारबृन्द उरधारी॥
सब ब्रह्मा सारस्वत नारी * अगरीसुमतिप्रेम अधिकारी॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो॰ ज्ञानअखंड समानचित परहित सबमनमाहिं।
प्रेमसंतनरनारिसब अनँददेवसनिसिजाहिं १८०॥

इति श्रीसतसंगसागरेमानसेआनन्दकन्देब्रह्मचरितेकृतउजसे बरणननामअष्टदसोऽध्याय १८॥

---

मच्छ औतार कथा॥

चौ॰ जहँसुखतहँदुखवेदबखाना * अपरकथाकछुसुनौंसुजाना॥
प्रथमैं सुख पाछे दुख लेहू * दुखसुखसम श्रुतिसारसनेहू॥
सुखमा सब जग मन हरखाई * सकलजग्तदुखमाबिलखाई॥
ब्रह्म अनन्द जबहिं असआई * तब माया दुख रच्यो उपाई॥
वही ब्रह्म ते एक अचानक * प्रघटी संका प्रबल भयानक॥
संखासुर तेहि नाम बखाना * ताहि प्रभावसकलजगजाना॥
आपन काल आप उर माहीं * जिमिभीतर घुन काठैखाहीं॥
तेहि बिधि संखासुरजगआवा *जिमिकलिसबांजेउसंकैंखावा॥
चारिउ वेद भेद हरि लीना * जग्तबेकल भा आँधरमदीना॥
सब सुखगयोद्रिस्टिश्रुतिसाथा * हरि उरगये भा जग्त अनाथा॥
दयानन्द जिमिहरिश्रुतिधरमा *कलिमाप्रगट्योभ्रस्टअकरमा॥

दो॰ धर्ममेटि कलिप्रघटअघ बड़े २ सुजन बिगारि।
दयानन्दश्रुतिमानिजोई संखासुरदलभारि १८१॥

चौ॰प्रतिमासकलअपनितसवीरा* जेहि उररामबसे रणधीरा॥
ईसुर अंस जीव स्तुति गावा * दयानन्द सो धर्म उठावा॥
ब्यापक ब्रह्म चराचर वेदा * खायो दयानन्द दै खेदा॥
प्रतिमा नाम ते नहिं कुछु भेदा * रूप नास जस नामैं वेदा॥
मृतिकाकास्टउपल जलप्रतमा * तस माटी तन झूँठ सोसर्मा॥
प्रतिमा देंहँ म नामैं सारा * जाहिपच्छ जो जहँजसधारा॥
दयानन्दि कै जहँलगि देंहीं * सब प्रतिमा सम झूँठि सनेही॥
प्रतिमा छोंडि न छाँड्यों देंहीं * मायामोह क्रोध बस्यो ग्रेहीं॥
नारि पुत्र भाई अरु बन्धू * तेहिमा परे करैं खल धन्धू॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

यकतौ कलिक्रम सपरत नाहीं * सब जिउ बस मायाके माहीं॥
तनकुकरतिरहैं जो कछु करमा * दयानन्द सोउखललै धरमा॥
दो० कर्म चहै बहु देय तजि पहिले तजि संसार।
नाहिंतो होइगे भ्रस्टखल संखासुर औतार॥
कर्मचारि जुग धर्मलखु ज्ञानजग्गिअरुपूज।
कलिजुगकर्मसोनामनिजसालिकरामसोबूझ १८३॥
चौ०दयानन्द संखासुर जानी * कीन्ह्यों धर्म परापर हानी॥
सब जग आँखी वेद पुराना * जैसे भानु देवस भगवाना॥
सो संखासुर संकैं खावा * जैसे राहु सुर्ज उर लावा॥
उरगहु मच्छ भयो औतारा * संका संखा मन मछ तारा॥
जिमिमछरी उर प्रघटभयोहरि * संखासुरमास्योजगको अरि॥
तिमि मन मींननाम मछ प्रगटे * हिर्दयउदधि संकासुरफटके॥
दइत मारिलै वेद पुराना * सब जगदीन प्रकाससमाना॥
वेद पाय खुलिगा सब भेदू * जिमिरबि प्रघट भये तमखेदू॥
दो० गयो भूत भ्रम हिर्दय सब खुलिगे कर्म केवार।
जीवहिर्दय आनंदभै निकरेसकलदुवार १८४॥
चौ०आपनरूपचीन्हिसबकाहू * बुझिगैहिर्दयअनलभवदाहू॥
संका मरि जिउ भयो असंका * राम नाम सूझ्यो उर अंका॥
गयभ्रमसकलअधमअँधियारी* भानु प्रातप द्रिस्टि भै भारी॥
गय कलि गुण तमसंका भारी * सतजुगब्रितिचलिभैनरनारी॥
इतिनिरगुणजसनिजउरमाहीं * नाम मच्छ प्रघट्यो मन पाहीं॥

इति श्रीसतसंगसागरेमानसेआनन्दकन्देब्रह्मचरितेनिरगुण
संखासुरअवतारेमच्छजन्मेसंखासुरबधवेदप्रासेका
बिन्नजसेबरणननामनौमोदसोअध्याय १६॥

---

संखासुरबध कथा॥

चौ० अवसरगुनजसकहौंबिचारी* जस अगरीमतिअहैहमारी॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चारिउ वेद खाय संखासुर * अपना बसै उदद्धी सदाँ उर॥
कीन्हेंसि सतजुग भिस्टजहाना * जबते हरिगे वेद पुराना॥
मनमानी लागे सब कारन * सतजुगभयो पाप औतारन॥
कर्म धर्म उठिगै मरजादा * सब जिउकरै लागि बकबाद॥
नहिं मानैं कोउ ब्रह्मण साधू *जिउमनमृगसबखलभैब्याधू॥
जसकलितससतजुगहोयगयऊ *जेहिछिनसंखासुरखलभयऊ॥
देखिलेउ सब कलिके धरमा * तस संखासतजुगकरिकरमा॥
कहँ लगि कहौं पाप अधिकारी * जबते हरिगे श्रुति जगचारी॥
तबतेहिछिनजोकोउरहेसज्जन * जे सरस्वती करैं नितमज्जन॥
ते जस दुखी भयो संसारा * अस नाहीं भा कोउ संसारा॥
तिन अपने मन जुक्तिबिचारी * दीनबन्धु हैं सदाँ खरारी॥
का सुनिहैं नहिं मोरि पुकारा *तीनि लोक ब्यापक करतारा॥
असबिचारकरि अस्तुतिठानी * लाग्यो करन वेद बर बानी॥

छं० लाग्यो करन सोइ सुजस अस्तुति वेदबचन बिचारिकैं।
ब्यापक चराचर आतमा परमातमा उर धारिकैं॥
जै हरण दुख निज दास के सब आस के पुरवनवले।
संखसुर दै कस्ट नस्ट भय भिस्ट जग श्रुति गय चले॥
जय कच्छ मच्छ करौ संखसुर हमआतमा दुख पावहीं।
तुम्हरे धरे अवतार बिन खल संखसुर को मारहीं॥

सो० सुनि अस्तुतिअसदास भइबाणीआकासउर।
सब हरिहौंमैंत्रास अभय होउ तुमसकलसुर॥

दो० दै देवन उपदेस अस ब्रह्मरूप भगवान।
कौलागि प्रभुजतन वह दइत नास कल्यान॥
एकमच्छरहै उदधिमा तेहि राघव जग नाम।
एकसमय गा संखसुर कीन बिखम संग्राम॥
राघो प्रभुके दास रहैं तन मन धन दै राम।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ताहिहिर्दयनिकरेप्रभू असुर मारि दै धाम १८७॥

चौ० पेटुफारि कीन्ह्यों दुइपल्ला * माऱ्यो असुर भयो जगहल्ला॥
दहिना अंग लीन भगवाना * विजयहेत जग जीतसुजाना॥
ताके भयो संख दुइ धारा * यक माया यक ब्रह्म बिचारा॥
जै जै कार भई संसारी * बरसैं देव सुमन सब भारी॥
सतजुग धर्म चले संसारा * जबते वेद लाये करतारा॥
जबते मच्छरूप धरि मारा * तबते खुलिगे ब्रह्म केवारा॥
जै जै कार भयो तिहुँलोका * गयोभरम जिउ भयोअसोका॥
जस सतजुग प्रथमै रहैभावा * मच्छक्रिपा सबहिन तसपावा॥

दो० सकल नारिनर मच्छगुन गावैं सतजुग माहिं।
मोक मोह सन्देह भ्रम सपनेउँ चिन्तानाहिं॥
देखि ज्ञानकर रूपजग माया करै झप्याट।
चूकिजाय जो दास जग माया पकरै फ्याँट॥
वदर उदधि मन मीनहै ताहि फारि करतार।
संखासुरकेहेतलगि आतमनम औतार १६०॥
तीनिलोक आनन्द दै प्रभु भै अंतरध्यान।
सुरअस्तुति दंडवतिकरि जैति मत्स भगवान॥
सुनैं मच्छ जस नारिनर ते पावैं सुख धाम।
धरिबिश्वासबिचारकरिहिर्दयमसालिकराम १६२

इति श्रीसतसंगसागरेमानसेआनन्दकन्देब्रह्मचरितेमत्स्यअवतारे
संखासुरबधेवेदप्राप्तेसरगुणजसेवरणन
नामबीसवांअध्याय २०॥

---

वाराहकथा॥

चौ० अपरकथासुनुसुमतिसुआगर * जेहिबिधिभैबराहसुखसागर
वहौं बराह कथा सुखदाई * हरिजनहित सुन्दरि मतिभाई॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बिमल बिराग सांति पददेनी * मन बुधिचित अपनैं लैलेनी॥
मच्छ प्रताप गयो दुख भारी * कुछुदिन अनँद चली संसारी॥
फिरिरसरस सोख्यो सबपानी * तिमिजगसकलमहत्मानबानी॥
जैसे दर्बि परी महि जाई * तेहि ऊपर परै छार उड़ाई॥
तैसे महँ पुरसन की बानी * माय छार परि परीं छिपानी॥
कुछुदिन बादि गयो वहमूँदी * खुली गै दर्बि परीं जब बूँदी॥
कोउतहँपहुँच्यो जायसुजाना * पायो दर्बि विमल वर ज्ञाना॥
छिपीदर्बि परिगै निजहाथा * तब तेहिं धरा राम पद माथा॥
बूँदी सतगुरु बचन बिचारी * ज्ञानदर्बि सुनुसुमति सुनारी॥
गयो दलिद्र पाप अधिकारी * सब जन्मन के कर्ज उधारी॥
कोउ जौंहरी हाथ गा हीरा * कीन्ह्यों पारिखि धारिसरीरा॥
जग्त नास सब मरतै जाई * देंयँ पुरानैं पता सुनाई॥
सो पुरान माया परिछारा * हीरा नाम तोपि संसारा॥

दो॰ हीराहाथे सुजन गा करिपारिख तेहिं मोल।
परस्वारथमालागवहु सज्जनकरैं कलोल १६३॥
सन्तधेनुसुर दीन हित श्रुतिपुराण हित जानि।
और कोऊ इच्छया जेही मिलैं हमें भगवान॥
यतनेन का सब हितभयो हीरा पावत ज्ञान।
दइतनहेत कलेसभै जहांलगे अभिमान १६५॥

चौ॰ यकहीरा दुइदासजहाना * एकदास यक दइत प्रमाना॥
दुइमा जेहि के हाथे लागी * सो तसभयो जग्त माभागी॥
दास हाथ तब दइत दुखारी * दइत हाथ तब दासन मारी॥
सकल सुरन का डारै बाँधी * जगमा चलै तेजजनु आँधी॥
सकल धर्म तरु देय उखारी * येहिबिधिसुनुअगरीमतिनारी॥
जो गा दइत निसाचर हाथा * तबउइ सब जग करैंअनाथा॥
वहिबल खँईचैं सक्ति जहाना * फिरि लै दंड करैं अभिमाना॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पुनितेहिछिन सतजुगके माहीं * वह मणि हरन्न्याच्छकेपाहीं॥

दो० सुनौं बेवस्था तेहि समय जस परिगै संसार।
सुनु अगरी मति कानदै प्रघट दइत औतार॥
हरनाकुस हरन्न्याछदोउ ईआहींसगिभाय।
दोवारपालजयविजयहरि आपसोमुनिकरपाय १९७

चौ० तेहिहितभयोदइतखलआई* जिनजगमाध्रमबेलिउठाई॥
हरन्न्याछ सोइ कथा पुरानी * वेदसारसुनु सुमति भवानी॥
हरन्न्याछ तन अस बलभारी *सो बरणौंजसबिमलबिचारी॥
मणिबल लइगा धरनिउठाई * लै पताल मा राखेसि जाई॥
गुदरी अस लपेटि सिरहाने *सब चरअचरजीउअकुलाने॥
कहैं सकलहा कच्छ सो मच्छा *कीन दइत खल हमैंअकच्छा॥
भई सुमति ब्याकुल संसारा * सूझन आपन हाथ पसारा॥
हरन्न्याछ करि हानि जहाना * हरिलइगामति धीरजज्ञाना॥
हानि हरन्न्यछ धीरज धरनी *धरेसि पतालपता नहिंकरनी॥
की करनी जस कीन अपारा *तस फल पइबे हम संसारा॥
हानि देखि धीरज तन भागा *को धीरज धरै बिनुअनुरागा॥
हानि हरेव धीरज संसारा * भयोहिर्दयसुरबेकलअपारा॥
बिलखैं इन्द्री सकल अनाथा * हाय राम कहि कूटैं माथा॥
हरन्न्याछ धरनी जस लइगा * धीरजहर्यो हानिदुखदइगा॥
धीरज धरनी हरे सब हारे *कोउसज्जनअसहिर्दय बिचारे
राम भक्त कोउ रहे सुजाना *तिनधीरजधरिअस्तुतिठाना॥

छं० जैजै सुखसागर ब्रह्म उजागर धीरज धरनि सो दइता।
हम देव दुखारी सरण पुकारीधरेसि पताल सो सँइता॥
सब घटबासी जै अभिनासी करौ सहाँय हमारी।
आत्मा रामा अपर न ध्याना हरौ कलेस खरारी॥
धीरज धरनी हरिगै करनी भा कलेस मन माहीं।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जैजै प्रभु मच्छा दइत मलिच्छा दै कलेस सुख नाहीं॥
भिस्टा कोटा सब बिधि खोंटा जोर चलै नहिं काहू।
जै २ श्री रामा सालिक रामा हरौ भार दुख दाहू ५॥
दो॰ इन्द्री सुरन पुकार सुनि भयो बराह बिबेक।
हरन्न्याछ बधधरनिलै राख्योसब सुर टेंक॥
धीरज धरनी लाय प्रभु दीन सुरनका आय।
तीनहुँलोक अनन्दभइ जगकैटरी बलाय १९९॥
चौ॰ हरन्न्याछबधिहरिसोइसोका॥जेहिबलभटकाँपैतिहुँलोका॥
अस्तुति करैं देव मुनि भारी ॥ मार्‍यो दइत सोर भय भारी॥
बरखैं फूल सुमन बहु माला ॥ जै २ धुनि चहुँओर कृपाला॥
जै २ कमठ मीन बाराहा ॥ कीन्ह्यों सकलसुरन निरबाहा॥
हरन्न्याछ मार्‍यो अघरासी ॥ काट्यो सकल सुरन कै फाँसी॥
हरन्न्याछ हनि हानि कृपाला ॥ लायो धीरज धरनि दयाला॥
तीनहुँ लोक भयो आनन्दा ॥ कटिगे सकल कालकेफन्दा॥
रूप बिबेक बराह नाम निज ॥ मार्‍योहानिहरन्न्यछदुखबिज॥
भई प्रकास सुमति संसारा ॥ नर नारी उर करैं बिचारा॥
धन्नि बिबेक वराह बिसाला ॥ जिनमार्‍यो जगहानिकराला॥
दो॰ जै बराह धुनिजगतमा जीव चराचर माहिं।
करिउपायखलमार्‍यो निरगुणजसईआहिं २००॥
हरन्न्याछ लखु हानिका धरणीधीरजजानि।
भिस्टकरमभिस्टालखो सुनुउरसुमतिभवानि॥
इन्द्री सुरन सनाथकरि चली सुमतिसंसार।
सुनैं सकल नरनारिजे भये बिबेकऔतार २०२॥

इति श्रीसतसंगसागरेमानसेआनन्दकन्देब्रह्मचरितेनिर्गुण
बाराहजसेहरन्न्याछबधेधरणिप्रासेबरणन
नामबीसयकोअध्याय २१॥



CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चौ॰ अबसरगुणजसकहौंबखानी * सुनौंप्रघटमतिसुमतिभवानी।
जबते हरन्याछ महि लइगा * जीवसकलमहितनदुखदइगा॥
बिस्टा कोट बनायेसि भारी * भागि चले महिके सुरझारी॥
तेहिते जोर चलत नहि काहू * बिनप्रभुको दुखहरिहै दाहू॥
ज्ञान ध्यान धीरज धम भागे * हरन्याछ दै कस्ट अभागे॥
सकल सुरन भा कस्टबिशेखी * राम रूप उर परै न देखी॥
सकल देवता छूति डेराहीं * बिस्टा जोर चलत कुछुनाहीं॥
जे सज्जन कोउ रहे जहाना * तिनअपनेमनअसअनुमाना॥
दीनबन्धु बिनको दुखहरि है * हरन्याछ मलिच्छको मरि है॥
असबिचारकरिअस्तुतिठाना * वेद सार बिचार भगवाना॥

छं॰ वेद सार बिचार ब्रह्म अपार दुख भव भंजनं।
आनन्दकन्द हरुफन्दमन्द मतिदेतदुखजिउदारुनं॥
तुमबिनकृपालको जालकाल करालखल्ल मतिमारिहै।
हरन्याछखलदइतमहिले सँइतयेहिकोटकोपैउबारिहैं॥
तुम ब्रह्म व्यापक चराचर अस वेद सार बतावहीं।
सोइ जीव सबदुख फाँसिपरे दुखसिन्धुमाखलडारहीं॥
सुरसन्तगोद्विजधेनुदुखलखि हमसकलजन दुखमापरे।
ऊबार करौ अबदीनबन्धु हम देव दुख आगी जरे ६॥

दो॰ दीनबन्धु सुनि दीन पद भई अभयनभबानि।
मैं तुम्हरे लगि हेतजग तनधरि मरिहौं हानि॥
असबिचारकरि ब्रह्मउर तेहिछिन भयोबराह।
वहीबिस्ट का टारिकै कीन्ह्यों दइत अहार॥
लायो धरनि छोड़ायकै दीनजग्त फइलाय।
सब सुर महा अनन्दभये जगकै टरीबलाय॥
असधरणी बीरन धरी मनहुँ गोबर्धन केस्न।
सब देवन अस्तुतिकरी प्रभुके कीन्ह्योद्रस्न १०६॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चौ० जै बराह धुनि भै चहुँ ओरा * भलमास्यो यहु खल अघघोरा॥
तुम बिन असको करै सहाँई *सुनि अस्तुति असदीनगोसाईं॥
जै बराह जस गावैं घर घर * फूले कँवल मनहुँ वनसरसर॥
यहिबिधिजब जग धर्मबिनासा * होंय औतार हेत निजदासा॥
मारैं दइत सुजस फइलावैं * सुनि २ सुजनमहाँ सुखपावैं॥
यहि बिधि सुखदै अंतरध्याना * भयो बराह समय भगवाना॥
जोसुनि कथा प्रेम नर नारी * प्रभु बराह जस सबभवहारी॥
ज्ञान ध्यान तेहि मिलै विवेका * धीरज मिलै रहै जग टेका॥

दो० निजमतिसारिस बराहजस सुनु अगरी मतिएह।
रामनाम भे सकल दुख नासैं करौ सनेह॥
हीरा रामक नाम है सदाँ रहै अनमोल।
यहसज्जनकोउजानहींसालिकरामकलोल २०८॥

इति श्रीसतसंगसागरेमानसेआनन्दकन्देब्रह्मचरितेवाराहसगुणजसेसुरआनन्देहरन्याछवधधरणिप्राप्तेबरणननामबीसद्वितीयोऽध्याय २२॥

## नृसिंह कथा॥

चौ० अपरबिचाररामजसबानी *कहौं कथासो बिमलबखानी॥
जेहिबिधि नरसिंहभये औतारा * राम नाम प्रघट्यो संसारा॥
सो सब कथा कहौं सुखदाई * परम बिचित्र प्रबन्ध बनाई॥
वेद पुरान सार परमारथ * सुनि२कथादासहोंयस्वारथ॥
ब्रह्मा ग्राम नाम जोइ सारा * सो अब प्रघट होंय संसारा॥
गुप्त भेद यह कोउ नहिं जानैं * अपनेहिदर्यसोमनअनुमानैं॥
करि अनुमानभजन सबकरहीं * रामनजान्यो निजउरघरहीं॥
सो अब कथा कहौं मतिअगरी * रामनामजग महिमा पसरी॥

दो० रामनामजोहिर्दय निज व्यापकसकलजहान।
कहौंकथा परमानश्रुति नारदादिउरज्ञान २०९॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चौ० एकसमय नारद करबीना * नितनयेहरिगुणकरतप्रवीना ॥
करत नाद उर लिये खरारी * तेहिछिनबनमिलिएककुम्हारी॥
आँवाँहित कंडा गइ बीनन * नारद देखि भई मतिदीनन ॥
साधुरूप सुन्दर सुखकारी * कुम्हरी सीस चरणमाधारी ॥
पुनि नारद पूंछा तेहिं हाला * तुमबनको फिरौसुरतिबेहाला॥
कहात्रिय हमहैं जाति कुम्हारी * मृतिकानेंहसो ब्रित्ति हमारी ॥
बेंचि खाँन भाजन संसारा * अउरनजाननभजन बिचारा ॥
तब नारद बोले मुसकाई * अबगतिकी कछुसुधिहै माई ॥
कहकुम्हारि अबगतिका दासा * तबनारद असबचनप्रकासा ॥

दो० सुनु कुम्हरी असबात मम रामनाम संसार।
तेहिकाजानौंहिर्दयनिज तब उतरौभवपार २१०॥

चौ० तुमभाजनगढ़ौतुम्हेंकैंगढ़ा * जेहिबलजग्तचलैसबलढ़ा ॥
जैं तुम्हें गढ़ा ताहि का जानौं * जग्तचलैजेहिबलतेहिंमानौं॥
यतनी बात जानि जो लेहू * सोइ अबगति है रामसनेहू ॥
कह कुम्हारि उइ कहँ हैं रामा * जिनहमैंप्रघटपरमसुखधामा॥
जिन बल लढ़ा चलै संसारा * यटके पर जो करैं उबारा ॥
तेहि अबगतिकर भेदबिचारी * कहौसत्ति मोहिं दास खरारी ॥
सुनि कुम्हारिके बचन अमोले * उरबिचार नारदमुनि बोले ॥
लागे कहन ज्ञान मुनि साँचा * राम रहस जो तिहुँपुर माँचा॥
ब्रह्मग्राम नाम जोइ रामा * देन लागि उपदेस समाना ॥
सुनु कुम्हारिजगसिरजनहारा * आतम ब्रह्म हिर्दय संसारा ॥
सब के घट सब सिरजनहारा * तीनहुँलोक हिर्दय अबतारा॥
कढ़ैं बीजते तरु जग नाना * जीउरूप होय देहँ समाना ॥
भीतररचैं सृस्टि अभिनासी * ऊपर माया अपनैं फाँसी ॥

दो० येहि बिधि जानौं ब्रह्मउर जैं प्रघटा संसार।
जे जानैं ते मानहीं सज्जनविमल बिचार २११॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चौ० कपिअरुकीरफँसेजेहिभांती * बिलखतफिरैंदेवसअरुराती ॥
घट घट राम बोलि जो रहेऊ * तेहिबललढ़ाजग्तयहुचलेहू ॥
जोइ सिरजै वहै पालै मारै * आपै आप ख्याल सब कारै ॥
नट बाजी गढ़ खेल जहाना * अन्तर सति ऊपर भ्रमसाना ॥
सत्ति राम येहि विधि उरमाहीं * बिनु देखे प्रतीति उर नाहीं ॥
तेहि कोउजगमा चीन्हँतनाहीं * तीनौं लोक चीज़ निज पाहीं ॥
ताहिविना सबजग बिलखाना * सकलहिर्दयब्यापकभगवाना ॥
रामभजन बिनु अबगति नाहीं * देखु कुम्हारी निज मनमाहीं ॥
जस २ नारद बचन प्रकासा * तस २ धरै कुम्हारि बिश्वासा ॥
नारदमुनि बताय अस ज्ञाना * तेहिछिन तहँभयेअंतरध्याना ॥
सुनि नारदके बचन पुराना * तबकुम्हारिअसमनअनुमाना ॥
मित्थ्या साधुबचन नहिं होई * कोइ दिन ज्ञान देखिहौं सोई ॥
अस उर ज्ञान चली घर माहीं * देखे बिनु नहिं मन थिर ताहीं ॥
पहुँची धाम हिर्दयमाचिन्ता * कबदेखिहौं कससाथी दिन्ता ॥

दो० कुछुदिन सोचबिचार गय भयोप्रघट प्रहलाद।
रामनाम ई खोलि हैं जग कै कटै बिखाद ॥
नारद ज्ञान कुम्हारि दै रामनाम श्रुतिसार।
कुछुकुम्हारिऔकातिनहिं जोजगकरतिपसार ॥
निजदासनके बचनहित प्रगट्यो जनप्रहलाद।
सोइ अबकहौं प्रसंगसब आगरि अनहद नाद ॥
यक दिन अँवसर आयगा जो नारद दै ज्ञान।
यक मंजरि बच्चाधरे आँवाँ बीच प्रमान २१५ ॥

चौ० लागिधरैआँवाँबिचभाजन * खेलतगयेप्रहलादतहाँजन ॥
देखि मंजरी सुत नृप ताता * कह प्रहलाद कुम्हारीतेबाता ॥
केहि कारन मंजरि जिउ जारी * सत्तिबचनकहौमोहिंकुम्हारी ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तब कुम्हारि असबचनबखाना * इनकै रच्छया करैं भगवाना ॥
कह प्रहलाद कई ना मारि हैं * बरत अगिनिईककसउबरि हैं ॥
की कुछु नसा खाय बौरानी * जो जिउ कीन्हें डारसि हानी ॥
कह कुम्हारि सुत सुनौंबिचारा * सिरजन पालन मारनहारा ॥
इनका राम इन्हें मा जानी * घट२ राम बोलि रहे बानी ॥
आपन काल आप मा जाना * जिमिलकरीघुनुखायजहाना ॥
सबफल सबतन जिमिपरैंकीरा * कोटिन प्रघट होंय तन पीरा ॥
जिमि उर पैदा सृस्टि जहाना * बीजा मद्धि बसे भगवाना ॥
आपै राम रूप संसारा * को केहि मारैं कौन उबारा ॥
आपै आगी आपै बच्चा * आपै झूँठा आपै सच्चा ॥

दो० सुना कुम्हारी ज्ञान अस तब बोले प्रहलाद।
जोयहुज्ञान तुम्हारसति तौलखि तजौंबिखाद ॥
जेहिदिनआँबाँखोलितैं तेहिदिन लिहुसुबुलाय।
जोजिउ जियतै पाइहौं तो तुम्हें गुरू बनाय ॥
नाहिंतो लेहौं गड़ायमहि जिउ जियतै तैंबारि।
असकहिगैप्रहलादघरअदभुतकलानिहारि२१८ ॥

चौ० हियँाकुम्हारीमनउनमाना * यहुका कहिगे सन्तसुजाना ॥
गा मोफतमा जान हमारा * जो जिउमरे अगिनिकीधारा ॥
यह बिचार जबहीं उर आई * ऊब लहरि मानौं दरियाई ॥
जो कुछु दुख जग ब्याकुलहोई * स्वाद राम पावै जग सोई ॥
भा कुम्हारिब्याकुलमनजाना * करनलागिअस्तुतिभगवाना ॥
जय भगवान सकलघट बासी * करौ उबारजीव नहीं फाँसी ॥
अगिनिरूप तुम आत्मारामा * क्रोध दासहित सीतलछाँमा ॥
तुम्हरी दाढ़तरे संसारा * चहौ जेहि मारौ चहौ उबारा ॥
लहुरा अगिनि जठर करुनेहू * तुम सरगुन उइ निरगुनगेहू ॥
तुम्हमा उइ उनमा तुम जाहू * दोउजनमिलिजगसुजससराहू ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तुम्हरै नाम चलै संसारा * नाहिंतो बुड़ि है मौंजीधारा ॥
दो॰ दीनबन्धु ई बचन मम करो सत्ति उर राम।
नहीं प्रान प्रहलाद लेहैं सति२ सालिकराम२१६॥
चौ॰ बासुदेव तुम रामैं रूपा * राम ब्रह्म पुर नाम अनूपा ॥
जठरा रा लहुरा माकारा * हम दासी पाई संसारा ॥
बूड़त वेगि बाँह गहि लीजो * गुरुके बचन सत्ति करदीजो ॥
नहिं मम प्रान दास मरजादा * आँवाँ खुलत लेहैं प्रहलादा ॥
अस अस्तुति कीह्यो मनमाहीं * मन रमिगयो राम के पाहीं ॥
तनमनधनघर खबरिभुलाई * कुछुघरि अनँदसो कुछुबिलखाई॥
जब समुझै निजराम सुभाऊ * उमगै प्रेम हिर्दय गुरुभाऊ ॥
जब कुछु दुबिधा मनमा आवै * सोना होय जो जिउजरिआवै॥
गय दिनतीनि बीतियेहिंभाँती * कुछु घरि हर्ख सोक बिलखाती ॥
दो॰ जबतकनहिंबच्चालखै तबतक मन नहिं साँति।
उतरीपरीकमानजनु तिमितनुउतरीक्राँति २२०॥
चौ॰ तबबोलायपठयोप्रहलादा * आवउ देखन राम प्रसादा ॥
आँवाँ खोलन लागि कुम्हारी * दूध पियत बच्चा मंजारी ॥
कह प्रहलादै याखउ ताता * अब मम फुरनरामकै बाता ॥
मंजरि सुत पियैं छीर अनन्दा * लखिप्रहलाद भयोपरसन्दा ॥
पर्‍यो कुम्हारी चरनन माहीं * अबमैं मातु उरिनतोहिंनाहीं॥
ताड़क मंत्र हमैं तुम दीन्हा * तुम्हरी कृपाराम हम चीन्हा॥
निरभय भयन तुम्हारी दाया * ब्यापक ब्रह्म राम हम पाया॥
तब कुम्हारि बोली सुनु ताता * यह तव पिता न जानैं बाता ॥
गुप्त भेद राख्यो उर माहीं * जेहिबल पिता न जानैं पाहीं॥
पुनि प्रहलाद कहा सुनु माता * रामसहाँय तो काकरिताता ॥
अस कहि करि गुरुदंडप्रनामा * करैलागि अस्तुति बिश्रामा ॥
छं॰ जयति गुरु ब्यापक जहान समान पदउरबन्दनं।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

आनन्दकन्ददे ब्रह्मनन्द ममहिर्दयकरि मलिचंदनं॥
असदीनबन्धुको लोक त्रेइ जो काटि भौ भ्रमफंदनं।
प्रेम धार प्रचार मन बहि कीन मोहिं सुख चंदनं॥
कूम्हारिनहिं तुम सरस्वती पतनीसदाँ उर ब्रह्मनं।
कूम्हार ब्रह्मअनन्दकन्द जगप्रघटि भाजनभ्रम्मनं॥
सोइ आजुमैंलखिप्रघटगुरुउरुसकलब्यापकरामनं।
असकरतअस्तुतिदाससालिकरामसबमनकामनं७॥

दो॰ करिअस्तुतिप्रहलादगय निजगुरुपदसिरनाय।
महाअनन्दसो ब्रह्मपद भवभ्रम तज्योबलाय॥
सुनैं नारि नर यह कथा जन प्रहलाद के गुरू।
राम उपासन होयउर ज्ञानभक्तिटिकिउरू २२२॥

इतिश्रीसतसंगसागरेमानसे आनन्दकन्देब्रह्मचरितेकुम्हारीनारदउसम्बादे ज्ञानप्राप्तेरामनामेप्रघटेप्रहलादोभ्रमनास्तेमंजरीसुतबचेप्रहलादउ गुरूकरतेकुम्हीरीबरणननामत्रयबीसोअध्याय २३॥

प्रहलादज्ञान प्रगटकथा॥

चौ॰ चलेप्रहलादरटतमुखरामा * कहतराममुखगयनिजधामा॥
जननी कहत राम मुख देखा * काल हमार सो पतिकररेखा॥
कह सुत ते यहुका सिखिआये * काल बेसहि अपनेहितलाये॥
सुनि हैं पिता राम कर नामा * पठवैं तुम्हें काल के धामा॥
कह प्रहलाद सुनौं मम माता * सामरस्ति यह अहैंबिधाता॥
चहै जेहि मारैं चहै जियावैं * चहै नरक चहै सारेग पठावैं॥
हमरे पिताम यहु बल नहीं * चहैं जेहि मारैं चहै जियाहीं॥
यह बिचारि जननी तजुसोका * रामसेवाय न कोउतिहुँलोका॥

दो॰ कह जननी प्रहलाद सुनु पिता राम ते बैर।
तिनकेढुसमनतुम जपौ करैं कौन अबखैर॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रामनाम नरसिंह लखु पितु तुम्हारि अहँकार।
ई दोउ जनते बैर है यकु यकु करैं अहार॥
रामनाम अहंकार दोउ रहैं न एकै धाम।
जो कोउ राखै एक घर दुइमा एक संग्राम॥
नित अहार श्रीरामके जननी पिता हमारि।
हमका का उइ मारिहैं अपनैं जइहैं मारि २२६॥

चौ॰ कहजननीसुतभयोकुलघालक * अइहैंपिताकदइहैंखालक॥
यतने पर आयो खल पापी * अधम दइत देवन परतापी॥
यहाँधुनिलागिराम प्रहलादा * सूलबचन सुनि भयोबिखादा॥
कह त्रियते सुत का तव बानी * मने करौ नहिं होय जिउहानी॥
मम दुसमनकर नामसँचारा * करिहौं येहिके प्रान अहारा॥
सुनि प्रहलाद कहा मुसकाई * तुम खइहौ मोहिं तुम्हैंकोखाई॥
काहेकपिताअधमअभिमाना * राम बैर जइहैं तव प्राना॥
सुनि सुत वचनकठोर कराला * लै कृपान कहकर येहिकाला॥
लै जननी सुत भीतर घुसरी * मारि केवारा दीन्हेसि कोठरी॥
फिरिपतिचरनधरेसिअकुलाई * कहेसिबचनमनपतिसमुझाई॥
पंच बरस मम बाल अदाना * यहुका जानैं अपन बिराना॥
कहुँ बालकसँगखेलतअदाना * परिगा होइ नाम कहुँ काना॥

दो॰ अबखेलन नहिं जायदेहौं पांड़े भोर बोलाय।
चटसारैयहि पढ़ै हित भोंरही देवपठाय २२७॥

चौ॰ भयोभोरजाग्यो अभिमानी * पाँड़े बोलि कह्योअसबानी॥
लै सुत मम चटसारै जाऊ * मम कुल बिद्या याहि पढ़ाऊ॥
खेलत बिगरि गयो सुत मोरा * दुसमन नामलेत उठि भोरा॥
जो पढ़ाय लइहौ मम पासा * करिहौंतुम्हैंअलखसुखबासा॥
कह पाँड़े यहि देहौं पढ़ाई * जेहिबिधिआपहुकुमसुखदाई॥



CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हरनाकुस खल का सिर नाई * लै प्रहलाद चल्यो हरखाई ॥
मनमा महा भई आनन्दा * अब कटिहैं दलिद्र ममफन्दा ॥
बालक जहाँ पढ़ैं बकवादा * तहँ पाँड़े लइगे प्रहलादा ॥
यक पाटी दीन्हेंउ कर माहीं * निजकुलबिद्यापढ़ौममपाहीं ॥
दो॰ अपनबाप जो छोड़िकै अउर बाप भजिकोय।
सुनु प्रहलाद सो दोगला पाँड़े कह्यो निचोय ॥
पाँड़े ते प्रहलाद कह जो सबकर पितु होय।
तेहिकेभजेनदोसकछु छोड़िहिर्दयभ्रमदोय २२९॥
होय रिस पाँड़े नयन तरेरे * सुनुखल दुस्ट काल तोहिंघेरे ॥
असकहि कक्काकर लिखिदीना * जन प्रहलादकाननहिंकीना ॥
लाग्यो राम लिखन सब पाटीं * तब पाँड़े लीन्हेंउ कर साँटी ॥
यहुका लिखसि दुस्टका नामा * कह प्रहलाद लिखौं मैं रामा ॥
जें तुमका सिरजा है पाँड़े * करै सहाँय सदाँ जो गाढ़े ॥
सोइ मम राम काम सब दायक * तीनिलोकचरअचरसहाँयक ॥
जपैं गनेस महेस सेस जेहि *असतजिनामलिखौंजगमाकेहि॥
राम नाम लै मन मति छाकी * अब कुछु रहा पढ़ै का बाकी ॥
राम नाम जानैं के कारन * सब बिद्या आईं संसारन ॥
दो॰ रामनाम जान्यो नहीं काभयो बिद्या पढ़े।
निजआतमका खोइकै कालधार नित चढ़े २३०॥
चौ॰ बिद्यापढ़े रामनहिंजाना * जस वहि पढ़ेपढ़े बिनु ज्ञाना ॥
भोजनकरि होइगै फटकारा * जस कियेभोजनबिनाअहारा ॥
येहिबिधि चहै पढ़ि बेदपुराना * पढ़िभूलै फटकार समाना ॥
रामनामतजिअउरनलिखिहौं * कहौंसत्ति पाँड़े इति हठिहौं ॥
पाँड़े कहा काल नजिकाना * तबहमसत्तिप्रघट अबजाना ॥
कह प्रहलादसोमनमुसक्याई * धौंकेहिकाल रह्योनजिक्याई ॥
धौं हमार धौं तुम्हरे राजा * दुइमा यकका होय अकाजा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

आयों काल सत्ति सुनु पाँड़े * सुत पितुबी चलिये करखाँड़े ॥
यह सुनि पाँड़ेगा मन हारी * बिधि बनाय सबबात बेगारी ॥
जो मानति नृप बालकबानी * तौ होतीं दालिद्र ममहानी ॥

दो॰ लियो संग प्रहलादको पाँड़े चल्यो लेवाय।
चलौ पिताका खाव तुम धौं तुमका वहुखाय ॥
संग लिये प्रहलाद सुत गे हरनाकुस पास।
पाँड़े सुतके बचन सब नृपते किया प्रकास ॥
मैं यहि सिखवौं भाँतिबहु येहिं नहिंकीन्ह्योंकान।
रामछाँड़ि कुछु ना लिखै कहै आनकी तान ॥
असकहिपाँड़े चलिभयो खलबोलाय जल्लाध।
सौंपदियो प्रहलादका करौ प्रान यहिबाध २३४ ॥

चौ॰ लइगेखलदीन्ह्योंगिरिडारी * नहिंलागीकुछुतातिबयारी ॥
जनप्रहलाद हँसैं प्रभु कनियां * तब जल्लाध भुरानी मुनियां ॥
यहिकर राम सत्ति हम जाना * यहु हरनाकुस लेई प्राना ॥
गिरिते गिरा मरा नहिं भाई * जनु बीचै कोहुँ लीनउठाई ॥
राम उबार कीन निज दासा * फिरिलाये हरनाकुस पासा ॥
गिरि ते डारा सुनहुँ नृपाला * कोउबिधिभयोनयेहिकरकाला ॥
तब हरनाकुस बहुत रिसावा * तुमखल येहिके प्रानबचावा ॥
फिरि दै हुकुमु सौंपु गज जाई * सौंपत माथे लियो चढ़ाई ॥
पुनि जल्लाध भई मन संका * यहुकोउप्रघट्यो बीरअसंका ॥
यहि के सूध काल नहिं जाई * कोटि २ कोउ करैं उपाई ॥

दो॰ फिरिहरनाकुस पासखल लायो जनप्रहलाद।
हाथीमाथेयेहिधस्यो कुछुनहिंभयोबिखाद २३५ ॥

चौ॰ जोनहिंकालटाँगिदेवफाँसी * फाँसिउटूरिदीनअभिनासी ॥
तब जल्लाध दशनतृणदाबी * यहुकोउ प्रघटभयोपरतापी ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

लै आयो हरनाकुस पाहीं * यहि कर कालहोत प्रभुनाहीं ॥
हारिगयेन कोटिन बिधि नाथा * इनका राम है इनके साथा ॥
तब खलआपनि बहिनबोलाई * वह आगी नहिं जरै बरपाई ॥
कह भगनी ते लै सुत गोदा * बइठौ आगिजारि बरचोदा ॥
पुनि होरिखाले आगि समानी * अपनैं जरी दास नहिं हानी ॥
यहलीलाखललखि निजआगे * उठारिसाय सो दुस्टअभागे ॥
अब याखौं खल कौन बचावै * केहि बिधिकरिसहाँयको आवै॥
तब खल आपै साथ लेवाई * लै खम्भामा बाँध्यों जाई ॥
अब सुमिरौ कहँ राम तुम्हारा * जोकरि येहि छिनप्रानउबारा ॥
घट २ राम हमार प्रकासा * हम तुम खर्ग खम्भमा बासा ॥
अस सुनिकीन्हेंसि खर्गप्रहारा * राम भयो नरसिंह औतारा ॥
फारि खम्भ खलवदरभिजारी * आँतै लीन्ह्यों पहिरि खरारी ॥

दो० साँझिसमय ना रातिदिन गोदन महीअकास ।
यतरे बीचम फारि उर नरसिंह तेज प्रकास ॥
बार २ ढूंढ़ैं हिर्दय नरसिंह उर के माहिं ।
जंन प्रहलाद कि सरिस सुतउ रहैं धौंअबनाहिं ॥
अस आँतैं सोहैं गरे जिमि तरु अम्बर बेलि ।
बिकटरूप लखि भागसब रहेप्रहलादअकेलि ॥
येहि बिधि अपने दासपर राम सो सदाँ सहाँय ।
सालिकराम ते मंदमति भजैं न मन चितलाय ॥
सोर भई तिहुँ लोकमा आयो सब सुर झारि ।
कोउनजीकनहिं जातहै बंकटरूप खरारि २४० ॥

चौ० सबसुरगय प्रहलादैंपासा *करिअस्तुतिअसबचनप्रकासा॥
प्रघट कीन नरसिंह कराला * तुमहीं मुरछित करौ कृपाला ॥
यह मूरति बंकट संसारा * तीनि लोक येहिते गय हारा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तुम बिन को समरथ येहि काला ❋ तीनिलोक कीन्हेंउँप्रतिपाला ॥
राम नाम करि प्रघट गोसाईं ❋ सहि तनकस्ट बलाय बहाईं ॥
अब कुछु जतनकरो अनुगामी ❋ नरसिंह छिमाकरौममस्वामी ॥
तब प्रहलाद जोरि दोउ हाथा ❋ जै नरसिंह कहि नायो माथा ॥
लागि करन अस्तुतिप्रहलादा ❋ जै मम रामसोहर्यो बिखादा ॥
तुम बिनु को समरथ संसारा ❋ यहि बिधि दासन करै उबारा ॥
पिता मंद मति दइत कराला ❋ यकछिनमाकीन्ह्यौंखलकाला ॥
सदाँ उबार कीन सुर काजू ❋ भा अनंद तिहुँलोक समाजू ॥

छं० अनन्द तीनि लोक करि कराल रूप धारनं ।
सो आतमा अखंड ब्रह्म दइत दुस्टकालनं ॥
पछारि वद्र फारि डारि खंड खंड खंडनं ।
समान सर्व व्यापनं त्रिलोक भूप मंडनं ॥
रमेश अगुण सगुण भूत सूत सर्ब स्वासनं ।
करालरूप तेगि अब कृपाल रूप धारनं ८ ॥

दो०सुनि अस्तुति प्रहलाद की भै नरसिंहसो सांति ।
सालिकरामसो पास गये सकलदेव तजिभ्रांति ॥
जन प्रहलाद के हेत का भै नरसिंह औतार ।
सुनुअगरीमतिबिमलजसनिरगुणपरमबिचार ॥

इति श्रीसतसंगसागरेमानसेआनन्दकन्देब्रह्मचरितेनरसिंहअवतारे प्रहलाददुखबिभंजेदेवहेतअस्तुतिनरसिंहरूपेछिमा करतेबरणननामचतुर्बीसोध्याय २४ ॥

नरसिंहऔतारनिरगुण ॥

चौ० गयोपाससुरअस्तुतिकीन्हा❋ नरसिंहचरननकैरजलीन्हा ॥
भल मार्‍यो यहुदइत कराला ❋ ईकीन्ह्यों तिहुँलोक बेहाला ॥
हम सब सुर यहि के डरमाहीं ❋ राम नाम तव लेन न पाहीं ॥
धनि प्रहलाद दास अवतारा ❋ कीन्ह्योंसकलसुरनउपकारा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

यहु अभिमान सरिस भट भारी ❋ दासन दंड दिहिसि नर नारी॥
राम नाम नरसिंह अवतारा ❋ जन प्रहलाद सुजस बिस्थारा॥
प्रभु माया बस हम सुरभारी ❋ जन प्रहलाद भयो उपकारी॥
जो नहिं होति दास प्रहलादा ❋ तौ हमारि को हरत बिखादा॥
जे नर नरसिंह रूप भयंकर ❋ राम नाम मानस उर संकर॥
राम नाम प्रहलाद निकारा ❋ दैतन कस्ट सुजस बिस्थारा॥
अस को रहे जो लेतै नामा ❋ धरि दिढ़ता मन भय न समाना॥
अस दिढ़ता केहि के मन माहीं ❋ राम नाम लै उर भय नाहीं॥
जै प्रहलाद प्रबल बिस्वासा ❋ सहि तन कस्ट सो नाम प्रकासा॥
हरेव भार धरनी संसारा ❋ दासन दिढ़ता दीन अपारा॥
नहिं कोहु के अस मन बिस्वासा ❋ राम नाम जपे दुख करै नासा॥
इनका देखि बहुत अब करिहैं ❋ कोटि कस्ट भवसागर तरिहैं॥

दो० रामनाम नरसिंह निज हरनाकुस अभिमान।
जपैं दास प्रहलाद ते रहैं सो जगत अमान॥
परबत बेद बिचारियो श्रुति कह जो धरि नाम।
तेहि अभिमान ढकेलिहै बेदते जो जपै राम॥
जिनके नहिं बिस्वास उर गिरे बेद ते चूर।
दै कलेस अभिमान जब रह्यो न रामहजूर २४५॥

चौ० जो कोउ दास सरिस प्रहलादा ❋ तेनहिं गिरे गिरि बेद बिखादा॥
हाथी मस्त सदाँ मन जाना ❋ ताहि पीठि पर चढ़ै अभिमाना॥
ताहि सौंपि प्रहलादै दीना ❋ तैं अपने सिर पर धरि लीना॥
संकठ माना मन कबों साथी ❋ दिढ़ता दास सीस मन हाथी॥
तीनहुँ गुन माया चौरासी ❋ तेहि मा टाँगि फाँसि दै फाँसी॥
तीनहुँ गुण अभिमान कि फाँसी ❋ टूटै तौ जो दया अभिनासी॥
राम भरोस सुजस प्रहलादा ❋ टूटी फाँसी बिखम बिखादा॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

होनी होरिखा क्रोधै आगी * लै बैठी बालक अनुरागी ॥
होनी क्रोध अगिनि भै नासी * दाससांतिसीतलअभिनासी ॥

दो॰ यतनी ब्याधा दास पर चढ़ी रहैं नितसीस।
राम कृपासो ऊबरैं देयँ ज्ञान बकसीस २४६ ॥

चौ॰ यतनैंदै कलेसअभिमाना * फिरिखम्भामा बाँधेसिज्ञाना ॥
बाँधि खम्भ बेखबरि जहाना * कालकृपानलै कहुकहँ ज्ञाना ॥
काल देखि सब ज्ञान भुलाहीं * रहै धीर बिररे मन माहीं ॥
सो प्रभुदास भूल मा बाँधी * काल निकारि ठाढ़ अपराधी ॥
सुमिरौ राम कहां अब दादा * तब हँसिकहा बचनप्रहलादा ॥
राम हमार सकल घट बासी * हमतुमकालसो भूल बिलासी ॥
यतने पर हनि कर्म्म कृपाना * प्रघटभयो नरसिंह सो ज्ञाना ॥
नाम ज्ञान मार्यो अभिमाना * वदर फारि जै कृपानिधाना ॥
जै जै कार भई जग दासा * असअस्तुति सबदेवप्रकासा ॥
यक नरसिंह जगभै औतारा * ताहि चरित्र जानै संसारा ॥
यक ब्रहमंड हिर्दय सुभजानी * यह कह्यों कथाजानिहैं ज्ञानी ॥

दो॰ आँवाँआतमअगिनिजेठ भजनसोभाजनजान।
मति मंजरि बच्चा बचन कहासो कीनप्रमान॥
सरस्वाति जानु कुम्हारि उरहैंतनब्रह्मकुम्हार।
तहाँज्ञानप्रहलादकर उपज्योदास बिचार २४८॥

चौ॰ जेहिबिधिभानरसिंहऔतारा * निरगुनसरगुनकह्योंबिचारा
करिअस्तुतिसुरगयनिजधामा * सालिकराम सोमन बिस्रामा ॥
दै अनन्द सो जन प्रहलादा * तीनिलोक सबहर्योबिखादा ॥
भै नरसिंह सो अन्तर ध्याना * जन प्रहलाद प्रबलभगवाना ॥
कथा सुनैं नरसिंह औतारा * जो नर नारि दास संसारा ॥
मन बंछित इच्छ्या फल पाई * जो यह कथा सुनैं मनलाई ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

धरि बिस्वास सुनैं नर नारी * नरसिंह मन्सा पुरवैं भारी ॥
जस प्रहलाद कह्यो दुखभारी * तसकटिहैं सुनिजोइनरनारी ॥
ज्ञान विवेक बिराग बढ़ावनि * प्रेमसो पंथ भक्तिअनपावनि ॥
भवसागर तरि संसै नाहीं * जो सुनि धरैं दास उर माहीं ॥
नरसिंहजसइतिश्रिहोयगयऊ *आगिलचरितसुनोंजसभयऊ ॥

दो०नरसिंह जस सामाप्त भये सुनु अगरी मति दास।
सालिकरामप्रकासकरि हित जेहिउरबिस्वास २४६ ॥

इति श्रीसतसंगसागरेमानसे आनन्दकन्देब्रह्मचरितेनरसिंहअवतारे
निरगुणसरगुणजसेसकलभ्रमकस्टनास्तेनामपंथेनरसिंह
औतारसामाप्तबरणननामपंचबीसोअध्याय २५ ॥

---

बावनकथा ॥

दो०जस बावन अवतार भये प्रघटयो यहि संसार।
सालिकराम बिचार निज करौं प्रघट ततसार २५० ॥

चौ०यहसबसृस्टिप्रघटिअभिमाना*जहँतकहमतहँतकजगजाना ॥
ताके तुम सुत भये प्रहलादा *जिनदुखसुखलखिरामप्रसादा ॥
जेहिंबिधिदास पुत्र अभिमाना * माया ते भा प्रघट जहाना ॥
राम दास येहिबिधि अवतारा * जैसे अगिनि बारि संसारा ॥
अगिनिते धुआँ धुआँते बादर * जग्गिनधुआँ मेघश्रुतिसादर ॥
मेघते जल जलते बुझिआगी * जलप्रहलादहिंदयअनुरागी ॥
हरनाकुस जबते मरि गयऊ * जनप्रहलाद राजजगभयऊ ॥
जबते भये प्रहलादके राजू * सुखी भयो चरअचरसमाजू ॥
तीनहुँ लोक राम धुनि लागी * घर घर प्रघटभयो अनुरागी ॥

दो० जन प्रहलाद के राज जब प्रघटभयो ब्रहमंड।
जनहुँ रामअवतार भये दुस्ट अखंडन खंड २५१ ॥

चौ० जो मणि रहै दइतके पासा * सो लगि हाथ रामके दासा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तेहि बल राज करैं प्रहलादा * तीनहुँ लोक सो हरैं बिखादा ॥
हरनाकुसयेहिबिधिजगहोइगा *सतजुगकाकलिजुगसमकइगा॥
फिरि कलिजुगते सतजुगकीना* जनप्रहलादबदलिजुगदीना ॥
धर्म बेलि घर घर संसारा * निज२ क्रमतजिसकलबेकारा॥
राम रूप सब जग नर नारी * काम क्रोध मदतजिसंसारी ॥
नर नारी प्रहलाद सराहैं * जैं हम सुख जै २ तेहि काहैं ॥
जन प्रहलाद राज येहि भांती * राम सनेह जाँय दिनराती ॥
कुछुदिनअसमनसोचबिमोचन * भय प्रहलादकेसुतबैलोचन ॥
दै प्रहलाद सो सुत सब राजू * आपचलेउबन तपके काजू ॥

दो॰ बिसय बिराग न होय कबों मायाभ्रमबसकाम।
सांतिहेत बनका गयो नरतनमनबिश्राम २५२॥

चौ॰ भैप्रहलादब्रह्मगतिलीना * हिंयाँ बैलोचनसबसुखदीना ॥
जसप्रहलाद प्रजा सुखदीन्हा * वैइसै सब बइलोचन कीन्हा॥
कुछुदिनअनन्दसोयेहिबिधिगयऊ*बइलोचनसुतबलिअवतरेऊ ॥
सुत दै राज गयउ बैलोचन * बस्योजायबनसोचबिमोचन॥
पितु प्रहलाद सरिस तप कीना * लीन ब्रह्म भै निजपद दीना॥
लाग्यो राजिकरन बलि जबहीं * इच्छया दानशुरूकरितबहीं ॥
महा अनन्द ब्रह्म निज जानी * अपनिआतमासमसबमानी॥
जेहिबिधि बिस्नुजग्तसबपाला *तेहिबिधिलाग्योकरननृपाला॥

दो॰ जोकोउ मांगै जौनिबिधि मनमाना दै दान।
मानि ब्रह्मसब आतमा राम रूप उर ज्ञान॥
तीनिलोकबलिहुकुमदैजोजेहिकाजोइकाज।
हमरे दोवारे आवै सोइ मन पुरवौंसबसाज॥
ठगवाजी चोरी जुआँ कोउ न करै ममराज।
जो मांगै सो मैं देहौं मन बंछित सब आज॥



CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जो करिहै उतपात कोउ ताहि करौं सिंघार।
निज २ चलिहै धर्म जोइ सोममसुत संसार २५६॥

चौ०राजनेतिअसबलिजगकरही॰ नहिंममराजदंडकुलुपरही॥
प्रजा दुखी जब तब सब करमा * ठग चोरी बेइमानि अधरमा॥
पुन्नि पाप जेहि नृप के राजू * चउथभागदोउनृपासिरसाजू॥
यह बिचार मैं सब धन दीना * जिमि ममराज पापतें हीना॥
कारन पेट बधिक सब करमा * नहिं कबों दया रहै उरघरमा॥
जस राजा के नेति जहाना * तसफल प्रजै सो वेद प्रमाना॥
प्रजा सो सुत नृपपिता समाना * पिताचलनिलखिसुतकेज्ञाना॥
जसगुरुसत्तिसो सिसिपरमाना * जसबीजा तस तरु सबजाना॥
जस राजा तस रइयति ज्ञाना * असबलि राजनेतिपरमाना॥
जो नृप राज होय कहुँ चोरी * चोर सजा सो नृपै बहोरी॥
जो राजा के कहुँ परै डाँका * तौ नृप निजकर काटै नाका॥
राजा राजि होय जो जुआँ * वहु नृप गिरै सरमलै कुआँ॥
होये पाप जेहि नृप के राजू * केहिहित बिश्वासमयसमाजू॥
जो कोइ निस्चर माँस अहारी * तिनहितअजयाप्रघटिखरारी॥

दो० पापिन सौंपे रम्भ सब दइतन अजया माँस।
अउर नारिरति अपरजिउंखायकरौंमैंनाँस॥
कन्याँरहै कुवाँरि जग तेहि राजा कर नास।
सकल खजाना घरघरैकुम्भनरक तेहिबास॥
रम्भा रमणं पाप नहिं जिनकेघर त्रियनाहिं।
घरमात्रिय बैठीरहै रति रम्भा दुख चाहिं २५९॥

चौ०सकलहिर्दैआतमपरकासा* जोकोहु उरमा मांगै मासा॥
सो अजयासुत करै अहारा * अपरजीउहति पाप अपारा॥
जाति सुभावै पाप न लागा * मान्सजातिजोनीच अभागा॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पाप जीउ बध कौन बिवेका * राख्यो सब रइयति उरटेका ॥
जितनी बातैं मैं सब भाखी * राजनेतिकहिनिजश्रुतिसाखी ॥
अजया दीन्ह्यौं मांस अहारिन * कामिनबिस्वादीन्ह्यौं नारिन ॥
यतने पर जो करिहै पापा * तेहिका करौं दण्ड खलदापा ॥
पुनि राजनका फिरिअसचाहीं * सिंघ मृगा मारैं बन माहीं ॥
मृगा सिंघ सरमुख होय मारा * असिभे सोइ क्षत्री औतारा ॥
मारि बँदूख आड़ भे करमा * छत्र गिराभै बधिक के धरमा॥

दो० राजिनेति इतिश्री भई राजा बलि पद दीन ।
अचलराजिपद देखिकै इन्द्रसो कुकरमकीन ॥
कबौं इन्द्र देखै नहीं पर सम्प्रदा अनन्द ।
लाग्यो अस्तुतिकरनसुर बेद ब्रह्म मघछन्द २६१ ॥

छं० जै २ कृपाल वोदार धरनी भार भंजन खल अनी ।
हमसकलसुर भ्रमकूपबस तुमकृपासागर ध्रमधनी ॥
आतमा परमातमा निज बाहुँ बल जग प्रभु किये ।
बलिनृप महाँदानीभयो अब चहतहै सुरपुर लिये ॥
बलिकल्पतरु समजगभयो हमसकलसुरभैमानहीं ।
यहुदइतबंसछलकबोंकरि हमसकलसुर कहँ जावहीं ॥
धर्मबल बलि बढ़िगयो त्रेइलोक मा नहिं यहि समा ।
अबलेहुधर्मयहिनाथतुम निजआतमातिहुँपुररमा ६ ॥

दो० असुरभयो बलवानजग करि ध्रमतपरणधीर ।
पायगयो जब शक्ति उर गनैं न तब पर पीर ॥
जेतने निस्चर दइत भै सब तपकरि बलवान ।
सक्ति खँइँचि ब्रहमंडकै भयो रूप अभिमान ॥
सोना होय जो बस करै बलि राजा बलवान ।
सकल जीउ चर अचर जग देय दंडपरमान ॥
सुनिअस्तुतिसब सुरनकीप्रघटभयो भगवान ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

इन्द्रीसुरतुममति डेरो मैं देखिहौं बलिज्ञान २६५ ॥

चौ० करिअस्तुतिसुरगयेनिजधामा*हियांबलिहितबावनभैरामा ॥
उर अनुराग रूप ब्रह्मचारी * बाँवन आँगुर कर तनुधारी ॥
सीस जटा पोथी कर लीन्हें * सुभगत्रिपुंड भालबिच दीन्हें॥
स्याम पीत उपवीत समाना * त्रेइगुन लरै तीनि परमाना ॥
बलकल बसन पादुका चरना * बगलबघम्बरजगछलकरना॥
बावन दोवार चले छल भूपा * बरन अठारह परम अनूपा ॥
प्रात समय जब अरुणप्रकासा * ब्रह्मरूप धारे तन दासा॥
चितवँनि चपल नैन अरुणारे * मनहुँ बदन रतिनाथ सँवारे ॥
करम कमंडल कर जगजाला * दीन दयाल हिर्दयबनमाला ॥

दो० नटवर भेखसो बन्यो हरि धरे कपट कर रूप।
झूंठा भेखबनाय कै अब छलिहैं बलिभूप २६६ ॥

चौ० चलेग्रामबलिकेसुखधामा * सुरनसकलहितमनबिश्रामा ॥
पंथ जात असछबि श्रुति गावै * मानहुँ ज्ञान प्रेम छबि छावै ॥
पहुंच्यो ग्रामसो बलि दरवाजा * जै २ बलिकहि दीनअवाजा॥
सुनि अवाज जाँचकबलिराजा *दोवारनिकरिआयोसुभकाजा॥
मूरति ब्रह्म देखि सिरनावा * असब्रह्मणकबोंदोवारनआवा॥
मानहुँ ब्रह्म धरा अवतारा * रूप बिचित्र चित्तते न्यारा ॥
मन बुधि मा यहुआवतनाहीं * नयन न देखि सकैं परछाहीं ॥
मुखकहि कुछु सोभा नहिं पावै * रूप अपार बेद अस गावै ॥
धरि धीरज तब बलिमनमाहीं * बोले बचन सदाँ छल नाहीं॥
सुनु अगरी मति परमसुसीला *छलनिरछलद्याखोअबलीला ॥

दो० पूँछा बलि दोउ जोरिकर कहँ ब्रह्मण तौ धाम।
केहि कारणचलिपासमम कहौसत्तिनिजनाम॥
बिष्णु लोक मम धाम है बावण हमरो नाम।
साढ़े तीन सो पैग भुइँ पावों इतिमम काम २६८ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चौ० पुनिबोलेबलिमनमुसकाई ❋ हियौं तुम्हार दलिद्र नजाई॥
चित थिरकरि मांगौ बरदाना ❋होउअलखनहिंमनसकुचाना॥
मैं देहौं बर मन मुख मांगा ❋ धनि वहुधनपरस्वारथलागा॥
ब्राह्मण साधु दीन हित जोई ❋ अपर धर्म हित लागै कोई॥
वहिसमलछिमी अपर न दूजी ❋ जेहिबलनामअमरजसपूजी॥
धर्म तजि अपर हेत संसारा ❋ गईं लछिमीजनुनरकदुवारा॥
तेहिका बिस्नु दंड जग देहीं ❋ लछिमी हरिकी प्रियासनेहीं॥
धर्म लच्छिमी पति जगजाना ❋ अपर हेत रति पुरुषु बिराना॥
पापी लछिमी पावै भोगा ❋ कबौं न साधु बिप्र संजोगा॥
सूम सकल धन बीचक हिजरा ❋ ना धरमैं ना अधरम बिगरा॥
मैं बलि छीर समुद्र समाना ❋ लछिमी सुता बेहि भगवाना॥

दो० ब्यापि रह्यो सो ब्रह्म जग सकल चराचर रूप।
सालिकरामसो आतमा सदांसुलच्छन भूप २६९॥

चौ० धर्मसाथ कन्याकरौंकाजू ❋ अस बिचारिमाँगौद्विजराजू॥
मम तन मन धन तुम्हरैआँहीं ❋ तेहिते मांगो जो मनमाहीं॥
जिमिकोउ साधुज्ञान धनपाई ❋ पर स्वारथ गइसाधु कमाई॥
करि उर भजन नाम जगदाना ❋ चलेउ नामजगसुजसपुराना॥
नहिंगै नाउ बूड़ि संसारा ❋ प्रान गये घटनहिंकोउयारा॥
नाउ सो जल घरमा बढ़िदामा ❋ दोउकर उलिच धर्म संग्रामा॥
पावै बिजै नाम जग भारी ❋ जुग २ साका चलै बिचारी॥
मम उर ध्यान यहै दिन राती ❋ यह बिचार माँगौसब भाँती॥

दो० बलिके बचन अनन्द मय जो सुनिहैं नर नारि।
धरि बिस्वासजो हिदैंलय ब्रह्महोंय भिखियार॥
जो कबहूँ जग मिलत नहिं नयननपरै न देखि।
दोवारेभिच्छुकहोंयसोइजिनकेधर्मबिसेखि२७१॥

चौ० सुनिबलिबचनकहापुनिबाँवन❋तुमराजनकायहैसुहावन॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जेहि उर दया न लक्ष्मी पाये * ते जग प्रघट निसाचरआये॥
बहतू जल नहिं धोयो हाथा * ते पाछे खल पिटिहैं माथा॥
कौनेयों जन्म सोच नहिं जाई * बार २ जग गोता खाई॥
तुम भाख्यो बलि नीतिबिचारा * चारि बेद रसधर्म संसारा॥
हम संतनका का धन राजा * साढ़े तीनि पैग भुइँ काजा॥
तेहि मा आसन अपन बनाई * प्रान कुटी रचि परम सुहाई॥
कुछु दिन भजन करौं मनमाना * अस बोले बावन भगवाना॥
अउर होतिकुछु चाह हमारे * तौ जाइत कस बिमुख दुवारे॥
तुम्हरेव दोवार बिमुखजोजाई * ताहि पेट कबहूं न अघाई॥

दो० तुम राजा धर्मवान जग सुना तुम्हारो नाम।
देव भूमि अस जानिकै मन पावै विश्राम २७२॥

चौ० यहबिचारभुइँपावोंदाना * अपर न हिर्दयहोतउनमाना॥
बावन बचन सुनत बलिराजा * गुरुबोलाय पठयोद्विजकाजा॥
सुनि सुक्राचारज तहँ आये * देखतब्रह्म रूप भय खाये॥
करै लागि मन सोच बिचारा * यहु ब्राह्मण न ब्रह्म औतारा॥
अस बिचार बावण सिरनाई * गै बलिपास कह्यो समुझाई॥
तुम केहि दान देन उनमाना * जो तिहुँलोकपालिभगवाना॥
तीनहुँ लोक जो सिरजनहारा * तेहिते बलि तुमचाहतपारा॥
छलि जइहौ नाहें मानौं बाता * यहु तुमहमसबजगकरदाता॥
कच्छ मच्छ बाराह भयो जोइ * हरनाकुस मार्यो आवासोइ॥
तेहिते मानौं बचन प्रमाना * इनका नहिं तुम दीन्ह्योंदाना॥

दो० इनते लेउ ब्रदान तुम पुरवोउ सब मनकाम।
अस औंसर नहिंकबोंपरै दोवारेठाढ़ेराम २७३॥

चौ०पुनिबोलेबलिदोउकरजोरी * कह्यो नाथ तुमसत्तिब्रहोरी॥
मुलु धनि भागि आजुममभारी * जिनकेदोवाररामभिखियारी॥
जे चर अचर करैं उपकारा * ते मम दोवारे हाथ पसारा॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ई सब पालि मैं इनका पलिहौं * छत्री धरम पाउँ नाटरिहौं ॥
सब सम्प्रदा इनहिं कै आहीं * चहै जेहि भांतिलैंयँमनमाहीं॥
इनका धन सब सुजस हमारा * यहमनदिढ़नाहिंसोचाबिचारा॥
अस कहि बलिकरिदानतयारी * लीन्हयोंकुसगेडुवाजलभारी ॥
सुक्राचार्ज कियो छल जाई * गेडुवा टोंटी बैठि छिपाई ॥
कुस करलै भई दानकिब्यारा * तब गेडुवा बँध भई जलधारा॥

दो० भई धर्म की बेर अब लखुअगरी मति खेल।
जेहिंबिधिनाप्योभूमिहरिमायाअगमअपेल २७४॥

चौ० पुनिबावनबोलेभगवाना * यहि गेडुवान्रपमइलसमाना॥
अस कहि कुसकर डाभचलाई * बलिगुरुआँखिफूटिगइजाई ॥
गिरारुधिर बलि मनघबड़ाना * धर्मसमययहुअघकहँआना ॥
कह बावन तव गुरुछलकीन्हा * गेडुवाते जल गिरै न दीन्हा ॥
बैठि रहैं टोटी के बीचा * कुसकै डाभलागिद्रिगनीचा ॥
अस कहि पढ़नसंकलप लागे * बलि दै बावनकर अनुरागे ॥
बावन कर जब बलि दै दाना * लीनसंकलप महिभगवाना ॥
देवन सुमन वृष्टिझरि लाई * भै अनन्द दुन्दभी बजाई ॥

दो० लीन संकलपप्रभुजबहिं कह बलिते असबानि।
नापउँ आपनि भुम्मि मैं लखौ तमासादानि॥
असकहिधारि विराटतन यकपगकियोपताल।
मृत्तलोकयकपगप्रभूएकआकासकृपाल २७६॥

चौ०जोपगप्रभु आकासउठाई * ब्रह्म लोक मा निकस्योजाई ॥
ब्रह्में लखि बिराट के चरना * लीन्हयों धोय ब्रह्मपदबरना ॥
सोइ गंगा भागीरथ दयऊ * साठिहजारसोखलअघतरेऊ॥
तब बावन बलिते कह बैना * आधा पैग देहु मम चैना ॥
पुनि बलि बावनते कह बानी * तुम ब्रह्मण नहिं छलकैखानी ॥
मम दरसन हित बावन रूपा * अपने हित बिराट भै भूपा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मुलु बइसै तन धरौ सुजाना * हमते लेउ दान परमाना ॥
पुनिबलिजबअसबचनसुनाये * फिरबावनतन धरिसुखदाये ॥
रानी राजा दोउ महि सयना * नापि लेउ आधा पग चैना ॥
दो० पूरा होइगा दान बलि हारि गयो श्री राम।
तब बलि बावन पद गह्यो देउ हमैं बिश्राम ॥
छलन गयो बलिराजका छलिगेकृपानिधान।
तब सरमाय उठाय उर लायो श्री भगवान २७८ ॥
चौ० बावन हिर्दैलायबलिभेंटे * सब छल कपट भरमउरमेंटे ॥
तैं मम दास अनन्त अनादी * तव भयखाँय देव जग बादी ॥
काहेन अस बलिहोउ जहाना * जनप्रहलादनातिजगजाना ॥
जिन नरसिंघ प्रघट करि पाँवन * तुम्हरे दोवार आजुहैं बाँवन ॥
देखि तुम्हारिभक्ति जग न्यारी * देवन अस्तुति कीन हमारी ॥
भै अस्तुतिसुर सकलप्रकासन * लेनचहतबलिसुर इन्द्रासन ॥
पुनि मैं जानौं सब घट केरी * सकलसुरन मतिभरमनिबेरी ॥
बिनु देखे प्रतीत नहिं काहू * निरगुन सरगुन ब्रह्म उछाहू ॥
अबतुम्हैंसकलसुरनलखिलीना*नृपबलिभक्तिअचलपददीना ॥
दो० गयो भरम सब सुरनके भक्ति देखि बलिराज।
जो हमैं भावा सो मिला अब सारौ निज काज ॥
अबबलिमांगौ जोईमन सबकरिहौं कल्यान।
तबबलिबावनचरणधरि देउदरसमोहिंध्यान ॥
असकहिअस्तुतिजोरिकर लाग्योकरननृपाल।
अबजसतुमकाजानिपरैतसमोहिंकरोनिहाल२८१ ॥
छं० जे २ पद बावन सब जग पाँवन छल निरछल दोउरूपा॥
सब घट बासी तुम अभिनासी सकल चराचर भूपा ॥
सब सुरभयलागी तन अनुरागी पद बाँवँन निरबाना।
येहिते का माँगौं उरअनुरागौं पद बाँवँन मन माना ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

नित उठि उर प्राता दरस बिधाता बाँवँनरूप सो धारी।
यतरा बरदाना प्रभु मन माना भक्ति न टरै हियारी॥
सुनि बलि असबचना बाँवँनफँसनाभै जुग२ दरवानी।
असबरबलिमाँगा मनअनुरागा सुफलकरौममबानी १०
दो० सुनि बलिबचन कृपायनिधि पर्यो भक्तिकेजाल।
छलमाछलप्रभुहोयगयोनिरछलबलिसोनिहाल॥
जो जस करनी जग करै तस फल पावैं सांच।
हीरा बिकैबजारमा यक साँचा यक कांच २८३॥
चौ० करनी हीरा यहिसंसारा * यकछलयकनिरछलऔतारा॥
जेहिंजस करनी तेहिंतस पावा * मिलि है सत्तिबेद असगावा॥
बाँवँन बलि दोउ जन भयेपूरा * बाँवँन बलिके रह्यौ हजूरा॥
पुनि बाँवँन बोले मुसक्याई * बलि त्रियते माँगहु बर माई॥
तब बलि त्रिय बोली मँहँरानी * प्रेम बचन कबके तुम दानी॥
मम पति दोवारे मांग्यौं दाना * तब बइठै का लाग ठेकाना॥
तीनहुँ लोक देहँ दै आदी * सो हम तुमका दीन प्रसादी॥
हमरै दान हमैं तुम देहू * अउरु रह्यो का तुम्हरे गेहू॥
दो० तीनि लोक दै तुम्हैं हम देहँ सहित भगवान।
अपनदानकहो फेरिकै मांगी हमबरदान २८४॥
चौ० जेतनातुम्हरेधनरहिगयऊ * सो प्रथमैं पति माँगतभयऊ॥
जन्म जन्म जुग २ दरवाजा * ठाढ़े दरस देउ इति काजा॥
जोइ माँग्योपति सोइहममाँगा * दरसन रोज देउ अनुरागा॥
सुनिबलित्रियकेबचनसोबावन * भै अनन्दकुछुमन सकुचावन॥
दोउ नृप रानी भयो अनन्दा * बाँवँन फस्या प्रेमके फन्दा॥
तब बाँवँन अस कह्यौ नृपाला * जायबसो बलि तुम पाताला॥
सेस लोक तुम करि बिश्रामा * निरगुनचरितसुनौंसुखधामा॥
इति श्रि बावन जस भै सरगुन * सुजनसुन हु अबबाँवँननिरगुन॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो॰ जस बाँवँन सरगुन भयो तस निरगुन उरमाहिं।
कहौंचरित्रबिचारि उर हिर्दय छुआछल नाहिं॥
बलि जानौं जन दीन पद तन मन धन प्रभुहेत।
बाँवँन पद निरबाँन हैं जीति प्रेमके खेत २८६॥

चौ॰ सुक्राचारज सूम जहाना * दान देत उर मन बेइमाना॥
दुइ आँखी जानौं मन केरे * यक माया यक ब्रह्मसो हेरे॥
गेडुआ ज्ञान घुसे छलकारी * ब्रह्म आँखि सोइफोरि खरारी॥
ब्रह्म आँखि गै रहिगै माया * कानें भयो असुभ तन पाया॥
दासदीन त्रिय सुमतिसोजाना * जेहिते हारि गयौ भगवाना॥
इंद्रिनके सुर धर्म डेराहीं * अस्तुति आतम राम कृपाहीं॥
आतम राम रूप निरबाना * चलेउ दास लेने परमाना॥
तन मन धन माँग्योतिहुँलोका * आधा पैग प्रान तन सोका॥
जब उरदीन सोमन भगवाना * दीन सो पद पाताल समाना॥
येहि बिधि बाँवँन उर अवतारा * कह्योंकथामतिसरिसबिचारा॥
धरि उर सत्ति सुनैं नर नारी * जीवनमुक्ति सकल सुखभारी॥

दो॰ बाँवँन अस्तुति सकल सुर कीन्ह्यों प्रेमसमेत।
गयो आपने धाम सब बस्यो प्रेम के खेत॥
बलि बाँवँन रानी सहित बस्योजाय पाताल।
सालिकरामअनन्दभयेअगरीमतिअसख्याल २८८॥

इति श्रीसतसंगसागरेमानसेआनन्दकन्दे ब्रह्मचरितेबाँवँनअवतारे सुरनहेतेबिराटरूपेसाढ़ेतीनिपैगंदानेपातालबासे बरणाननामखस्टबीसोअध्याय २६॥

परसराम औतार कथा॥

दो॰ परसराम अवतार अब बरणौं सहित बिचार।
प्रथमशम्भुकर ब्याहबर कहौंप्रेम श्रुतिसार २८६॥

चौ॰ बाँवँनकथा भई सम्पूरन * अपर राम जसकहौं हजूरन॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दच्छ ज्ञान अवतार जहाना * सतीसुता तेहि सबजगजाना ॥
कीन्ह्यों संकर जाय बिवाहू * देवन लह्यो नयनभरि लाहू ॥
सत्ति बचन जग सती समाना * ज्ञान सुता संकर लै दाना ॥
संकर सत संकर जग रूपा * सत्तिबचन पति ज्ञानके भूपा ॥
ज्ञान दच्छ तीनहुँ पुर राजू * तेहि दमाद संकर सुरकाजू ॥
सत्ति सती उर लै कैलासा * गयो सम्भु आनँद सुखबासा ॥
यहु सिउ ब्याह जानि संसारा * कह्यों संछेप कथा श्रुतिसारा ॥
अब कहौं परसराम औतारा * निज मतिके अनुसारबिचारा ॥

दो० ब्रह्मणके घर लीन जस अलखब्रह्म औतार।
अगिनिबंस भृगुकुलपरम भैजम्दग्निवोदार २९०॥

चौ० यकब्रह्मणजम्दग्निजहाना * भृगुकुलबंससकलजगजाना ॥
कामधेनु यक सुरभी सेवा * सपनेउँ आन भरोस न देवा ॥
उत्तिम कुल उरतप अधिकारी * निजआतमाकेबिमलबिचारी ॥
तिनके भये सुत पारसरामा * राम समान ज्ञानसुखधामा ॥
बालकेलि बहु चलनि सुजाना * पितु अज्ञा प्रमान उर ज्ञाना ॥
दै जम्दग्नि हुकुमु यकबारा * निजत्रिय कुछु कामें संसारा ॥
सुन्यों बचन नहिं पतिकेसारा * हँसिकै परसराम हंकारा ॥
कहां देर लागी निज गेहू * काटौ जाय मूँड़ सुत येहू ॥
सुनिपितुबचन काटिसिरलाये * लखिजम्दग्नि बहुत भयखाये ॥

दो० परसरामते तब कह्यो का सुत सांचे कीन।
कीनहँसउवामें रहै तुमाजिव जननीलीन २९१॥
परसराम तबकह्यो अस हम हँसउब का जान।
हम पितुकै अज्ञा करन वेद बचन परमान ॥
परसराम ते पितु कह्यो माँगौ सुत बरदान।
जो तुम्हरे मन मानहीं कीन्ह्यों बचन प्रमान ॥
परसराम सुनि पितुबचन हमैं जो देउ बरदान।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तौ माता सिर जोरिकै फेरि जियावउ प्रान॥
लखि असमुतचतुराइमुनि सुमिस्योश्रीभगवान।
त्रियाजियाईआपनी परसराम कल्यान २९५॥

चौ॰ तबमुनिअपनेहिर्दयबिचारा * यहसुतनहीं रामअवतारा॥
यह सुत नहिं हमारघर लायक * करै तपस्या दीन सहायक॥
यहिभे चलिहै नाम हमारा * हरिहैं सकल धरणिकेभारा॥
मातु पिता गुरु बचन उठावै * वहिते कोउ जग पार न पावै॥
अस बिचारि सुतकह्योबुझाई * करौ जाय बन तप सुखदाई॥
सुत जायो तुम संकर पासा * जोकुछु कहैं धस्यो बिसवाँसा॥
सुनि पितुबचन मातु सिरनाई * जननी चुम्बि चाटि उरलाई॥
जाउ बचन पितु मान्यो ताता * होइहौ अलख ब्रह्मजगदाता॥
पितु दंडवत कीन सिरनाई * चलिभे बन वर आसिखपाई॥

दो॰ परसराम जगराम सम मन बाढ़्यो संसार।
ज्ञानआयजनुतनु धस्यो तजिउरसकलबेकार २९६

चौ॰ आपचलेबनतजिजगआसा * संकर पास गयो कैलासा॥
देखत सिउ करि दंडप्रनामा * पूँछा सिव बताय निजनामा॥
कर्म धर्म निजहाल बखानी * पिता नाम कहि सुन्दर बानी॥
तब संकर बोले अस बयना * मातु पिता तुम्हरे उरअयना॥
तुम छाया मुख सब संसारा * जननी कोखि धन्नि अवतारा॥
कहौ हियाँ केहि कारण आये * परसराम सब हाल सुनाये॥
ताड़क मंत्र लेउ मम पाहीं * करौ जाय तप तुम बनमाहीं॥
असकहि दीन्ह्यों ताड़कमंत्रा * राम रूप भये तजि जगसंका॥
मंत्र पाय करि अस्तुति संकर * जय जगनाथ बसौ मम अंतर॥

छं॰ जगआतमा जै२ कृपाल कल्यानकरि मोहिं जन कियो।
जय सम्भु तुम ध्रम खम्भुआत्मा सर्ब ब्यापिकहौ जियो॥
भेख भव डीगम्बरं तन चर्म करि अरि सारनं।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

करि बंदना संजुक्त सक्ति निज दास पारस रामनं ॥
दंडवतकरि उर बनचले आनन्द कन्द मदमान हरि।
परसालिये परस्वोर्थकरकहैं रामसालिक मारिआरि ॥

दो॰ परसराम छवि मग कहौं धारे बीर सरीर।
बार २ रद फरकहीं सुभ लक्षण रणधीर २९७ ॥

चौ॰ रदफरकेलच्छनसुखधामा ॥ जानौं जिति हैं खल संग्रामा ॥
गै बन माहिं राम धरि अंतर ॥ निस दिन नामजपैंबरसंकर ॥
पहुँच्यो जब सुमेरगिरि पासा ॥ कीन्ह्योंकुछुदिनतहां निवासा ॥
नरतनु है सुमेरगिरि सुन्दर ॥ चौरासी गुरिया लखु अंतर ॥
तेहि सुमेर पर पारस रामा ॥ कीन्ह्यों बास परम सुखधामा ॥
कुछु दिन तहँ तप कीनबिचारा ॥ सहसबाँहु जगभये अवतारा ॥
सहसबाँहु तेहि छिन भा जोधा ॥ तीनहुँ लोक बीरतेहिं सोधा ॥
कीन अकच्छ महा संसारा ॥ भयेब्याकुलसुरसकलबिचारा ॥
धेनु बिप्र सुर साधु जहाँना ॥ सबका दें कलेस अज्ञाना ॥

दो॰ कीन भिस्ट संसार सब धर्म उठा जग माहिं।
तासे कोउ जीतैनहीं जग्त सुमिरि प्रभुपाहिं २९८ ॥
देवसुमिरि निजनामउर जयजय कृपानिधान।
जहांहोउतहँलेहुसुधि हनोदुस्टअभिमान २९९ ॥

इति श्रीसततसंगसागरेमानसेआनन्दकन्देब्रह्मचरितेपरसरामजन्मे
मातापिताउद्धारेसंकरगुरूकरतेतपहेतेसहस्राबाँहुजन्मे
सुरनप्रार्थनाबरणननामसत्तबीसोअध्याय २७ ॥

---

चौ॰ तीनिलोकनिजबाँहुबसाई ॥ लैलै दंड सकल दुखदाई ॥
करि जग बिजै चला निजधामा ॥ गयो ग्राम जहँ पारस रामा ॥
परसराम पितु डार्यो मारी ॥ कामधेनु लै गाय सुरारी ॥
परसराम जननी हियँ ध्याना ॥ हुँवाँ राम कारन सब जाना ॥
लै परसा उठि बीर कराला ॥ आयो जननी पास कृपाला ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पति लहास देखि भा क्रोधा * मरिहौं आजु सहसभुजजोधा ॥
चढ़ा बीररस नयन खुमारी * मन मति क्रोध भई मतवारी ॥
नयन अरुँण जलभरेसुजाना * फरकतअधर भुजा परमाना ॥
चले कराल बीर धरि रूपा * मानहुँ क्रोध धरा तन भूपा ॥
गरे जनेउ बस्त्र मृगछाला * कर परसा आवत जनु काला ॥
चले बीर जग भानु समाना * सहसबाँहुजनौं रातिअज्ञाना ॥
दो०पूरणवाँसी चन्द्र जिमि करै राति जग बिजै।
सहसबाँहु तिमि मारिहौं परसराम मैं तबै ३००॥
चौ०असकहिचलेबीरबिकरारा* पहुँच्यो सहसबाँहु दरबारा ॥
काटन लाग्यो भुज खल कैसे * जंगल कटै गिरिन पर जैसे ॥
सहसबाँहुगिरि भुज तरु जाना * परसराम बढ़ई अनुमाना ॥
काटत भुज खलके दुइ रहेऊ *सुमिरेसिसम्भुतहांचलिगयऊ ॥
कहा सम्भु तुम्हार गुरुभाई * दुइ भुज मोरे निहोर बचाई ॥
जस अभिमान कीन फलपावा * परसराम अससम्भुसिखावा ॥
परसराम कह यहु बड़ पापी * मारेसि पिता अधम परतापी ॥
यहिका करिहौं खलबिनुबाँहू * परसराम हमार तब नाहूँ ॥
मुलु दुइभुजादेहौं अब छांड़ी * गुरुके बचन सत्तिउर भारी ॥
नाहिं तोकारिखलयाहिबिनुबाहू * तब उर सीतल होत उछाहू ॥
यतना दुख रहिगा उर माहीं * दुइ भुज बचे तुम्हारे पाँहीं ॥
भुजा हींन सोहै खल कैसे * साखा रहित सदाँ तरु जैसे ॥
सहसबाँहु अभिमान सिंघारी * देवन सुमन बृस्टिझरिकारी ॥
आय जननि पद नायो सीसा * पिता दाँव लै दीन असीसा ॥
करिपितुक्रियाजननिहरिसोका *असप्रणमनकीन्ह्योंतिहुँलोका ॥
करिहौं बीर बिहींन जहाँना * जहँलगिसुभटबीरअभिमाना ॥
दो०अस कहि संकर पास गये चरनन नायो माथ।
कथा कहीनिज हिर्दयकीकरिहौंबीरअनाथ ३०१॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चौ० परसरामसुनिबचनसुजाना * संकरहिर्दयपरमसुखमाना ॥
परसराम पुनि कह अस बानी * तीनिलोक मरिहौंअभिमानी ॥
मोंहिं अज्ञा अब देउ कृपाला * दुस्ट बिजयकरिजग्तबेहाला ॥
तब सिव बोले दीनदयाला * यहु मत पूछौ बिस्नु कृपाला ॥
विस्नु बिस्सु के मालिकराजा * तिनके पास सरैं तब काजा ॥
हम जोगी जोगै मत जाना * सन्त जोग हमरे ढिग ज्ञाना ॥
मुलु यक बात हमारी जानी * सो मैं तुमसन कहौं बखानी ॥
बाँवँन रूप बिस्नु सुरहितधरि * ब्रह्मरूपबलिदोवारे छलकरि ॥
देंहँ सहित लै तिहुँ पुर दाना * धरा बिराट रूप हुँअँ ज्ञाना ॥
ब्रह्मण धन उनके ढिंग जानी * जायलेव करि मनकी मानी ॥
उनके पास जाय होय दासा * करिअस्तुतिनिजबंसप्रकासा ॥

दो० जो चाहौ जग बिजय मन होउ रामके रूप।
जाव बिस्नुके पास तौ देहैं अपन सरूप ३०२ ॥

चौ० कहौजांयअसबिस्नुतेबानी* कहिनिजबंससहसभुजहानी ॥
जो हमार तनु धन लै दाना * तौ हमैं देवजोनिजजनजाना॥
यतनी सुनि देहैं धनु दानी * जाव सत्ति मानौं मम बानी ॥
छीर उदधि उर उनकर धामा * तहाँ जाव तुम पारस रामा ॥
सुनिगुरुबचन मानि बिस्वासा * सिउसिरनायचलेनिजदासा ॥
पहुँच्यो जाय छीर उर माहीं * देखि लच्छिमी धाम सोहाई ॥
चहुँदिस मणिनप्रकासप्रकासी * हेंम धाम स्वावैं अभिनासी ॥
लाग्यो अस्तुतिकरन कृपाला * छन्द वेद धुनि दीनदयाला ॥

छं० जयति बिस्नुबिस्सुरूपपालनातिहुँलोकभूपजैकृपालदीन-बन्धुअहमब्रह्म छन्दनं। ब्यापकसरबग्गितग्गिजहि उरअनुराग लग्गि जैति रामरूप सोय परसरामबंदनं ॥ भक्तिज्ञानभानुदेव सप्रेमरूप हिर्दे सेवत सतगुर बिश्वास बचन सत्ति भाव पंथनं। भै उर आनन्द कन्द कट्यो हिर्दय भरम फन्द जानि राम रूप

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

आप कहत वेद ग्रंथनं ॥ रिगि सो ज्ञानजीवजानजजुरसोहं स्वोस ध्यान तत्तु स्याम सर्ब रूप आतमा अथर्बनं। अस्तुति अस परसराम जाग्यो बिस्नु सालिकराम परसराम चरण परे मानोपरब कुंभनं ११॥

दो० परसराम की बिनय सुनि जाग्यो दीनदयाल।
प्रेम रूप आनन्द मय ब्रह्मचार्ज तन बाल॥
देखि बिस्नु आनन्द भये पूँछ्योबचनबिचारि।
परसराम कहिनामकुलभयो अनन्द खरारि॥
ब्रह्मण ब्रह्म सरूप लखि बिस्नुलीनउरलाय।
कहौ देव कहँ तनचल्यो मोहिं दरसन दैआय॥
परसरामनिज हिर्दय करदीन्ह्यों हालबताय।
तबबलिका धनुकरदियो परसरामसुखपाय ३०६ ॥

इति श्रीसतसंगसागरेमानसेआनन्दकन्देब्रह्मचरितेसंकर
उपदेसेबिस्नुप्राप्तेधनुलाभेबरणननाम
अस्टबीसोअध्याय २८॥

---

चौ० बलिधनुलेउकरौजगराजू * सकल सुरन के सारौ काजू॥
त्रेता मद्धि लेहौं धनु आई * तबतक राजि करौ तुम जाई॥
रघुबंसिन कुल लै अवतारा * हरिहौं सकल धरनिकेभारा॥
धनुलै प्रभु करि दंड प्रनामा * जगत बिजयचले पारसरामा॥
परसा धनु लीन्हें दोउ हाथा * यह मन करिहौंबीर अनाथा॥
यहि बिधि कहि घूमैं संसारा * जहँ पावैं कहुँ बीर अपारा॥
ढूँढि २ मारैं अभिमानी * जेहि उर दया धर्म कै हानी॥
सहसबाँहु सम जो भट जाना * तेहि परसा काटैं अभिमाना॥
ब्रह्म मई फेर्‍यौ संसारा * सकल पाप कीन्ह्यों सिंघारा॥

दो० ब्रह्ममई फेर्‍यौ जगत सब का ब्रह्मबनाय।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कोउभट जगना रहिगयो एक लांगछोरवाय ३०७॥

चौ० ब्रह्मणब्रह्मलोकतिहुँकीन्हा*सब चरअचरब्रह्म सुखदीन्हा॥
भा कलेस छत्रिन मन माहीं * छोरे लाँग बीरता नाहीं॥
दूसरि लाँग बाँधि संसारा * ताहिसुभट जनौं कालगस्यारा॥
परसराम अस सतजुग राजू * घर घर ज्ञानप्रकास समाजू॥
धर्म रीति सब जग नर नारी * सकल चराचर ब्रह्म बिचारी॥
बैर भाव सब जीवन त्यागा * प्रीति परसपरसबअनुरागा॥
परसराम सरगुन अवतारा * अबनिरगुनकुछ सुनौंबिचारा॥
ज्ञान पंच तत पारसरामा * दयाजम्दगिनिसुतसुखधामा॥
सहस्रबाँहु सास्त्री अभिमानी * सान गुमान ज्ञान नहिंबानी॥
ताहिभुजा करि सास्त्र सिंघारा * दया जम्दगिनि जैं खलमारा॥
परसा कर पर स्वारथ लीना * तीनहुँ लोक ब्रह्मसुख दीना॥

दो० सरधा दया कि नारि है परसराम की मात।
सोहं संकर गुरू करि बिस्नु बिस्सुधमतात ३०८॥
परसराम दै धर्म धनु इति श्री भा औतार।
कह्योंसरिसमतिसारश्रुतिअगरीबिमलबिचार ३०९
जो सुनिहैं यह बीर रस कूर ते होइ हैं सूर।
ज्ञान और बैराग धन भक्ति पदारथमूर ३१०॥

इति श्रीसतसंगसागरेमानसेआनन्दकन्देब्रह्मचरितेपरसराम जग्तबिजयहेतेजग्तयकच्छकरते धर्म प्राक्षेजग्त बणरन नामनौमोबीसोअध्याय २९॥

---

## अथ रामावतार वर्णन॥

दो० अब रामाअवतार की कथाकहौं सुखधाम।
निज उर हिदैंबिचारिकैं मतिजस सालिकराम॥



CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चौ०कृतजुगयकअच्छरगतभयऊ * दुतियेदोवापरबेरसोभयऊ॥
तब वसिष्ट अस हिदैं बिचारा * दोवापर होय कृस्नअवतारा॥
मम सुख है त्रेता के माहीं * यह बिचार उरगये पितुपाँहीं॥
ब्रह्मलोक नभ समन समाना * जहँ आतमाबास जगजाना॥
देखि पिता सुत जग के राजा * कहो बसिष्ट कहां केहिकाजा॥
पितु सिरनाय बैठि नभआसन * लाग्योआपनिबचनप्रकासन॥
जो उपरहिती दीन्ह्यौं करमा * सबते नीच महाँ यहुधरमा॥
त्रेता राम धरैं अवतारा * हरि हैं सकल धरनिकेभारा॥
अब कृतजुगगत दोवापरलागी * कबलगि रहिहौं बैठअभागी॥
दोवापरकर त्रेता जो करहू * तौ उपरहिती भ्रम मैं धरहूँ॥
पुनि ब्रह्मा बोले अनुरागी * एक ते तीन गन्तिकहुँलागी॥

दो० प्रथमएक फिर दुइ भयो दुइतेफिरभै तीनि।
तीनितेचारिबिचारउर यह जगबातप्रवीनि ३११॥

चौ०कहबसिस्टउपरहितीधरमा * कोहु अउरेसौंपौंयहुकरमा॥
मैं करिहौं बन तप सुखदाई * ब्राह्मणका तपही अधिकाई॥
तब ब्रह्मैं अस हिर्दय बिचारा * अपर कहाँ ढूढ़ौं संसारा॥
अस बिचारकरि मन उनमानीं * यहुसुतअरिबालकनहिंमानीं॥
यहि हित रचिहौं कछुकउपाई * पुनि ब्रह्मैं निज सुतसमभाई॥
जावो करौं मैं तुम्हरे मनकी * निजइच्छयाजैसीममजनकी॥
चलौ हेत तुम्हरे संसारा * मैं सरगुण लेहौं अवतारा॥
तब बसिस्ट कह मैं कस जनिहौं * बिनुजानेकेहिबिधिमैंमनिहौं॥
तब ब्रह्मा बोले सुख धामा * बालिमीक मम होइहै नामा॥
तब दोवापर कर त्रेता लागी * लिखिहौंजग्गिकरमअनुरागी॥

दो०यहिविधिसुतसमुभायविधि तबभैअंतरध्यान।
मुनिबसिस्टआनन्दभये भयोसहजकल्यान ३१२॥

चौ० सुनिबसिस्टपितुबचनप्रमाना * चरननायसिरकीनपयाना॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पहुँचि अवध मनमा विश्रामा * अबनिज अवधै अइहैं रामा ॥
हुआँ ब्रह्मा यक ब्रह्मण धामा * प्रघटे बाल्मिमीक धरि नामा ॥
गयौ भुलायरूप निज आपन * मायाजाल फँस्योजगसापन ॥
ठगबाजी करि बंस जियाई * मातु पिता त्रियसुतनखवाई ॥
यहि बिधि रोज यहै रोजगारा * धनुलैनहिंसुभअसुभबिचारा॥
ब्राह्मण साधु अपर धनवाना * बइठे बन लूटैं अघ नाना ॥
यहिबिधिअघउरबिस्नुबिचारी * तेहिछिन संतदेहँ प्रभु धारी ॥
निकस्योवहि बनजाय कृपाला * बालमीक जहँ बइठ्यौ काला ॥

दो॰बालमीक बटु देखिकै मनमा भई अनन्द ।
दिनभरिनाहिंकोउमिलेउमोहिंतुमहींआयोफन्द ३१३

चौ॰सन्तैगाँसि ठाढ़भयेआगे * तुमहीं आजु हाथ ममलागे ॥
जो कुछु होय धरौ मम हाथा * तबसाधू कह बचन सो पाथा ॥
हम साधु निहंग प्रभु दासा * नहिं कुछु है हमरे धनु पासा॥
मुलु कुछु बचन कहौं समुझाई * जो मानौं सुनि कानलगाई ॥
केहि कारनजिउ बधनजहाना * कहौ सत्ति अपने उर ज्ञाना ॥
का करिहौ धन लै अपराधा * केहिहितकरौकरमनिजबाधा॥
बाल्मीक तब कहा बिचारा * करि ठगही पालन परिवारा॥
पुनिअसबिस्नुकहासुनुजामिल * पुन्निपाप तुम्हरेकोउसामिल॥

दो॰ बालिमीकतब असकह्यो सबसामिल परिवार ।
पुन्नि पाप जो हमकरैं धनलै धरैं परार ॥
कह्योसन्त तब बिहँसि अस पूँछौ तौ घरजाय ।
नाहिंतोअपनेसीसपर नाँहक धरौबलाय ३१५ ॥

चौ॰बालिमीकतबगयेघरमाहीं * पुन्नि पाप सामिलकीनाहीं ॥
सब घरमा पूँछ्यौ अस बानी * जो धनलाई हमकुछु आनी ॥
तब दारा सुत दीन जवाबा * जानी खाय न नीक खराबा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मातपिता बोले अस बयना * हम तुमका पैदा करि चयना ॥
पुनि पाप नहिं जानत आजू * खाय सेवाय न और समाजू ॥
कहा नारि तुम हमरे स्वामी * कामु तुम्हार करी अनुगामी ॥
कहा पुत्र तुम हमका स्याउब * पाछे तुमका हमहुँ खवाउब ॥
सबहिन दीन जवाबु प्रमाना * बालमीक उर तब भै ज्ञाना ॥
आयौ उनहीं साधु के पासा * सबघरकेपुनि वचन प्रकासा ॥

दो० तबहीं साधू अस कह्यो अब छाँड़ौ संग्राम।
मुक्ति हेतकुछुजतन करि सुमिरौसीताराम ३१६ ॥
बालिमीकतब असकह्यो ममम़ुखनहि कहिआय।
चहै सोरोग चाहै नरक होय जो तुम मोहिंबताय ॥
कह्यो संत तब बचन अस का कहि आई तोहिं।
वालिमीक पुनि अस कह्यो मारामारामोहिं ३१८ ॥

चौ० सन्त कहा मारै कहु भाई * मारा कहत राम कबों आई ॥
राम मंत्र दीन्ह्यौं भगवाना * तबतेहिछिनभयेअंतरध्याना ॥
मरा मरा कह तन सुखधामा * लाग्यौ अबनिकरन मुखरामा॥
भा उरअनुभव हिर्दय अपारा * राम प्रताप भयो भ्रम छारा ॥
बालिमीक मन कीन बिचारा * लिखौं रमायण मैं श्रुतिसारा ॥
दोवापर मेंटि त्रेत बिस्थारा * जग्गि न कर्म प्रघटिसंसारा ॥
असकहिये लिखन रमायण लागे * पूरब जन्म होस अनुरागे ॥
प्रथमलिख्योतपमनुसतिरूपा * पायो दरसन ब्रह्म अनूपा ॥
जेहि बिधि ब्रह्म दीनबरदाना * मैं होइहों तुम्हार सुत ज्ञाना ॥
अवधपुरी जब होइहौ राजा * तवसुतहोय सब सरिहौंकाजा ॥

दो० बालिमीककी कथा सब कहौं संक्षेप बखानि।
बिस्नुलालकीमति जेती अगरीसुनौंभवानि ३१९ ॥

चौ० जेहिबिधिभयेरावणऔतारा * भाइनसहितसकलपरिवारा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

करि तप पायो जस बरदाना * भिरेउ जहाँ सुभटन बलवाना ॥
जेहि बिधि सुरन सतायोजाई * नगर ग्राम पुरआगिलगाई ॥
जेहिबिधि करलीन्हेउसुरसंतन * सीता प्रघट भई जगवंदन ॥
जेहिबिधि सुरमहि संतदुखारी * कीन्ह्यों अस्तुति ब्रह्मखरारी ॥
भइ अकासबानी जेहि भाँती * सकलसुरन धीरज मनसान्ती ॥
जेहि बिधिब्रह्मधरनिसमुझावा * सकल सुरन दै हुकुमु पठावा ॥
धरिबन्दर तनु करिप्रभुस्यावा * चलेउसकलसुर बेलँबनलावा ॥
जेहि बिधि दसरथगे गुरु पाँहीं * पुत्र सोच ब्याकुलमन माहीं ॥

दो० जेहिबिधिहुकुमबसिस्टदये जग्गिपुत्रहितठानि ।
सिंघीरिखिहिबुलायसुभ कहकोमलमृदुबानि३२०॥

चौ० अगिनिभागजेहिबिधिलैआये * दीन्ह्यों दशरथहाथसोहाये ॥
दै नृप रानिन सोइ लैभागा * चारि पुत्र प्रघट्यो अनुरागा ॥
बालकेलि सब कथा बखानी * बालिमीक बालक मृदु बानी ॥
धरि बिराट जननी भय दीन्हा * प्रेम प्रतीति पोख उर कीन्हा ॥
बिसुवामित्र माँगि जस दाना * पायो राम लखन बलवाना ॥
मारि मरीच ताडुका बीरा * रिखि नारी तरि सुभग सरीरा ॥
बिद्यावान सकल अघछीना * विसुवामित्र मंत्र जस दीना ॥
जेहि बिधिगयो स्वयम्बरमाहीं * आयो जनकमिलनमुनिपाहीं ॥
गये फुलवाई सिया मिलनभै * मिलतसान्तिजिमिज्ञानजलनिगै ॥
जेहि बिधिसभा स्वयम्बर जोरा * जनक समाज सियैं धनु तोरा ॥
कहा धनुस ते सियैं करजोरी * हलुकि होउ प्रभु हेत बहोरी ॥
तब धनु कह्यो जड़तुकह धारौं * होउँ हलुक तव कारज सारौं ॥
कह सिय जड़तु देउजड़लोगा * जग्त मातु जो चाहत भोगा ॥

दो० जे चीन्हत नहिं रामका सकल आतमारूप ।
तिनका जड़ता देउतुम मूढपरे तमकूप ३२१॥

चौ० यहसुनिधनुससक्तिउड़िगयऊ * जिमिलकरीघुनिदसासोभयऊ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

नाम राम कर सियैं धनु तोरी * जिमिबिस्वासनिजकाजसरोरी॥
नाम होय हमका उन दीन्हा * जेहिकै जैं स्यावा जहँ कीन्हा॥
अस्ति चचोरि स्वान मनमोदा * आपन खून आप मुखसोदा॥
यह सुनि परसराम उठिधाये * वृथाँ राम पर क्रोध बढ़ाये॥
राम कहा छुवतै गा टूटी * जिमि कोउ बैददेय रोजबूटी॥
कृपाराम रुजगै सब खोई * नाम वही बैदै कर होई॥
तेहि बिधि धनु कोहुँ टूरा अउरे * नाम हमार लगावहु रउरे॥
जो हम टुरते तौ कहि देते * कालौ होत तो ना भय करते॥
असकहि निजभृगुलतादेखाई * पूरब जन्मैं होस कराई॥
परसराम जागे धनु दीन्हा * करिअस्तुतिबनगवनसोकीन्हा॥

दो० गयौ अवध चरबर तुरत हियाँपराजयमाल।
सभासो निज २ धामगये जोजहँरह्योकृपाल॥
चरबर लायेबरात जस क्रम २ कह्यों बखानि।
बेह्यो चारो भायपुर बालिमीक की बानि ३२३॥

चौ० जथाँजोग जसभयोबिवाहू * देवनलह्यो नयन भरिलाहू॥
दाइज नेग भेंट दै पाई * चलेउअवधसिय बिदाकराई॥
बेगि अवध आयों चहुँ भाई * घर २ बाजैं अनँद बधाई॥

इति श्रीसतसंगसागरेमानसेआनन्दकन्देब्रह्मचरितेबालकांडेबालिमीके जसेबरणननामदसवीसोअध्याय ३०॥

---

चौ० पुनिकेकईकथा अबकहऊँ * दसरथ मरन राम बनजाऊँ॥
भरथ क्रियाकरि पितुदुखभारी * चित्रकोट जस कीन तयारी॥
सहित समाज कथा मग केरी * भरतमिलनि जसभयोबहोरी॥
जेहि बिधि गै बिदेहँ बनमाहीं * भा सतसंग राम के पाहीं॥
लै पादुका अवध जस आये * प्रजै दीनसुख सुजस बनाये॥
हुँआँ राम गय अत्री पासा * देखिराम मुखसब भ्रमनासा॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हति जयन्त जस भयोकृपाला * मार्‍यो बान बिराध कराला ॥
मिलि सरभंग सुतिक्षण जैसे * गयो अगस्त पास प्रभुलैसे ॥

दो० पंचबटी बसि लखन सँग भयो रामसतसंग।
ज्ञान भक्ति बैरागकी कथा ईस जिउअंग ३२४ ॥

चौ० पंचबटीबसिकथा पुरानी * कह्यो लखनसनरामबखानी ॥
गीध भेंट सुपन्याखै नाका * खरदूखन दल मार्‍यो साका ॥
सुपन्याखा लंकै जस गयऊ * निज चरित्र रावणते कहेऊ ॥
लखि भगनीगति रावन सोचा * गयो मरीचपास खल पोचा॥
लै मारीच कपट मृग भयऊ * पंचबटी खलवहि बन गयऊ॥
हरि सियराम सोच मन माहीं * तब प्रभु गये सेवरीके पांहीं ॥
खायो फल पम्पापुर गयऊ * सुग्रीवैं मन बिस्मय भयऊ ॥
हनोमान सुग्रीवैं भेंटी * दुसह बिहालभरम उरमेटी ॥
बालि मारि सुग्रीवैं राजू * कीन्ह्यों कपिन रामकर काजू॥
गये लंकै कपिसियसुधि लाई * हनोमानसब खबरि सुनाई ॥
लै कपि भालु लंक चढ़िगयऊ * रामेसुर सुभ थापत भयऊ ॥

दो० थापि नाम निज राम तब रामेसुर धरिनाम।
सेतु बांधि सैना गई रावण हितसंग्राम ३२५ ॥

चौ० गयोबसीठीबालिकुमारा * निस्चर मान सकल सिंघारा॥
लै दल लंका समर समाई * कोटिभांति भै बिबिधि लराई ॥
जेहिबिधि सक्तिलखनकेलागी * लाय सजीवनिकपिअनुरागी॥
जेहिबिधि कुम्भकरन का मारा * मेघनाद जस प्राण सिंघारा ॥
जेहिबिधिरामलखन कपिलाये * अहिरावण दल समरसुहाये॥
मारि नरान्तक खलदलभारी * मार्‍यो जस रावन अहँकारी ॥
तिलकबभीषनजेहिविधिसारा*बालिमीकलिखिबिमलबिचारा॥
आयो अवध कपिनदल साथा * राम बसिस्ट धरा पद माथा ॥
राम तिलक जस भयो अनंदा * कढ्यो सोच सबके भ्रमफंदा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो० अस्सुमेध की कथाकहि बालिमीकसुखधाम।
सियात्याग निजसर्मबस कुस लवकुससंग्राम॥
उत्तरकथा अनेकबिधि बरण्यों सहित बिराग।
राजनेति सुभ असुभदुख सबस्वावतमनजाग॥
अवध राज सरभंगजस भयो सोसकल सुसुप्त।
लीला अगम अपार प्रभु गुप्तार घाट भयेगुप्त॥
बालिमीक येहि बिधिकथा कह्योरमायणसार।
दसहजार बरसै प्रथम हर्यो सकल महिभार॥
दोवापर कर त्रेता कियो बदलिदीन जुग रीति।
करमरेखयहिबिधि टरै निजजनपरप्रभुप्रीति॥
सुनिअगरी मति रामजस सरगुन कथाप्रसंग।
बिस्नुलाल पद सीसधरि धनि बानी भवभंग॥
जसमति मोरी आगरी सुनिकै कथा तुम्हारि।
तससुनिहैं जो नारिनर मिलिहैं रामखरारि ३३२॥

इति श्रीसतसंगसागरेमानसेआनन्दकन्देब्रह्मचरितेअजोध्याआरन्नि किष्किन्धासुन्दरलंकाउत्तरराजेअजोध्यासामासेबरणनजस बालमीकरामायणनामएकतीसोअध्याय ३१॥

---

चौ०बालिमीकइतिसरगुनबानी*अबनिरगुनजसकहौंबखानी॥
सरगुन जसजग सकलसनेंही * निरगुण सालिकराम मतेही॥
रा निरगुण मा सरगुण माया * राजिउ ब्रह्मसो तनतरुछाया॥
पाई दास मद्धि अरधंगा *जिमिसुभअसुभलियेसमगंगा॥
रा सुभ असुभ सदाँ है माया * सुभ नहिं असुभदास पापाया॥
कोउ उलटा कोउ सीधा नामा * येहिबिधि दास जपैजगरामा॥
मरा मरा उलटा है माया * तीनहुँ लोक काल सबैखाया॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रा कहतै मा गई समाई * दूसर अच्छर बोलि न आई ॥
रा मा ते यतरा है अन्तर * बीजा बीच बृच्छ कहैं संकर ॥
दोउ अच्छर सम जेठरा लहुरा * कोकहिअजस लेय जगबउरा ॥
मनबुधिचितगुरुचरणप्रियागा * सुमिरिकहौंअनुभवअनुरागा ॥
सरगुणप्रभुजसबिदितजहाना * कहैं अनेकिन भाँति पुराना ॥

दो० अब निरगुणजससुमिरिहरि जो हरदम निजपास।
कहौंबिबेकिनहेत मैं जे कोउ निजप्रभुदास ३३३ ॥

चौ० बिनुनिरगुनदुखदूरिनसपने * जबलगिरामनउरबसे अपने॥
तब तक तिहुँपुर भवन अँधेरा * जनुघर कीन्ह्यौं जमन बसेरा ॥
सूरति मूरति गै जग खोई * तेहिबिनुजग बिलखैसबकोई ॥
कहौं कथा सोइ सब दुखहारी * सुजनसुमतिअगरीजगन्यारी॥
जेहिबिधिराम हिर्दय औतारा * तीनिलोक ब्यापक संसारा ॥
निरगुनसरगुनसम श्रुतिगावै * बिनु उर नयन देखिनहिं पावै॥
अँधेरेनका ज़स दिन तस राती * सुनिहरिकथानमनमतिराती ॥
नहिंसमुझिहैंअपनिमतिमोटी * रामकथा सुनि कहि हैं खोंटी ॥
जस आवैं घर तस फिरिजाहीं * सज्जन सुनिअनन्दमनमाहीं ॥
कहौं राम जस अंतर खोली * सालिकराम प्रेम मृदु बोली ॥

इति श्रीसतसंगसागरेमानसेआनन्दकन्देब्रह्मचरितेनिरगुण
जसप्रबन्धेहिर्देरामलाभेबरणननाम
द्वितीयतीसोअध्याय ३२ ॥

---

दो० मन मनुराजा तपकियो सति सतरूपा साथ।
नाम ब्रह्म निज प्रघट भये दै बरदान सनाथ ॥
रावन उर अहंकार है कुम्भकरन है क्रोध।
भाव बभीखन जानिये राम भक्त उर बोध ॥
मेघनाद है कामभट सकल चराचर जीति।



CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कोउसामने न जाय तेहि सबकाँपैभवभीति ॥
लंका लम्पट कर्म मा बसैं निसाचर भारि।
भव समुद्र खाँईअगम तेहिबिच बसैं सुरारि ॥
माया रानि मदोदरी अक्षयकुमारहै मान।
पाँचो तत्त प्रहस्त सुत राम भक्त उर ज्ञान ॥
दुरमुख दुइति बिचारि उर कर्मअकम्पनबीर।
भौ अतिकायअपारभट प्रमुखदम्भरणधीर ॥
मोह महोदर सुभट रण कोउ नहिं पावै पार।
नारान्तक खल लोभहै अहिरावनछलकार ३४० ॥

चौ० सकलमनोरथतर्कसमाजा * चिन्ताभ्रमसबरइयतिसाजा ॥
दोख पाप दुबिधा अरु छूती * यह रावन कै सयन बिभूती ॥
दम्भ गुमान गर्व तृस्ना खल * महाँ सुभट रावन के ई दल ॥
संसय सोच सो निस्चर भारी * दया धर्म जन केरि अहारी ॥
येहिबिधि निस्चर भटसंसारा * इनके अपर कोटि परिवारा ॥
करि तप खल पायो बरदाना * ई सैनापति नाम बखाना ॥
करि निस्चर जगभन्ड सराधा * गउवै धेनु बिप्र सुर बाधा ॥
महाबिकलभये सुरसब भारी * तब अपने मनजतनबिचारी ॥
बिना राम नहिं मरि हैं पापी * ई खल कपट रूप परतापी ॥
इन्द्री सुरन सहित तनु धरनी * नाम ब्रह्मपहँ कहिनिजकरनी ॥

दो० अहंकार रावण सुभट करि निज बस संसार।
यहुमारानहिं मरै कबौं बिना राम औतार ३४१ ॥

चौ० अहंकाररावनदुखदीना * कहौ ब्रह्म अब का हमकीना ॥
कह ब्रह्मै हमरौ बस नाहीं * सब मिलिचलौ आतमैं पाहीं ॥
लै धरनी सँग सुरन समाजा * चले आतम ढूंढ़न निजकाजा ॥
बीच म मिलिगे संकर दासा * तिन सबते असबचनप्रकासा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्रेम ते प्रघट सदाँ निज आतम * अस्तुति करै देव परमातम ॥
सुनि उरब्रह्म दास के बचना * करै प्रार्थना लागे अपना ॥

छं० जै २ सुखधामा उर निजरामासकलकामसुखदायक।
सबघट तुमबासीप्रभुअभिनासीकरौहमारिसहायक ॥
रावन अहंकारा दुख संसारा तन धरनी दुख भारी।
पालन गो देवा अपर न सेवा हरौ कलेस खरारी ॥
सुनि असबिधिबानीजुगनपुरानी उरअकासभैबानी।
धारौ मन धीरा हरिहौं पीरा मैं मरिहौं अभिमानी १२॥

दो० सुनिबिधिबचनसो आत्मके हिर्दय भई आनन्द।
तनधरनीसमुझायबिधिकट्योभरमकेफन्द ३४२॥

चौ० हिंयांदेवनिजधामगयोहै * सुनौं राम जस जन्म भयोहै ॥
अवध देहँ दसरथ मनु राजा * गै गुरु नाम पास निजकाजा ॥
सिंघीरिखि जेठरा उर आगी * सम समधि होम्यों अनुरागी ॥
आतम अगिनि भागिदै भागा * लेउसो मनु आपन अनुरागा॥
लै अनुराग भाग घर जाऊ * सो निज रानिन जायखवाऊ ॥
लै अनुराग भाग घर गयऊ * रानिन तीनिबाँटि सोइदयऊ ॥
आधा दीन सील कौंसीलै * आधेमआधान्नृपफिरिकरिलै॥
आधा कुमति केकई लीना * सुमति सुमित्रै आधा दीना ॥
नवधा भक्तिसो नउमीं सारा * प्रेम अनन्दसोचइत बिचारा ॥
मनके चारि पुत्र अवतारा * हरिहैं सकल धरनि के भारा ॥
आनँदरामलखनलखिलच्छन* सेसबिराग बिराट बिलच्छन ॥
सत्ति सत्रुहन भारत भक्ती * तीनौं भाइन की सुभ सक्ती ॥

दो० सील कौंसीलै राम अनँदकुमतिके भारतजान।
सुमतिके लछन बिराग सुत लै उछंग सुखज्ञान ॥
बालकेलिबहुबिधि कियो धरि बिराटभयजननि।
अवधअवधिआनन्दभये खुलिगैपुरुबकरनि ३४४॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चौ० बिसुवामित्रदासबिसवाँसा * पायेअनन्द बिरागबिलासा ॥
तत्तु बिसय ताड़का मराई * नीच कर्म मारीच उड़ाई ॥
विद्यावाँन राम आनँद दै * तीनिलोककीटार्यो सब भय ॥
बुद्धि अहिल्या जड़ मति नारी * आनँद राम चरण धरितारी ॥
ज्ञान जनकपुर गे दोउ भाई * जान जनक टूर्यो भवजाई ॥
बिकट धनुस भव सब भटहारे * हिर्दय सो चलै धाम सिधारे ॥
सीता सान्ति ज्ञान की कन्याँ * आनँद राम बेहि दै धन्याँ ॥
दीन्ह्योंब्याहिलखनश्रुतिकीरति * रामसुजससुतजगहरिपीरति ॥
सत्ति सत्रुहन दीन उरमला * लव सतसंग तीनौं पुर तुला ॥
बेहि मान्डवी भरत सो जाना * मति मान्डवी राम उरज्ञाना ॥
सुरति सुनयना ज्ञान कि नारी * चारि दमाद पाय सुखभारी ॥

दो० बेह्यो चारो भाय पुर मनु दसरथ उर चैन।
अपर कथा सुनु आगरी बिस्नुलालके बैन ३४५ ॥

चौ० असमुखदेखिकुटिलनृपमाखे * लोभमोहभटअसमुखभाखे
लेउ छोड़ाय सान्ति सियरामा * बिनुहमैं जीते रन संग्रामा ॥
यतने पर आय पारस रामा * पाँचो तत्तु बिखम संग्रामा ॥
तिन करि कोप राम दै ज्ञाना * दैधनु मुनि बनकीन पयाना ॥
चारौ भाय बेहि घर आये * कुमति केकई कोप बढ़ाये ॥

इति श्रीसतसंगसागरेमानसेआनन्दकन्देब्रह्मचरितेरामजन्मे
ब्याहसंजुक्तेबरणननामत्रेइतीसोअध्याय ३३ ॥

---

चौ० रामलखनसियबनहिंपठाये * अवधअनाथसकलबिलखाये
राम पठै बन मनुलै प्राना * तामस बास कीन भगवाना ॥
गयो भक्ति सुरसरि के पासा * नीच निखाद भेंटभइ दासा ॥
चरन धोय प्रभु पार उतारी * नीच करम सब भै छयकारी ॥
गयौ प्रयाग प्रीति समराजा * तीनहुँगुन त्रिबेनि अघभाजा ॥
भेंटि अछय बट उर बिसवाँसा * भरदोवाजमिलिभेंटिसोदासा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

आगे चलेउ ब्रह्म के पाँहीं * बालिमीक हैं जेहि बनमाहीं ॥
बालिमीक मिलि पूँछेउ ठामा * चित्रकोटचितबासिसुखधामा ॥

दो॰ चित्रकोट चितबासकरि तहँ भै बहुसतसंग।
ज्ञानजनक निजनामगुरु भरतभक्तिदुखभंग ॥
भरत पादुका पदलियो लउटेउ लै निरबान।
भरतजनकनिज धामगयेहिँयँबनरहेभगवान॥
छन्द प्रबन्धै बनलखौ गउरवगिरिसुभ बेद।
ब्रह्म बिचार मंदाकिनी हरैं सदाँ उर खेद ३४८ ॥

चौ॰ भरत कूपबर बात अकूफा * जाँय हनाँत पाप सुख तूफा ॥
कोलभिल्लमुनि मनन बिचारी * कीन्ह्यों सेवा खूब खरारी ॥
चलेउ अपर बन मूरति तीनी * अनँदबिरागसान्तिगुनहीनी ॥
एक बार आनँद सुख सियहरि * खल अजानजायन्तैछलकरि ॥
मास्यो बानी बान कृपाला * तीनि लोकतक फिरेउबेहाला ॥
नारद नाद दीन कुछु ज्ञाना * आयराम चरनन लपट्याना ॥
सरनागत लखि दीन बचाई * एक नयन करि दीन पठाई ॥
ब्रह्म आँखि फोरी भगवाना * माया आँखि रही जग जाना ॥
अत्री धाम गयो आनन्दा * अत्री आतम रूप सो छन्दा ॥
आगे चलि बिराध भइ भेंटा * मारि बिरोध दुइतिभ्रम मेटा ॥
मारि बिरोध चलेउ बन आगे * जहँ सरभङ्ग रूप अनुरागे ॥

दो॰ जातचलेयेहिबिधिबिपिनि सियासहितदोउभाय।
आनँदसान्तिबिराग उर मुनिवरभेखबनाय ३४६ ॥

चौ॰ मिलिसरभँगभावश्रीरामा * आगे चलेउ परम सुखधामा ॥
मिलेउ सुतिच्छनप्रेम कृपाला * गये अगस्त सोपास दयाला ॥
अहैं अगस्त ब्रह्म अवतारा * सोखेव भव समुद्र संसारा ॥
मिलि अगस्त आगे चलेरामा * पंचबटी परकरि बिश्रामा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पंचबटी पाँचौ हैं प्राना * प्रान वोदान बयान समाना ॥
गीध ध्यान भै भेंट कृपाला * दोउजनमिले मेटिजगजाला ॥
रावन बहिनि सरम सपनेखा * रूप राम कर सुन्दर देखा ॥
कीन्ह्योंछल काटेउ तेहि नाका * लखन बिराग रूप भटबाँका ॥
गइ खरदूखन पहँ बिलखाई * दोख चलेउ खल सैनसजाई ॥
त्रिसरा तीनि ताप दुखदाई * पंचबटी सैना खल आई ॥
दोख तीनि तापै दल भारी * यक छिनमा श्रीराम सिंघारी ॥

दो० तीनहुँ तापै दोखदल प्रभु कीन्ह्यों सिंघार ।
देव हरख आनन्द उर बरखैं सुमन अपार ॥
सपन्याखा लंकै गई कह रावनते हाल ।
खरदूखनबधसकलकहि मार्‌योरामकृपाल ३५१ ॥

चौ० अहँकाररावनक्रमनीचा * यहै संग लै चला मरीचा ॥
नीच कर्म मन कपट कुरंगा * अहंकार रावणके संगा ॥
माया मृग कञ्चन कर सुन्दर * सियआगे निकस्योखलखुंदर ॥
जान्यों सान्ति किहमधनमाहीं * भूली राम अंत सुख नाहीं ॥
जस २ धन तस २ दुख भारी * सपनेउँसान्तिनदुखअधिकारी ॥
सोकंचनमृगसांति सियालखि * कहआनन्दरामते असभखि ॥
कंचनमृग लावहु यहु मारी * तौ आनन्द सांति सुखभारी ॥
कंचन मृग मारे अपराधा * कोटिन चढ़ैं सीसपर बाधा ॥
कहा सांति छत्री तुम ज्ञाना * दुखसुखपापपुन्नि सम जाना ॥

दो० जैसे कोउ जग संतहोय माया तजे बिराग ।
सोफिरिमायाचाहकरिभ्रस्टसान्तिअनुराग ३५२ ॥

चौ० यहसुनिसौंपिबिरागैसान्ती * आनँदकंचनमृगबधैभ्रान्ती ॥
मार्‌योराम मृगा जब माया * तबउइँखललछिमनगोहोराया ॥
कहा सान्ति बिराग तुमजाऊ * नाम तुम्हार बंधु गोहोराऊ ॥
गयौ बिराग आयौ अहंकारा * सान्ति सियाहरिचलाअपारा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ध्यान गीध कीन्ह्यों जुधभारी * गिरेउ धरनि रावनपर जारी ॥
हुँआँ राम मायामृग मारी * नहिं लाग्यो कुछुहाथ खरारी ॥
नीच मरीच सो दै निजधामा * लउटत मिले लखनकारामा ॥
कहआनँद बिराग सुनु भइया * हुँआँसान्तिसियकोरखवइया ॥
बिना बिराग सान्तिको ताकी * अब दुखआवा नहिंकुछुबाकी ॥
आय दीख निज आसन सूना * सान्तिबिहीन भयो दुखदूना ॥

दो॰ सिया सान्ति लंका सोचैं परिन दुखनके धाम।
दुबिधा मा दोऊ गयउ माया मिले न राम॥
सांतिबिना आनंदनहिं बिनु आनँदनहिं सान्ति।
आनंदसांतिदुखारिलखि गये बिरागमुखक्रान्ति॥
येहिबिधिबिलखतफिरतबनआनँदसहितबिराग।
गयौ गीधके पास तब दीख बाँन उरलाग ३५५॥

चौ॰ गीधध्यानते पूँछेउ बाता * यहगति तवकैं कीन्ह्यों ताता ॥
यह गति रावनकरि अहंकारा * सिया सांति लइगा मतवारा ॥
सिया भेद बताय श्री रामा * आप देहँ तजिगा निजधामा ॥
ताहि क्रिया करि आनँद रामा * गये सेवरी सेवक के धामा ॥
तैं आरति पूजा बहु कीना * बैरभाव भोजन प्रभु दीना ॥
खायउ बैर कृपाल खरारे * लछिमन फेंकिदीन पिछवारे ॥
सोइ दोना दोनागिरि भयऊ * बैर सजीवनि सो सुख दयऊ ॥
सेवक बैर खाय श्री रामा * दै सेवरी का मन बिश्रामा ॥
मोहिं खवायौ तुम निज बैरा * अबनाकीन्ह्यों कोहुसँग बैरा ॥
असकहि राम चलेउ बनआगे * पम्पासर पर गये अनुरागे ॥
पंच ज्ञान इन्द्री पम्पापुर * जहँ सूरति सुग्रींव बसैं उर ॥
श्रवननयन जिभ्भ्या अरुघ्राना * त्वचासो इन्द्री ज्ञानप्रमाना ॥
बालि सो बलहै पद निरबाना * अंगद अनुभव बेद प्रमाना ॥
तारा तन मन हैं हनुमाना * भई अनन्द भेंट भगवाना ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

आनँद राम लखन बैरागा * हनोमान भट मन अनुरागा ॥
लीन चढ़ाय पीठि दोउ भाई * सुग्रीवैं लै राम मिलाई ॥
आनँद सुर्ति मिले अति प्रीती * पावक साखी दै श्रुति रीती ॥

दो० श्रुतिसुग्रींव सो राम मिले सब भ्रमदुखमदखोय।
कहा बिपति सुग्रींव सब मैं डरिहौं दुख धोय ३५६॥

चौ० पदनिरबानपायअभिमाना*दीननिकारि बंधु श्रुति जाना ॥
सुनि भगवान ब्याध तनु धारी * मार्‍यो बालि महाँ अहंकारी ॥
दै सुग्रींव राजि पम्पापुर * मँगनभयोकपिभालुसकलउर॥
जामवन्त निज जान जहाँना * भावभालुलै मिलि भगवाना ॥
जामवन्त लै कपि अरु रिच्छा * रामचन्द्र ते माँग्यो धिच्छा ॥
अधरसिला अधबिचपररामा * निन्द्याअस्तुतिसमसुखधामा ॥
तहँ पहुँचे सबदल भट भारी * रामचन्द्र चरनन सिरधारी ॥
लै दिच्छया चलिभे सियखोजा * हनोमान धरि चरण सरोजा ॥
दीन्ह्यों रामनाम मणि मुँदरी * जेहिबलजाव उदधि भौउतरी॥
मुँदरी पाये चल्यो हनुमाना * सियासान्ति उरखोजपयाँना ॥

दो० सियाखोजगये सकलदल मिल्यो सुभटसम्पाति।
हैं समता सम्पातिसुभ कहिसिय जस बहुभांति ॥
गयो तीर भव सिन्धु सब जामवन्त कह बैन।
वहि पारै को जाइहै है जोधा यहि सैन॥
पार जान नहिं कोहुँकह्यो सकल डरे भवदेखि।
जामवन्तहनुमानते कह्योसोबचन बिसेखि ३५९॥

चौ० मानरहितमनसुनोहनुमाना* तुमबिनुकोकरिलंक पयाँना ॥
आनँद राम हेत संसारा * कविकपिभा तुम्हार औतारा ॥
आपन रूप सँभारौ ताता * लंकै जाउ सो काम बिधाता ॥
जामवन्त अस दीन्ह्यों ज्ञाना * फूलिभयउ गरगज हनुमाना ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चीन्हिरूप निज आपन कामा * धरेहु रूप बिखम संग्रामा ॥
कहौ तो रावन सब दल मारी * लावौं लंक त्रिकूट उखारी ॥
जामवन्तकह सुधि भरि ताता * लावौ मरिहैं जाय बिधाता ॥
लंकै चलेउ प्रबल हनुमाना * सुधि सुरसा टूरेउ अभिमाना ॥
भव समुद्र निस्चर छलकारी * हनोमान मार्यो भट भारी ॥
कोटिन सुधि कपिके उरमाहीं * यकसुधिसुरसाका करि पाहीं ॥
दो० सुधि सुरसा अरु छल सुभट टूरि मान बधि बीर।
लंकाकीनपयाँन कपि सुन्दर बिकटशरीर ३६० ॥
चौ०छलनिस्चरभवसरकेमाहीं * सकल जीव छाँहीं धरिखाँहीं ॥
मारि निसाचर सुरसै माना * टूरि चलेउ आगे हनुमाना ॥
चढ़िगिरि बेददीख कपि लंका * लम्पट लंका बसै असंका ॥
चोर जुवाँरी परधन हारी * ज्ञानबिहींन हिर्दयअँधियारी ॥
अजय मीन सो धेनु अहारी * कोटिन जीउ खाँयँ संसारी ॥
कोउकोहु डाटैकरि अभिमाना * रहुखल लेहौं कालिहतवप्राना ॥
कोउ जोधायकयकसनभिरहीं * मल्लजुद्ध कोटिन भटकरहीं ॥
चहै जो मारै चहै जो डाँड़ै * चहैजो जेहिमाहिखोदिकैगाड़ै ॥
मतलब यार निसाचर लंका * बसैं मयावी क्रोध असंका ॥
धन कुल रूप बेद मद भारी * ई निस्चर घेरे संसारी ॥
अलम्दुन्दि लंका संसारा * रावन सुनैं न काहु पुकारा ॥
दो० येहिबिधिलंकादेखिकपि सब पसुसमखलभारि।
कोउ भेड़हा कोउसुअरखर कोउ हाथीमतवारि ॥
कोउ भइँसा कोउ बैलमुख कोउ गैंड़ा कुदरूप।
कोऊ स्वानमतवारखल पापभराधन भूप ३६२ ॥
चौ० चढ़िगिरिबेदसोसबहनुमाना * देख्यो लंकादुर्गजहाँना ॥
करि बिचार निजमनहनुमाना * केहि बिधिलंकाकरनपयाँना ॥
करि बिचार निस्चर तनु धारी * बालरूप नहिं लखैं नरनारी ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

लंका पइठेउ सुमिरि खरारी * निस्चर भय न रेणुउरधारी ॥
लम्पट लंका ते भइ भेंटा * प्रान लीन खल एक चपेटा ॥
सिया सान्ति खोज्यो सबभौना * ना पायौ कुमारकहुँ पवना ॥
खोजत मिले भभीखन भावा * सिया सान्तितिनभेदबतावा ॥
गये सिय पास मुंद्रिका दीना * रामबिरहासियदुखहरिलीना ॥

दो॰ सान्तिसियादुख मन हस्यो भक्त राम हनुमान।
मुँदरीमूँदी बात उर प्रघट आतमा ज्ञान ३६३ ॥

चौ॰ सान्तिसियामनकपिबरदाना*रहौअनन्दहिर्दयभगवाना॥
लै असीस सिय अज्ञाकारी * पइठि परेउ रावन फुलवारी ॥
खायौ फल तरु तर्ज उखारी * अछयकुमार सोमानैं मारी ॥
मेघनाद भट आयौ कामा * हनोमान मन करि संग्रामा ॥
रथ समेत खल गँगँन बहाई * गिस्यो आय धरनी अरराई ॥
मुरछा जगी उठा खल पोंचा * करि बिचार अपने मनसोचा ॥
जीतन जोग न कपि रणधीरा * निजजनेव खलबाँधिसरीरा ॥
जो नहिं बँधै जनौं के माहीं * सूतु आजुते पहिरौं नाहीं ॥
मेघनाद प्रण कपि मनजाना * ब्रह्म अस्त्र जो मैं नहिं माना ॥
तौ निस्चर डारै मद बोरी * असबिचारकपिफँस्योबहोरी ॥

दो॰ लइगा ठिग अहंकारके रावण सभा असंक।
हनोमान ठाढ़े भयौ लखि रावण भट बंक ॥
कह कपि ते तैं कौन है मम बाटिकाउजारि।
रखवारे घायल किये मम सुत डारे मारि ॥
रामचंद का दास मैं नाम मोर हनुमान।
छुधालागिफलखायलै तरु उखारि कपिज्ञान ॥
यतने पर तव सुत गयौ खल मारै अज्ञान।
मोस्यो तन रिसआय गै मास्योंकढ़िगेप्रान ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

यह सुनि रावन कोप करि पूँछबँधाय मस्याल।
क्रोधअगिनिलैफूँकिदैद्याखौकपिकरख्याल ३६८॥

चौ० कूदिपवनसुतनभपरचारा * लंका फूँक्यौ दसौ दुवारा॥
दस इन्द्री दसहू दरवाजा * लम्पट लंका जरै समाजा॥
फूँकि लंक चूरामणि लीना *निजदलआयकुसलकहिदीना॥
सब दल गयो रामके पाँहीं * चूरामणि दै सुख मनमाहीं॥
राम नाम ते जो मन कूरा * सो हनुमान दीन लै चूरा॥
सिया सान्ति सुधि पाय कृपाला* लै दल चले रावनके काला॥
उतरे जाय सिन्धु भवपासा * यह सुनि चले बभीखनदासा॥
भाव, बभीखन आनँद रामा * दोउजनमिलेपरमसुखधामा॥
भव सर सेतु बाँधि स्तुति आपा * ताहि ठउर रामेसुर थापा॥

दो० रामेसुर निज स्वास हैं चलैं सकल संसार।
भव समुद्रस्तुतिसेतुपर धरानामश्रुतिसार ३६९॥

चौ० नामथापिनिजआपनरामा* जोदरसनकरितेहिममधामा॥
जो गंगाजल भक्ति चढ़ावै * सो निज आतम दरसन पावै॥
जो दरसन करिहै मम सेतू * लै श्रुतिसार जीति भवखेतू॥
अस महिमा करिलै दल पारा * जाय परा दल लंक किनारा॥
गये अंगद रावन समुझावन * सुनैं न अनुभवमूढ़ सिखावन॥
अहंकार रावन नहिं माना * जोअनुभवअंगदकहिज्ञाना॥
कह अनुभव मानौं अहंकारा * नाहिं तो भयो सपनसंसारा॥
कह रावण जाजा खल बंदर * कोटिन राम लीलिमैं अन्दर॥
अस सुनि अनुभवअंगदकोपा* सभामाँझप्रणपदनिजरोपा॥

दो० अनुभव अंगद पद सब्द रोंपि कहा तेहिंबार।
सत्ति रामतोहिंमारिहैं पद नहिं टरै बिचार ३७०॥

चौ० नेतिसोपद टारैं अहंकारा * कोटि बिघ्न जिमिसंतसिंघारा॥
कह अस सब्द सुनौं अहंकारा * सदाँ रामकर अहसि अहारा॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मैं कहि चला सब्द पद बंका * कालिह समरहोइहैं तव लंका॥
अस कहि गयो राम के पाँहीं * कह अंगद खलमानत नाहीं॥
सुनि रावन के बचन करारा * अहंकार खल करौं अहारा॥
अस कहि प्रात सैन सबसाजा * बजे जुझाऊँ अनहद बाजा॥
कपि अरु रिच्छ हूह दै डंका * फाँदे जाय सूर सब लंका॥
कपि कामना भाव सब भालू * चढ़े कँगूरन निस्चर कालू॥
इत रामादल उत खलनिस्चर * समरहोय रुधिरनके खिच्चर॥
लक्षिमन अरु अंगद हनुमाना * उत दल मेघनाद बलवाना॥

छं० मेघनाद बलवान जोधा काम सम दल बसिकिये।
मारि माया बान बानिन कपिन के संकठ जिये॥
तबलखनभटबइरागमायानिमिखिमातमहरिलियो।
लैबान काल समानकर खलकामकेउर हनिदियो॥
मेघनाद खल काम भट गिरिपर्‍योसुत महिरावनं।
तेहि डारि लंकै लै गयौ हिंयँ रामदल सुखपावनं॥

दो० मेघनाद लंकै गयौ गये मुरछा बलवान।
निज पितुआगे देखिकै मूँढहिर्दय सरमान॥
मेघनाद मन सोचिकै लै दल प्रात तयार।
आजु लखनके मारिहौं बीरघातिनी धार॥
हिंयँरामादल प्रात उठिचले समर बलवान।
हनोमान अंगदलखनसैंन अपार अमान॥

चौ०दोउदलचढ़ेसमरकेमाहीं * लछिमन चलतछींकभै ठाँहीं॥
गयो समर भै सुरू लराई * दोउ दिसिबाँनचलैं समुदाई॥
परबत बेद बीर कपि मारैं * कोटिन कचरि निसाचर डारैं॥
निस्चर बाँन चलावैं माया * त्रिसुनासोच सोमोंह अदाय॥
मारि कपिन निस्चर सिंघारा * मेघनाद करि क्रोध अपारा॥
चढ़ि नभ बरखै बाँन कराला * चिन्ताबाँनकठिनखलब्याला॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मारि कपिन घायलदल कीना * तबकरिकोपलखन सरलीना ॥
मार्‌यौ मेघनाद की छाती * गिराघूँमि महिखल सुरघाती ॥
फिरि मुरछा जागी अभिमानी * साँगि सो बीरघातिनी तानी ॥
दो० ब्रह्मसक्ति लै साँगि कर मैं ब्यापक संसार।
इन्द्रीजित बलवान भट कामरूप औतार ३७४ ॥
चौ० ब्रह्मसक्तिलछिमनपरमानी * लीन्ह्यौंघाव मानिउर आनी ॥
ब्रह्मसक्ति लै खैच्यौं तेजा * अब यहि दुस्टकाल घर भेजा॥
मारेसि लखन हिर्दयमा लागी * जूझ्किबिरागलखन अनुरागी॥
हनोमान लछिमन लै आये * बन्धु देखि रघुपति दुखपाये॥
जामवन्त तब वैद बतावा * सुख सुखेन हनुमत लै आवा॥
उत्तर औखधि कहा सुखेना * पठवउ राम कोहू का लेना ॥
तबहिं राम हनुमान बुलाये * मूरि सजीवनि खोज पठाये ॥
कूदि चले उत्तर हनुमाना * गये दोनागिरि पर बलवाना ॥
नेंम सो कोलनेंमि मग मारा * लै दोनागिरि चले अपारा ॥
आयउ अवध भरत बलदेखा * हालबताय सो चल्यो बिसेखा॥
मन अनुराग भक्ति अनपावन * दोउजनभेंट परमसुख भावन॥
हिंयाँ राम कीन्ह्यों दुख नाना * तबतक आय गयो हनुमाना ॥
सेवरी फल बर मूरि खवाई * उठिबइठेउ लछिमन हरखाई॥
भइ रामा दल आनँद भारी * सब कपि कै जै जैति पुकारी ॥
दो० जहां ते लायौ बैद कपि तहँ फिरि दीन पठाय।
रामादलआनन्दभये निस्चरदल दुखदाय ३७५ ॥
चौ० सेवरीबेरलखननहिंखाया * तेहिहित सक्ति लागिगै माया॥
मम निजदास निन्दि परसादा * सो लछिमनसमसहैबिखादा॥
असरघुपतिमनप्रणनिसिबासर * निन्दै दास जाय सक्ती वर ॥
उठे लखन भये समर तयारा * रामचन्द्र चरनन सिरधारा ॥
आजु इन्द्रजित का मन मारौं * तव नहिं दास धनुस करधारौं॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

असकहि चले लखन बइरागा ॥ आजुसमरखलहतौं अभागा॥
गयौ समर उत निस्चर आये ॥ मेघनाद रण नाद सुनाये ॥
आवा कूदि लखन के आगे ॥ मारि अकाम बान अनुरागे ॥
मेघनाद जूझ्यो बलवाना ॥ भुजा गयो लंका परवाना ॥
काटि बिराग काम भट सीसा ॥ धराराम पहँ आय अहीसा ॥
सोच सिलोचनिउर अँगनाई ॥ निजपति बाँह देखि मुरझाई॥

दो० मेघनाद सन प्रबल भट अबकोउ लंका नाहिं।
धनिलछिमनबैरागभट अनंदतीनिपुरमाहिं ३७६ ॥

इति श्रीसतसंगसागरेमानसेआनन्दकन्देब्रह्मचरितेरामबनबासे
मगचरित्रेसन्तआनन्देसुपन्याखानाककाटेखरदूखनबधे
सीताहरणेसेवरीफलप्राप्तेसुग्रीवसोकनास्तेसीता
खबरेलंकाचढ़ेलखणसक्तिमेघनादबधेबरणन
नाम चतुरतीसो अध्याय ३४ ॥

---

चौ०सोचसिलोचनिगइप्रभुपासा ॥ पावतसीससोचजरिनासा ॥
काम मरत टूटेउ अहँकारा ॥ रावन उरबहु सोच बिचारा ॥
मेघनाद सुत जूझत कामा ॥ उठा हमार राज सुख धामा ॥
कुम्भकरण पहँ गयौबिलखाई ॥ क्रोध जगाय वृत्तन्त सुनाई ॥
लखिदुखबन्धुपियेसिमदभारी ॥ चला अकेलै समर सुरारी ॥
भाव बभीखन करि प्रभु बोधा ॥ कुम्भकरन आवत भटजोधा ॥
क्रोध समान न भट संसारा ॥ जैं कीन्ह्यौं चरअचर अहारा ॥
सोइ आवत अब तवदलमाहीं ॥ यहि सम बरनीभटदलनाहीं ॥
हनोमान चहैं कुछ घरि खेता ॥ अड़ैं बीर भट प्रबलसचेता ॥
कुम्भकरण सुनि धायो बीरा ॥ हनोंमदादि कपिभालुसरीरा॥
वेहँसा देखि टीड़ि सम बीरा ॥ लाग्यो मरदनकपिरणधीरा ॥

दो० कुम्भकरन रणमाचढ़्यो मनु बउँड़रअसमान।
खरपाता सम भालुकपि लैसमेटिबलवान ३७७॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चौ० भालुकपिनदलखलमुखडारे * निकरिपरैं सबइन्द्रिनदोवारे ॥
कोटि २ परबत लै बेदा * मारैं कपि खलतननहिं भेदा ॥
जिमिगजदेहँ आकफल चोटा * बेदबचन जिमिमानैं न खोटा ॥
कुम्भकरण जिमिक्रोधअसंका * कपिदलसकलबिदारेसिबंका ॥
तब सुग्रींव सुरति लै काँखा * लंकै चल्यो सहजनहिं माखा ॥
हनोमान मन भट बलवाना * धायउकोपिसुमिरि भगवाना ॥
यक मुस्टिका पीठि हनि मारा * गिराबेकलमहिं क्रोधअपारा ॥
गये सुग्रींव निपुचि तेहिं बारा * नाककाटि उड़िचलेउप्रचारा ॥
नाक कान काटे निज जाना * फिरा क्रोध खल मनसकुचाना ॥

दो० देखि क्रोधकर रूपसब भागि चले बलवान ।
कोउ सामने नजाय तेहि त्राहि २ भगवान ३७८ ॥

चौ० लागेउपटकनकपिअरुभालू * कहँजइहौखलआयउँकालू ॥
कोटिन कपि दै धूरि मिलाई * कोटिन दाँतन गयौ चबाई ॥
भगे भालु कपि गये प्रभुपासा * त्राहि २ कहि बचन प्रकासा ॥
देखि राम कपि भालु दुखारी * चलेउ धनुस लै बाँन सुधारी ॥
कपि कामना भाव मम भालू * ई मारे तैं मैं तव कालू ॥
गये रन माहिं दीखखलआगे * छिमा बाँन मारेउ अनुरागे ॥
जूझ्योकुम्भकरन खल जोधा * दूसर बाँन मारि निजबोधा ॥
लीन्ह्यौं क्रोधै प्रान निकारी * देवन बरखि सुमनझरिकारी ॥

दो० कुम्भकरनभटक्रोधमरिभयेरामादलअनँद ।
नारदादिजसगावहींचहुँजुगप्रभुजससनँद ३७९ ॥

चौ० क्रोधमरतखोवाअहंकारा * भई नाँसि हमरे परिवारा ॥
करि निज बन्धुकर्म खल नाना * तबतकअहिरावणअभिमाना ॥
आयो बन्धु पूँछि निज हाला * सुनत बन्धु गतिभयो बेहाला ॥
फिरि धरि धीरजकहेसिबिचारी * मैं दोउ बन्धु हरौं असुरारी ॥
अस कहि परी रैंनि अँधियारी * हनोमान कै रहै रखवारी ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भेख बभीखन धरि हरि लीन्हा ❋ कपटरूप हनुमान न चीन्हा ॥
लै पाताल धरेसि भगवाना ❋ हिंयँहरिगेप्रभुसबदल जाना ॥
तबहनुमान सकल समुझावा ❋ भेखबभीखननिसिकोउआवा॥
पुनि अस कहा बभीखनबानी ❋ अहिरावन लइगा अभिमानी॥
यहु सब भेद जानि हनुमाना ❋ भयोक्रोधअतुलितबलवाना ॥

दो० जो कोउ जायपतालमा सो लावै भगवान ।
असपायोजबनिजपताकूदिचल्योहनुमान ॥
गयौपतालकरालहोयमास्योखलअभिमान।
ममकामद मायाहन्यो पीठिधस्योभगवान ॥
मकरत्ध्वजनिजधर्मसुत ताहि राजपाताल ।
दीन चल्यौ लै कूदिकै लायौ दीनदयाल ॥
रामादल आनन्दभये रामलखनसबभेंटि ।
सालिकराम कलेसगये हनोमानदुखमेंटि ३८३ ॥

इति श्रीसतसंगसागरेमानसेआनन्दकन्देब्रह्मचरितेकुम्भकरण
जुद्धेअहिरावणप्रभुहरेहनोमानअहिरावणमारेममकामद
दहेमकरत्ध्वजराजप्राप्तेरामलाभेरामादलअनन्दे
बरणननाम पंचतीसो अध्याय ३५ ॥

---

चौ०रावनहुँआँखबरिअसपावा❋ राम लखन हनुमतलैआवा॥
अभिमानैं अहिरावन मारी ❋ तिलकपुत्र मकरत्ध्वज सारी ॥
अभिमानैं गतिसुनि अहंकारा ❋ मम ऊपर सिवकृपा बिसारा ॥
गई अनन्द हिर्दय दुख पावा ❋ मंत्री धूमकेतु समुझावा ॥
अबुध सो धूमकेतु बलवाना ❋ तैं पुरानि कुछु बात बखाना ॥
दीन बहाय मूल सुत जोई ❋ ते सब जिये बोलावौ सोई ॥
अन्तरिच्छपुर अन्तर रहिता ❋ कर्म नरन्तकबसैदलसहिता ॥
धूमकेतु अस कह्यो अधर्मा ❋ तब अहंकार बोलायो कर्मा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

नारन्तक आयो बलवाना * प्रथमैं समर कीन हनुमाना ॥
नारन्तक खल कर्म घुमाई * पटकि दीन हनुमान गुसांई ॥
दो॰ कर्म प्रबल जग जानहीं तिनसे भिरै न कोय ।
दया होय जाके हिदैं यहिजीतै रण सोय ३८४ ॥
चौ॰ भई अनेक मारु रनमाहीं * कर्मते कोउ जग जीततनाहीं ॥
तब नारद अस भेद बतावा * रघुपतिदधिबलदयाबोलावा ॥
सुग्रिव सुत दधिबल दयधरमा * तेहिं मास्यो नारन्तक करमा ॥
दया नेह करम मास्यो बाना * नारन्तककम जूझि अज्ञाना ॥
फिरि रावन भट भयो अनाथा * बिन्धूबिदयात्रिय जरि साथा ॥
रहा अकेले लंका माहीं * सबदलबोलिकहा निजपाँहीं ॥
जो रन मरै चलै मम साथा * जूझै जीवन मुक्ति सनाथा ॥
सरस्वति समर बाँनचलैंबाँनी * मारैं राम अनँद उर ताँनी ॥
की जुझिहौं की फिरैं बहोरी * रामसहित दल खाँउँ बटोरी ॥
दो॰ रावन कर परिवार सब कीन राम सिंघार ।
तब रावन के ज्ञानभा लाग्यो करन बिचार ३८५ ॥
चौ॰ जिमिसुनिकथाबिनाबिसवाँसी * डास्योखायवेदअभिनासी ॥
पंडित रामछन्द कपि सैंना * मैं अहंकार खाँउ श्रुति बैंना ॥
असकहिचलासमरश्रुतिमाहीं * अपने हदभरि मानिहौं नाहीं ॥
मानबु जूझबु मम संसारा * नामानबु मम जीति बिचारा ॥
चलति मदोवरि माया रानी * पकरि फैंट बोली सुभ बानी ॥
जो पति गयो राम के पासा * हमरी चूरी भई बिनाँसा ॥
मरि हैं बोध बाँन बिकरारा * जूझिजाउपति तुम अहँकारा ॥
बोध बाँन जेहि के उर लागा * प्रान निकरिगै बन अनुरागा ॥
भयौ बिदेहँ देहँ सुधि नाहीं * हम माया राँड़ै घर माहीं ॥
बिनु अहंकारी माया रानी * जिमिकबोंसुखनहिंमायबिरानी ॥
बोध जाहि सो हिर्दय बिचारा * तन मन धन रामैं परिवारा ॥



CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो॰ छूट अपनपौ हिर्दय ते जब जूझ्यो अहंकार।
येहिबिधि करौबिचारपति मानौंबचनहमार ३८६॥

चौ॰दयाधर्ममोहिं दैदुखभारी * घर २ फिरब बिपतिकी मारी॥
जबतकपतितुमजियोअहँकारा * सब हमार धन है संसारा॥
रहैं अनंद धरी हम गाड़ी * खर्च बन्ध माया नित बाढ़ी॥
सिया सान्ति प्रभु देउ पठाई * नाहिं तो प्रान लेहैं रघुराई॥
सुनि त्रिय बचन कहाअहंकारा * तुम अबलाबुधिहींनबिचारा॥
जियत सान्ति नहिं देहौं रामा * करिहौं सरमुखरन संग्रामा॥
चला अहम्पद भट बलवाना * मन्दोदरि अपने मन जाना॥
पति पर काल रह्यो मंड़राई * कहौ करै कोउ कौन उपाई॥
रावन लीन सकल दलसाथा * चल्यो कोपि रनजहँरघुनाथा॥
महाप्रलय घन समदल भारी * आवत देख्यो राम सुरारी॥

दो॰ कारे मेघ समान खल दामिन सम तरवारि।
गरजैं मेघ सो घोरखल बाँनबिष्टिझरिकारि ३८७॥

चौ॰उतरावनबाँननझरिलाई * इतकपिभालुसोप्रभुसिरनाई॥
चले समर मरकट रणधीरा * लै २ परबत वेद गँभीरा॥
लागी मारु होन रन माहीं * अपनबिराननकोउलखिपाँहीं॥
उत रावन इत राम दुहाई * निज २ बरणी परीलड़ाई॥
जामवन्त अंगद हनुमाना * कहि प्रभु जै निस्चर लैप्राना॥
सब रावन दल कपि सिंघारे * रह रावण अकेल पर चारे॥
पदुम अठारह जुत्थप बीरा * सबमिलि रावण घेरि सरीरा॥
परबत बेद बृस्टि झरिलाई * रावनऊबि चल्यो नभधाई॥
कोटिन रावन धरे सरीरा * मारैलाग कपिन रण धीरा॥
रावन कोटि देखि कपि भागे * त्राहि २ रघुपति अनुरागे॥

दो॰ हनोमान मन प्रबलभट अंगद अनुभव बीर।
जामवन्त निज जान भट मरदैं कपट सरीर॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

देखि दुखारी बीर सब आयो रण रघुबीर।
ताँनि सरासन बाँन कर हरि माया रणधीर॥
रावन रहा अकेल रन लीन बोधकर बाँन।
मार्‍यो रावनहिर्दयसर जूझ्यौंभटबलवाँन॥
देवन जै जैकार करि बरखैं सुमन अपार।
सालिकराम अनन्द भै कटी देवदुखधार॥
अस रावणसिर बहुबढ़े काटेउ श्रीभगवान।
मानिबातफिरिभूलिगे पुनिमान्योंपरमान ३६२॥

चौ० कर्म रूप रावनहैं रामा * कहिसुभअसुभसोसालिकरामा॥
सुभरामा दल असुभसोरावन * कर्म लड़ाई भई सुहावन॥
कबहुँ असुभ सुभ कर्म नसावै * रामचन्द्र दल सब बिड़रावै॥
कबहूँ सुभ श्रीराम वोदारा * रावणअसुभसो दलसिंघारा॥
ना कहुँ रावण ना कहुँ रामा * कर्म छाँड़ि दयाखौ सुखधामा॥
महाँ पवित्र सो ब्रह्मण रावन * बरण अठारास्तुतिसुभगावन॥
नीच करम जबते सिरधारा * तबते निस्चर भयो अपारा॥
राम भयो जबते बन आये * तजिसुखसबमुनिभेखबनाये॥
सुर महि सन्त धेनु दुज कारन * निज कलेस सुखदे संसारन॥
जेहिका हित जेहि भे जगहोई * सत्ति राम जान्यों उर सोई॥
तीनि लोक तक कर्म पसारा * यहिबिधिसृस्टिरचीकरतारा॥

दो० कर्म के कबहूँ जाति नहिं चहै सुभअसुभबिचार।
जेहिके मन जस भावही सो तस निजसिरधार॥
औंबर कर्म चहुँ जुगन मा राम निसाचार केरि।
जबचाहैंतबलेयजोइ जेहितनजसबिधिहेरि ३६४॥

चौ० रावन के जूझत संसारा * उतरिगयो सुरभवसिरभारा॥
लागि करै अस्तुति मुनि देवा * इन्द्री इन्द्र मनन मुनिसेवा॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दै दुन्दभी छन्द बर बानी * जै कृपाल कर सारँगपानी ॥

छं० जै जै कृपा अनन्दनं खल खंडि देव फंदनं।
अहंकार रावनं इन्द्री सुरन सतावनं ॥
श्री रामचन्द्र मारनं अहँकार रावण छारनं।
लखन जय बिरागनं खल काम मेघनादनं ॥
पछारि गाल फारनं अनन्तकी जै २ भनं।
हनुमान मन सपूतनं भट मारिबल अकूतनं ॥
सहित दल प्रनामनं आनन्द रामचन्द्रनं।
सुरेस मुनिइति बन्दनं तबआय सम्भुसंतनं ॥
प्रनाम करि महेसनं आनन्द राम आत्मनं।

छं० आनन्दरामनिज आतमाव्यापी जहाँनसनातनं।
सामान सर्वभावं दिनेसं अहँकाररावणभक्षनं ॥
निज इन्द्रिके सबदेवता बन्दी खलासैभईं ओयं।
अहँकारबसत्रैइलोकप्रभुअसनाहिंयेहिमारैकोयं॥
भवसिन्धुसेतुबँधायश्रुतिममथाविमूरति लिंगनं।
संसार लंका बन बिखम अहंकार रावन सिंघनं ॥
तुम सूर्ज बंस आनन्द पूरन राजा बनैं अहेरिनं।
अनेकभावसाधन बिपुल कपिभालु लंकाघेरिनं ॥
बधिसोखलबनजीवसुखभैसकलसुरआनँदभयो।
निजतनबपुखब्रहमंडभीतरलंकलम्पटक्रमगयो ॥

दो० अबसतसं निज भक्ति प्रभु देउ दया उर माहिं।
आनँदसान्तिबिरागउरबसोहिर्दयममपाँहिं ३९५ ॥

चौ०करिअस्तुतिसिवगयेकैलासा* हिंयँ रावनकै लंकलहासा ॥
कीन बभीखन गति तेहिं जाई * लछिमनदीन्ह्योंतिलकचढ़ाई॥
भाव बभीखन दै निज राजू * लखन बिरागकीन प्रभुकाजू॥
आय राम पहँ माथ नवाये * सिया सान्ति हनुमतलैआये॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पुनि सो पुश्पक अजबबिमाना * दलसमेत तेहिपरभगवाना ॥
चढ़िउड़िचल्योअवधिकीओरा * कीन संख धुनि देवन घोरा ॥
हनोमान कीन्ह्यों अगवाँनी * जाउ भरततें कह्यो बखानी ॥
लखनसिया प्रभु कुसलसमेता * आवत अवधै कृपा निकेता ॥
अस सुनि कूदिचल्यो हनुमाना * पहुँच्योजाय अवधबलवाना ॥
गयो भरत पहँ धरि पदसीसा * राम कुसल सब कही कपीसा ॥

दो० कर्मनिसाचरजस बध्यौ क्रम २ कियो बखान ।
सियाअनुजप्रभुजबचल्योंकह्योकुसलहनुमान ॥

चौ० भरतभक्तिप्रभुसुनतसँदेसा * भेंटेउमनकपि मिटेउ कलेसा ॥
लखन बिराग अनँद ममरामा * सियासान्तिकबमिलैंबिश्रामा ॥
कह हनुमान कछुक घरि माहीं * आवत अवधराम तव पाहीं ॥
कही खबरि पलट्यो हनुमाना * हिंयाँ भरत घरगयो सुजाना ॥
राम कुसल सब अवध सुनाई * चल्योंमिलनमुनिसहितगोसाईं ॥
उत हनुमान गयो प्रभु पासा * भरतकुसलकहिसबनिजदासा ॥
अवधनिकटजब आयबिमाना * दल समेत उतरे भगवाना ॥
आनँद राम देखि गुरु नामा * परेउ चरण भै मन बिश्रामा ॥

छं० मिलेभरत भक्ति अनन्दराम आकाम तन अनपावनी ।
फिरिभेंटि प्रभु सत्रुहन सतिआनन्द मिलनिसुहावनी ॥
भक्ति भरत बिराग लछिमन मिलत सुख कबि को कहै ।
पुनि लखन बर बइराग सति सत्रुहन भेंटत दुख दहै ॥
मिले अनँद राम कौंसिल्य सीलै मातु मनमोदक भरे ।
फिरि मिले मातु केकई कुमतिहि दुसह गल्यानैं जरे ॥
पुनि भेंटि सुमति सुमित्र आनँद राम अनुरागी हिये ।
लखन सुत बइराग सुमित्रा सुमति भेंटें उर लिये ॥
पुनि भेंटि लखन बैराग केकइ कुमति उर सकुचावहीं ।
मिले राम पुरबासिन बहुरि आनँद असीसै पावहीं १४ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो॰ रामादल भरि सबमिल्यौ हरखि आसिकापाय ।
अवधि अवध आनँद हिये रामैंचल्योलेवाय ॥
गयौ राम निजअवध जब होंयँ आरतीदोवार ।
फूल बृस्टि नभते भई प्रेम सो आँबा भ्वार ॥
गयो राम निज भवन जब घर२ अवधअनन्द ।
सालिकरामकलेसगयेब्रह्मदोवार पढ़ैंछन्द ३६६ ॥

चौ॰ गयोधामसियपदधरिभारथ * दीनअसीसभक्तिसाँतिसोवारथ ॥
सत्ति सत्रुहन सिय पद सीसा * दीन सान्ति पद प्रेमअसीस ॥
सान्ति सिया सासुन पदलागी * कुमति सुमतिसीलै अनुरागी ॥
दीनअसीस अहोवात अभंगा * जब लग सम्भुसीसपरगंगा ॥
ब्रह्म त्रिया श्रुति जो घरआँई * सियासान्तिपद सब सिरनाई ॥
देंयँ असीस चिरंजीउ जोरी * भयो भोर कुछु जतन कहोरी ॥

इति श्रीसतसंगसागरेमानसेआनन्दकन्देब्रह्मचरितेनारन्तकरावण
बधेबभीखनराजप्रातिकपिसहेतरामअवधगवणेभर्थदुखनास्ते
जननीसहितअवधअनन्देभेंटबरणन
नामखस्टतीसोअध्याय ३६ ॥

---

गुरु निज नाम ब्रह्मधममूरति * सबमिलिएकबिचारसोसूरति ॥
आनँद रामतिलक हितसाजा * भयो भोर सब जुरी समाजा ॥
सिद्धि सिंगासन आनँद रामा * सहितसान्तिसियमनबिश्रामा ॥
बइठैं अवध अवधितकआसा * आखिरजगसब होयबिनाँसा ॥
सब मिलि मूरति रामसिंगारी * सिया सान्ति बहुभाँति सँवारी ॥
आनँद सान्ति जुगुलयहजोरी * करि गँठबन्धन गुरू बहोरी ॥
करि अस्तुतिस्तुतिसारनिकारी * सिद्धि सिंगासन प्रभु बैठारी ॥
नाम गुरू बसिस्ट मुनि ज्ञानी * कीन्ह्यौंतिलक तीनिगुनबानी ॥
रज गुन तिलककाम सुरकीना * सत गुनदान दीनजगदीना ॥
तम गुन तिलकखलनसिंघारा * त्रेइ गुन सम त्रेता अवतारा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सन्त सम्भु आयो तेहिं बारा * ब्रह्मा सहितलिये स्तुतिसारा ॥
सान्ति अनन्द राम सिय देखी * लाग्यो अस्तुतिकरनबिसेखी ॥
छं० जै सान्ति सिय आनन्द राममैं सन्तसमताउरबसौ।
कामादि चिन्ता भ्रम निसाचर बैठि ममउर खलडसौ ॥
सिद्धि सिंगासन मनोहर देखि मुनि मन मोहहीं।
मार्‍योनिसाचर बिकटभट छबि सगुणनिरगुण सोहहीं ॥
आतमा आनन्द राम सिय सान्तिमन नाहिं कहुँचलै।
असलखतनाहिं आनन्दउरतेहिबिनाखलनिस्चरछलै १५॥
छं० असकीन अस्तुतिसिवसदाँ तेहिसमयबिधिबोलतभयो।
जै ब्रह्म ब्यापक राम आनँद सान्तिसियउरभ्रमगयो ॥
त्रैइलोक पाँवनसुजस निस्चर मारि जगआनँदभयो।
संसै भ्रमादिक मान खल अभिमान उर सहजै गयो ॥
अब देउ यह बरदान मम उर सान्तिआनँदउरबसौ।
निजब्रह्मअस्तुतिअसकियो सुभबेदचारौउरलसौ १६॥

दो० असअस्तुतिब्रह्म सिव कियो प्रेमसो आनँदराम।
भक्तिलीनअनपाँवनी गयौ सोनिजनिजधाम ४००॥
हिंयाँ राम निज दलबिदा कीन्ह्यों करि २ बोध।
लै प्रसाद उर घर गयौ निजआतमकर सोध॥
अस निरगुनऔतार प्रभु निज २ सबउरमाहिं।
ताहिभूलि बहुदुखसहैं मानैंनहिंखल ताहि ४०२॥

चौ० बड़े २ भूलिगयोजगमाहीं * सिवकहसती सोमानेंउनाहीं ॥
तेहि हित जरीं पिताके भवना * छूटिगयो संकर पति रवना ॥
फिर लै जन्म हेमंचल गेहा * करि तप बाँध्यो संकरनेहा ॥
सुर अस्तुति सिव कीन बिवाहू * पूँछ्यो कथा मिटा उर दाहू ॥
भूले गरुड़ सुना रामायन * तबनिज जिवकै भईतरायन ॥
हिर्दय गरूर गरुड़ कर रूपा * बन्धन राम देखि भव कूपा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पारबती परे बात बिचारी * सुनुअगरीमतिबिमलतुम्हारी॥
कर्म प्रधान बेद गोहरावै * जो जस कर्म रूप तस पावै॥
अउर न कतहूँ राम निसाचर * बेदन दंतकथा कहिआगर॥
जो कुछु है सो निज उर माहीं * कस्तूरी मृग जानत नाहीं॥
कह्यों कथा रामा अवतारा * निरगुनसरगुनबिमलबिचारा॥
कुसलवकुस भै बिबिधि लराई * अस्सुमेध कीन्ह्यों रघुराई॥
लवकुस लव बेदन परमाना * सतसं समता कुस बिज्ञाना॥
अस्सुमेध मनभयो निरासा * तीनलोकतक ब्रह्मप्रकासा॥

दो॰ राम राज भा अवध निज तीनि लोक आनंद।
मोहनिसा भ्रमभूतगै मननिजसदाँसोछंद ४०३॥

चौ॰ धरिबिसवाँससुनैंनरनारी * मिलैं राम आनँद उर भारी॥
सरजू ब्रह्म बिचारै जाना * जो नर नारि करैं अस्नाना॥
अवधअवधिआतमनिजरामा * सुनिनरनारिसोमन बिश्रामा॥
कथा अलउकिक सतसंसागर * जो सुनि हैं नरनारिउजागर॥
ताहि सकल सुख दुरलभनाहीं * सुनि बिसवाँस धरैं उर माहीं॥
घर २ होंय आतमा पूजा * राम सेवाय देव नहिं दूजा॥
सकल नारि नर राम उपासी * सबके हिर्दय बसे अभिनासी॥
जग्गि कर्म घर घर संसारा * आतम पूजा ब्रह्म बिचारा॥

दो॰ राम चरित इतिश्री भयो मतिसमकह्योंबखानि।
सेससारदा पारनहिं सुनत जीवदुखहानि ४०४॥

इति श्रीसतसंगसागरेमानसेआनन्दकन्देब्रह्मचरितेरामाअवतारे निरगुणसरगुणजसेबरणननामसप्ततीसोअध्याय ३७॥

---

क्रेश्न औतार कथा॥

दो॰ क्रेस्न चरित प्रारम्भ अब कहौं प्रेम सुखधाम।
निरगुनसरगुनचरितप्रभुआनँदसालिकराम ४०५॥

चौ॰ कुछुदिनअनँदअवधमाचलेऊ * गुप्तहोनकरअवसरभयेऊ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

एक समय हनुमत अरु रामा * उत्तरदिसा गयो सुखधामा ॥
जहाँ नीलगिरि परबत श्यामा * कुंड दमोदर पर श्री रामा ॥
कहा राम हनुमत सुनों सइला * मलो देंहँ मम काढ़ौ मइला ॥
तुम्हरे कहां मइल भगवाना * असपुनिबिहँसिकहाहनुमाना॥
तुम्हरी कृपा चहे कढ़ि आवै * अउरमइल कहँ जग्तभ्रमावै॥
असकहिहनुमतमइलनिकारा * हिरणिगर्भ मूरति करि डारा ॥
करि पूजा दै मूर्ति सिराई * तब हनुमान पूँछि रघुराई ॥
तब निजगुप्त भेद कहि रामा * धरिनिजमइलमूर्तिनिजनामा॥
सालिकदास राम मम नामा * धरौं सक्ति निज मूरति रामा ॥
अब जो इनकै करिहै पूजा * पूर मनोरथ देव न दूजा ॥
कालिह गुप्त मैं होउँ जहाँना * सहितअवध निजदेंहँसमाना॥
लेइ जइहौं सबका निज धामा * अब जग खेल बन्द भै रामा ॥

दो० गुप्तरामकर भेद यह नीलसो गिरि निजज्ञान।
तहँलौं माया मइल धरि भेदजानि हनुमान ४०६ ॥

चौ० गात्रेतादोवापरअबलागी* बइस कर्म प्रघटैं अनुरागी ॥
सालिकराम मूर्ति संसारा * तिनभे होयँ क्रेस्न अवतारा ॥
आजु प्रघट भय तुलसा आपू * सालिकराम होउ जड़ आपू ॥
तब हम रहिबे सीस तुम्हारे * ज्ञान बिदेंहँ सो जड़अघटारे ॥
असकहि सकलगुप्त प्रभुभेदा * सुनि हनुमान सार रस वेदा॥
कह भगवान कह्यो कहुँ नाहीं * जबतक रहौं अवधके माहीं ॥
मम पाछे तुम्हरे ढिंग दीना * मूरति भेद कह्यो परवीना ॥
अस कहि चले अवधके माहीं * गुप्तभेद कोउ जानत नाहीं ॥
गयौ धाम लछिमनैं बोलाये * प्रात समयके चरित सुनाये ॥
कालिहकदिनजोकोउमोहिंदेखी* होयकाल मम सत्ति बिसेखी ॥
ताते मोरि करो रखवारी * ताकहु काल सेस अवतारी ॥
भोर होत भे बन्द कृपाला * आयउ नारद राम के काला ॥



CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भीतर चले लखन तब रोंका * आजुरामदरशन नहिंकहुका ॥

दो॰ आजुरामकर काल है जो कोउ लेई देखि।
कहनारद प्रभुकालकहँ लछिमनभूलिबिसेखि ॥
तुमते किहिनि दिल्लगी मानौं बचन प्रमान।
लछिमनआँटीचढ़िगयो दीन्ह्योभीतरजान४०८॥

चौ॰रामदीखनारदमुनिआये * तबलछिमनका निकटबुलाये॥
हमजो कह कोउ नहिं मम पाँहीं * आवै सो तुम मान्यों नाहीं ॥
नारदमुनि मम काल पठाये * तस तुमहूँ टरिजाउ सो भाये ॥
लखन कहा मैं कहँ टरिजाऊँ * कह प्रभु सरजू माँझ सबाऊ ॥
सुनिप्रभुबचनसो लखनप्रमाने * सरजू मा तेहि समय समाने ॥
कह प्रभु लखन सो अज्ञाकारी * सो सरजू के माँझ समारी ॥
हम जी कै अब करिबे काहा * अस कहि कूदे धार प्रबाहा ॥
यह सुनि भरत शत्रुहन धाये * दोउजन सरजू माँझ समाये ॥
सुनि सुत गये जननी उठिधाई * सब घर सरजू माँझ समाई ॥

दो॰ गिराजाय रनिवास सब अवध रह्यो कोउ नाहिं।
सरजू ब्रह्म बिचारमा लीन भयो सरि माहिं ४०९॥

चौ॰गुप्तसो मत जानौं गुप्तारा * तहाँ राम सब गा परिवारा ॥
नागेसुर रहिगे निज नामा * दुसरे हनोमान सुखधामा ॥
देंहँ अवध महि मिली बिचारा * ज्ञान बिदेंहँ सुन्नि अवतारा ॥
आनंद अरु बइराग भक्तिवर * सत्ति सोचारो भायसरजुघर ॥
सान्ति उरमला मान्डवि रानी * श्रुतिकीरति ईब्रह्म महराणी ॥
कुमति सुमतिअरुसीलसोमाता * इनकर अवधलगे लखुनाता ॥
फिरि पाछेका रहि हैं नामा * की हनुमान सो मन बिश्रामा॥
लौ सत सालिकराम देंहँधरि * तीनि लोक मारैं कलेसअरि ॥
घर लरु बन बाटिका उजारी * सब गिरि सरजूधार मँझारी॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

गये बैकुंठ अवध सब भारी * सुनुअगरीमतिहिदैयबिचारी॥
देखै लागि नगर हनुमाना *यकमगमाँभपराखलसोवाना॥
तेहि तन कीड़ा पुन्ज समाना * कहा राम ते जाय हनुमाना॥

दो० तुमतौकहौ अवधहम लइबे सबनिज साथ।
अबैअवधके माँभमा बहुतसोजीवअनाथ ४१० ॥

चौ०कहभगवानसुनौंहनुमाना* जो वहुपराअवधमा स्वाना ॥
वहिं चेला मूँड़े संसारा * लै धन नहिं भवसिन्धुउतारा॥
गुरू स्वान चेला भये कीरा * वइ गुरु हरि हैं उनके पीरा ॥
हमते काह परी हनुमाना * भेखधरेसिनहिंलखिभगवाना॥
कह हनुमान जोरि कर तारी * तुमहीं रच्छ्या करौ खरारी ॥
बहुतक बिनय कीन हनुमाना * तब दीन्ह्यौ यक परमबिमाना॥
लै बिमान आये जहँ स्वाना * तब कीरा जनहाइ बिमाना ॥
गये हनुमान रामके पासा * सब कीरन के बचन प्रकासा ॥
कह भगवान सुनौं कपिराई * तुमतौ महाँ लव्यार लगाई ॥
खैर तदपि लइजाउ बिमाना * लै आयो सबका हनुमाना ॥
फेरि अवधमा बैठेउ जाई * नागेसुर हनुमान गोसाई ॥
पुनि नागेसुर मन उनमाना * गयो पास यकदिन हनुमाना॥

दो० नागेसुर कह बचनअस सुनौं बीर हनुमान।
कुछौ जग्तके हेतका जतन कीन भगवान ४११ ॥

चौ० पूँछा रामकुशल उपकारा * सालिकराम कह्यो औतारा ॥
तब संकर कह म्वारौ कामा * करौ पाल्थी संगी रामा ॥
जहाँ राम भै सालिकरामा * तहँ सिव मूरति मनबिश्रामा॥
कहा पाल्थी पूजौ जाई * सिव हनुमत नरबदै पठाई ॥
बारा बर्स सो पूजा कीना * सिव सिरवाय पाल्थी दीना ॥
यक सम्पट दुइ मूरति धामा * नरबदेसुर अरु सालिकरामा॥
नारद यक दिन अवध पयाँना * आयउ पास जहाँ हनुमाना ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

करि दंडवत बैठि सुख धामा * कहौहनुमानकहाँ मिलैंरामा ॥
तब हनुमान बतायो भेदा * चरित नीलगिरिनरबदवेदा ॥
पाय भेद नारद मुनि चलेऊ * उत्तर दिसा नीलगिरिगयऊ ॥

दो० पहुँचिदमोदरकुंडपर करि अस्तुति मनलाय।
प्रघट्योसालिकरामउर कुंडदमोदर दाय ४१२ ॥

चौ० समतासम्पट मुनिबैठाई * नारद चल्यो नरबदै धाई ॥
हुँआँ नरबदेसुर प्रगटाये * सोवहि सम्पट मा बैठाये ॥
लै मूरति सूरति दोउ साथा * चल्यो जग्तदेखन मुनिनाथा ॥
गयो नंद आनन्द दुवारा * उतरे जाय हरन दुख भारा ॥
नन्द अनन्द कीनमुनि आदर * पूजासहित बिधाँनसो सादर ॥
पुनि नारद पूजा करि मूरति * तीन लोक ब्यापी जो सूरति ॥
तब करजोरि नन्द कह बानी * इउका कीन्ह्यौं कहौ बखानी ॥
तब मुनि कथा कह्यो समुझाई * अबजगमाप्रभु यइ सुखदाई ॥
नरबदेसुर अरु सालिकरामा * सब दुख हरैं देयँ बिश्रामा ॥

दो० ब्रह्म रूप दोउ मूरती ब्यापक सकल जहाँन।
त्रेता जुगभै बन्दअब इनभेदोवापरजान ४१३ ॥

चौ० जो पूजै मांगै मन माहीं * सकल पदारथ दुरलभनाहीं ॥
पुनि अस नन्द जुगुल करजोरी * यक अरजी प्रभु करौं बहोरी ॥
पुत्र बिहींन मैं जग्त अनाथा *तुमतजिमोहिं को करै सनाथा॥
तुम साधू परहित अवतारा * घूमत फिरौ सकलसंसारा ॥
ई दोउ मूरति हमका देहू * मम उपकार सुजस जगलेहू ॥
तब नारद दोउ दीन्ह्यों मूरति * अंडसकल ब्रह्मंडकि सूरति ॥
मूरति जुगुलनन्द धरि हाथा * नन्दधरेउ मुनिचरननमाथा ॥
नाम नरबदेसुर सुख धामा * सतसंगौ भरि सालिकरामा ॥
समता सम्पटसहित सो दीन्हा *बिदामाँगिमुनिगवँनसोकीन्हा॥
घूमत कंस गयो दरबारा * करि दंडवतिसोनृप बैठारा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो॰ कहाँते बिचरत आवते तुम नारद बिज्ञान ।
ब्रह्मरूप दरसी सदाँ करौ कछुक कल्यान ॥
ब्रह्म लोक ते आवहीं सुनौं कंस उरकसरि ।
जोतुम्हरेमनभ्रान्तीकुछसोनिकारिममआगेधरि ॥

चौ॰ कंसदेखायो आपनहाथा*कालसोममकेहिबिधिमुनिनाथा ॥
हाथ देखि मुनि कहा कृपाला * पुत्रदेवकी कर तव काला ॥
अपर न कोउ जग मारनहारा * कंस कसरि तुम भट संसारा ॥
तुम तिहुंलोक सुभटरणधीरा *कसरिकिबसचरअचरसरीरा ॥
तव भइँने भंजे तोहिं राजा * करौ उपाय काल सिर गाजा ॥
काल बताय बिचरिचलेनारद * जुगुतिबताय कंस करिगारद ॥
हिंयाँ कंस अपने मन भावन * प्रघट धर्मसुत लाग मरावन ॥
हुँआँ रोहिनी के बल्देऊ * हरु मूसरु लै प्रघटत भयेऊ ॥
माया मूसरु हरु अहंकारा * सुरति रोहिणी सिव औतारा ॥
पद निर बान रूप बल्देऊ * रूप नरबदेसुर फल देऊ ॥
यकदिन गईं देवकी रानी * मिलन जसोदे भगनी जानी ॥

दो॰ पूजादेखिसो मूरतिन कहा देवकी बाँनि ।
यहुकाजीजाकरतहैं बहिनीकहौ बखानि ॥
सत्ति जसोदे अस कह्यो सुनो देवकी देंहँ ।
ई भगवान कि मूरती दुखभंजैं जोइ नेंहँ ॥
यह सुनि बोलींदेवकीमम सुतकंस मराय ।
यकमूरतिजो देउमोहिंयेइ सुतलेंयँबचाय ४१८ ॥

चौ॰दीनजसोदैं मूरतिश्यामा * सबभयहरनसो सालिकरामा ॥
देंहँ देवकी लो सतसं लै * मरिहौं कंसकसरि तनके भै ॥
अउरि एक बहिनी मम अरजी* सुनौं करौ तुम्हारि जो मरजी ॥
मम सुत सेय देउ संसारा * आपनसुतमोंहिं देउ बिचारा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जनु तुम्हरे निहोर मैं पावा * यकबालकमोंहिंनयनदेखावा ॥
कह जसुदैं जेहिबिधिभलतोरा * चहै काल खइहै सुतमोरा ॥
त्वार कहा मैं अबकी करिहौं * दै सुतअपनगोदतवभरिहौं ॥
लै मूरति लौं सालिकरामा * गई देवकी तब निज धामा ॥
बासुदेव बासन्दर आगी * जेठरा आतस उरअनुरागी ॥
आतम क्रेस्न गर्भ उरमाहीं * येहिबिधिकछुकदेवसचलिजाहीं॥
प्रघट होंनकर अवसर आवा * तवहिं कंस रखवार पठावा ॥
हुँआँ जसोदाके भइ कन्याँ * जेहिबलक्रेस्नबचे जगधन्याँ ॥
प्रघटेउआतम क्रेस्न कृपाला * पहरू सोय गयो खल काला ॥
बेरी मोह कटीं तेहि बारा * खुलिगे अपनैं कर्म केवारा ॥
भादों भक्ति माँस सुखदाई * इष्ट अष्टमी बर सुखदाई ॥

दो॰ प्रघट भयो त्रेइलोक बर क्रेस्न आतमाराम।
कारा सानाअंकबर प्रघट सो सालिकराम ४१९ ॥

चौ॰ क्रेस्नपच्छकामनाबिचारा * प्रेम नछत्र रोहिनी सारा ॥
आतम क्रेस्न बासुदेव लीना * गो इन्द्री गोकुलचलिदीना ॥
जमुना जान उठीं उमड़ाई * क्रेस्न अपनपदशब्दछुवाई ॥
भँइँ थाही जमुना तेहि बारा * बासुदेव गये नन्ददुवारा ॥
हिंयँ कन्याँ हुँवँ बालक भयऊ * दै बालक कन्याश्रुतिलयऊ ॥
मथुरे गयो मनोरथ माहीं * यह रचना कोउजानतनाहीं ॥
कन्यालै कर दीन देवकी * देंहँ पुनीत जो ब्रह्मसेवकी ॥
दै श्रुति कन्यालै आतम क्रेस्न * मूरति पूजि भयो पूरी प्रस्न ॥

दो॰ बन्द केवारा बेरि परीं जगे पहरुवा बीर।
कन्याँ रोई धाम जब गयो कंस के तीर ॥
हाल सुनत कंसाचल्यो देखेसि कन्याँ रूप।
पटकउधोबीपटा मा दै अस हुकुमुसोभूप ४२१ ॥

चौ॰ पटा बरेठै पटक्यो जाई * पाँचो तत्तु बिखय समुदाई ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तब कन्याँ असमान उड़ानी * बोली शब्द कालसम बानी ॥
कह मोरे मारे का पाये * तोरिमरइया गोकुल आये ॥
असकहि नभ घनजायसमानी * हिंयाँ कंसकाँपा अभिमानी ॥
कहा कंस मैं कीन उपाई * आयो कालदाबि बरिआई ॥
कालते जोर चलतनहिं काहू * को बाँधै नद बारिप्रबाहू ॥
हुँआँ नन्दघर बजत बधाई * घर २ नारि निछावरिलाई ॥
घर २ मंगल सोहर बाँनी * सुनि २ होंयँ दइतकी हानी ॥
हुँआँ कंस पोतना पठाई * आय क्रेस्न हिंयँदूधपियाई ॥

दो० पूरन ब्रह्म कृपाय निधि तासे चाहत छलकरन।
दुस्टहिर्दयखलपोतनाअपनैचाहतजगमरन॥४२२॥

चौ० पोती बात पोतना जानी * भीतरछलमुख कोमलबाणी॥
छल बिख खइँचि दूधपी श्यामा * लीन प्रान खलदैंनिजधामा॥
यहिबिधिचरितकरतनितनयऊ * माटीखातजननिलखिलयऊ॥
दउरि जसोदैं मुख फइलावा * तीनिलोकमुखमाँझदिखावा॥
आतम रूप बिराट मुरारी * सक्कि जसोदालखिमहतारी ॥
माटी माया फँसे कन्हाई * सक्कि जसोदा गई भुलाई ॥
जैसे सपना देखि जहाना * जागेपर सब ज्ञान भुलाना ॥
देखेसि अपने अंतर माहीं * जागि परा फिरिमानेसिनाहीं॥
कहेसिआजमोहिंसपनदिखाना * गयों फलानी ठउरठिकाना ॥
देखेसि हिर्दय बतावै आना * यहिबिधिजसुदाउरअज्ञाना॥
जिमि बीजैं तरु देख्यो सपना * जनहुँ फरेनहैं कोटिकलपना ॥
जागे पर नहिं तरु फरमाया * देखेसि उरमा अंतभुलाया ॥
अस बिराट लखि जसुदामाई * आतमक्रेस्नचीन्हि सिरनाई॥
हम आपन सुत जानि भुलानी * छिमोछिमोअपराधअजानी॥

दो० देखि बिराट कपाट खुलि हाटहाट बैपार।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

क्रेस्न आतमारूप मम भयोप्रघटऔतार ४२३ ॥

इति श्रीसतसंगसागरेमानसेआनन्दकन्देब्रह्मचरितेसालिग्राम
जन्मेअवधबैकुंठनारदकर्मप्राप्तेगोकुलगवणेनन्दउप
देसेक्रेस्नजन्मेपोतनामाटीलीलाबरणन
नामअस्टतीसोअध्याय ३८ ॥

---

चौ० यकदिनजसुदामथैंमनियाँ ✻ दउरे क्रेस्न बैठगये कनियाँ ॥
पकरि मथानी होइगे ठाढ़े ✻ ढरकि महेंड़ी रिस उरबाढ़े ॥
जसुदा सुतै बहुत समुझावा ✻ आतम क्रेस्न न सुनैं सिखावा॥
माय महेड़ी मनैं मथानी ✻ दया दहीघृतजिउसुखजानी॥
दीन जसोदैं ऊखल बाँधी ✻ ऊखलहै उनमान समाधी ॥
लीन्हें फिरैं क्रेस्न अँगनाई ✻ फिरि बाँध्यो जमलामा जाई ॥
जमला जम भै लीन उखारी ✻ पुनि बिसमै फिरि भै महतारी॥
करि दंडवति प्रबल तव माया ✻ बार २ मैं सक्ति भुलाया ॥

दो० जमला अर्जुन ब्रिर्छभये अरि अर्जुन जमराज।
खोदि फेंकिदै क्रेस्न उर धन्नि २ बृजकाज ४२४ ॥

चौ० यकदिननिजउपरहितबोलाई✻ब्यंजनबहु प्रकारबनवाई॥
पाक बनाय लगायो भोगा ✻ पावै लागि क्रेस्न संजोगा ॥
नयन खोलिदुज दीख बिचारा ✻ कीन्ह्यों चउका छूति हमारा ॥
सालिग्राम भोग जहँ लागी ✻ तहँहमक्रेस्नपहुँचिअनुरागी॥
कह दुज का तुमहीं भगवाना ✻ रूप देखावउ तब मम ज्ञाना ॥
मूरति प्रघट होउ संजोगा ✻ आपन भागलेउ जगभोगा ॥
तब मूरति प्रघटे घनश्यामा ✻ ब्रह्मण हिर्दय भयो बिश्रामा ॥
ब्रह्मब्रह्म कहि चरण पखारे ✻ छिमौ जैति अपराध हमारे ॥

दो० ब्रह्मण ब्रह्म बिचार है आतम क्रेस्न सुजान।
भोग भाव श्रीक्रेस्नलै भा दुजके उर ज्ञान ॥
अस लीलाकरि बालपन बाहेर निकरनलागि।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ग्वालबाल संगी भयो बानी बर अनुरागि ॥
जाय गूजरी घरन मा दही चोरावैं कान ।
कोउ पकरे पावै नहीं गोकुल भरि बिकुलान॥
हैं गुजरानैं गूजरी गो इन्द्री संसार ।
दया दही चोरीकरैं लीला अगम अपार ४२८ ॥

चौ० एकसमयकहबचनकन्हाई * मैं गइया ताकन जाउँमाई ॥
गाय गरीब करौं रखवारी * जसुदा सक्किकहैं महँतारी ॥
कहैं जसोदा बहु तकवइया * अबैनबनतुम जायोकन्हइया॥
होयो बड़े बनैं तब जायो * बाँना बन सब गाय चरायो॥
कान्ह जासोदैं बहु समुझावा * नहिंमान्यों कीन्ह्यों मन भावा॥
कह जसुदा बन रह्यो हुसियारा* बैरी कंस तुम्हार बिचारा ॥
सो न होय कहुँ डारै मारी * मुस्किलकै मोहिं मिले मुरारी॥
सालिकराम मूर्ति की दाया * आतम क्रेस्न पुत्र हम पाया॥

दो० कहा क्रेस्न सुनुमातुरी काकरिहै मम कंस ।
कसरि कंस मैं कालहौं जन्मचन्द्रमैंबंस ४२९ ॥

चौ० प्रातहोत गइया बनछोरी * जसुदा पीतर देउ निहोरी ॥
जात बनैं नँदलाल हमारे * कीन्ह्यों दया भरोस तुम्हारे ॥
सीस नाय दोउ निज करजोरी * सक्किजसोदा सुरन निहोरी ॥
गाय गरीब छोरि नँदलाला * आतमक्रेस्नसो दीनदयाला॥
कसरि कंसहुँअैं सुनिअसपाये * गाय चरावन मोहनआये ॥
पठै अघासुर अग संसारा * आतम क्रेस्न करौ सिंघारा ॥
कसरि कंसअघसुनि असबानी * चलाक्रेस्नमारन अभिमानी॥
साँझ समय गौधूरी बेरा * अघखलजाय क्रेस्नमगघेरा॥
सान्ति साँझ लील्यो अघगाई * ग्वालबाल मुख गयो समाई॥
दउर्‌यो अघ देखत नँदलाला * पेटफारि कीन्ह्यों अघकाला॥
बानी बाल गरीबै गाई * पेटकाढ़ि घरचल्यो कन्हाई ॥



CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बाल सहित घर गयो कन्हाई * घर २ चूंबैं सुत निज माई ॥
अब ना जायौं सँग नँदलाला * क्रेस्न साथ नहिं होइहैंकाल॥

दो० आजुदई बड़िखैरकरि बच्यौअघासुरघार।
अउरे दिन बचिहौनहीं मानौंबचनहमार ४३० ॥

चौ० कसरिकंसआतमकरबैरी * ऊपर क्रेस्न चढ़ी अनघेरी ॥
बानी बाल कहैं सब बाता * निडररहौसरस्वतिनिजमाता॥
क्रेस्न आतमा रामैं रूपा * मरि है कसरि कंस खल भूपा॥
याखौ आजु अघासुर मारा * जैं अघ कीन्ह्यों बस संसारा॥
कहैं जसोदा सुनौं नँदलाला * मान्यौंनहिंयाखौ खलकाला ॥
इन्द्री सुर मैं कीन निहोरे * तिनदीन्ह्यौंमोहिंक्रेस्नबहोरे ॥
कहा क्रेस्न का अबना करिहैं * संकठ परे खलन का मरिहैं॥
बिदुर सुदामा अर्जुन गइया * भरि २ पेट चराय कन्हइया॥
अस बतलाय सोयगयेश्यामा * भयो भोर जाग्यो घनश्यामा॥
लै गइया फिरि गे बन माहीं * कसरि कंस सुनि भैमनखाहीं॥

दो० देवस दूसरे बकासुर पठयो खलबकबाद।
लीनक्रेस्नअसमानउड़िग्वालनभयोबिखाद४३१॥

चौ० चोंचफारिकीन्ह्योंदुइफारा* दुस्ट महा बकबादसिंघारा ॥
जमुना जान तीर लै गइया * दाँन जगाती बाँधि कन्हइया॥
छोरत गाय बकासुर मारा * तीनि लोक भट बल संसारा॥
दया दही इन्द्री गो गुजरी * बेंचन जायँ क्रेस्न सबै पकरी॥
नित उठि दाँन दया लै दाँना * तब बेंचनें देयँ जग जाना ॥
साँझ भई घर गइया लाये * जसुदा बहुतभाँति समुझाये॥
अबना जाउ चरावैं गइया * बैरी कंस तुम्हार कन्हइया ॥
दुइ कालन ते राम बचावा * मानौं मोंहन मोर सिखावा ॥
कहा क्रेस्न सुनु जसुदा माई * सदाँ राम मोहिं साथ खेलाई॥
कोटि कंस का करिहैं मोरा * राम कृपा मानौं पदघोरा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो॰ होति भोर गइयालई ग्वालबाल सँगलीन ।
जमुनाजानकिनारेगये गोगुजरिनदुखदीन ४३२ ॥

चौ॰यकदिनग्वालनगायतकाई॥ गै बनसैरसो सायरकन्हाई ॥
बंस बाँस जंगल यक देखा * साररहितलखिकाटिबिसेखा ॥
एक बाँस मोंहन लै आये * ज्ञान भानु मा खूब झुराये ॥
लम्बी साढ़े तीनि सो हाथा * नौ इन्द्री करि सुर बृजनाथा ॥
ताकर नाम धरा प्रभु बंसी * निकरी शब्द गोपि गोफंसी॥
तब ग्वालन पूँछा सिरनाई * काह बनायो नाथ कन्हाई ॥
कहा क्रेस्न मुरली यहि नामा * सुनत श्रवण पइहैं बिश्रामा ॥
कह बालन यहि कहौ सुभाऊ * कौनि जतनकसशब्दसुनाऊ॥

दो॰ कहमोहनभोरहींसुन्यों यहिकरनादगँभीर ।
बाँनी सुनि सबमोहिहैं खबरि न रहै सरीर ॥
बंस बाँस तनकाढ़िलै नौ सुर नवधाभक्ति ।
तामें अनहदबेद कढ़े सुनिगो गोपिनसक्ति ॥
आतम क्रेस्न बतायअस बालक बाणीभेद ।
प्रेम मँगँनसब सभाभइ सुनत भेद रसबेद ॥
नवधाभक्ती अर्थसुर सुनौ सकलजनबाल ।
प्रथमभक्तिसतसंगसुर दूसरीकथा कृपाल ॥
तीसर सुर बिसवाँसहै कहौं चउथगुरसेव ।
पँचवाँसुरनिजभजनहै करैकाब्बिश्रुतिभेव ॥
छठवाँ बिरतीनितभजन सातसर्बमयजान ।
जातिबरणदोबारागयौ अठसंतोखसोज्ञान ॥
नउमासबछलहीनहोय मनभासदाअकाम ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तनबंसी ईसुर भयउ यहुमत सालिकराम ४३९ ॥

इति श्री सतसंगसागरेमानसेआनन्दकन्देब्रह्मचरितेग्वालिन
जगातेअघासुरबकासुरबधेबंसीप्रगटेभावप्रातेग्वालअनंदे
बरणननामनवतीसोअध्याय ३९ ॥

चौ० असकहिकेस्नबालसमुझाई * सांझहोत गइयाडगराई ॥
घर २ बालक खबरि जनाई * आजुचीज यकलायेकन्हाई ॥
नाम ताहि कर मुरली धारा * कालिहबजइहैं अवधबिहारा ॥
यह सुनि घर २ भई अनन्दा * जरि २ मरें कंस मतिमन्दा ॥
भोर भयो सब जुरी समाजा * अदभुतनादसुननसबसाजा ॥
बंसी सुनन हेत तिहुँ लोका * आयेसुरमुनिसिवलाखिमोका॥
लागे बंसी केस्न बजावन * दै २ कान सुनैं जस पावन ॥
बाजी बंसी त्रेइ गुन नादा * पल्टिदिहिसिबिधिकैमरजादा॥
जो जहँ सुनैं सोइ तहँ ठाढ़ा * मानहुँचित्रमांझलिखिकाढ़ा॥
को कुछु कहै न कोउ कुछुपूँछा * प्रेम भरे उरनिजमद छूँछा ॥

दो० बाजी बंसी केस्नकी मोह्यो तीनौंलोक।
सूर्जचन्द्रमा रथ थके जमुनाजाँन बिसोक ४४० ॥

चौ० बंसीलीनसकलमनमोही * जिमि गुरिया सबसूते पोही ॥
तिमि बंसी सब हिर्दय समाई * सबके मन लै हाथ कन्हाई ॥
जै जै कार भई संसारा * जैं सुनि बंसी नाद बिचारा ॥
सकल भाव होय बंसी बोली * तेहिकर अर्थ कहौंसबखोली ॥
कोउ बंसीसुनि रस बस भयऊ * काम बाँन लागतमनघयऊ ॥
कोउ बंसी सुनि कर्म उपासन * सुखउनमानसोपरमंहुलासन॥
कोउ बंसी सुनि भयो बिदेहाँ * तनमन धनघरबिसरेउनेंहाँ ॥
कोउ बंसी सुनि होइगा ज्ञानी * अपनिआतमाउरपहिंचानी ॥
कोउ बंसी सुनि लीन्हेउँ भक्ती * पायो ब्रह्म सार उर सक्ती ॥
कोउ बंसी सुनि भयो बिरागी * माया मोह सकलउरत्यागी ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कोउ बंसी सुनि लै अनुरागा ❋ स्वावतते आपनमन जागा ॥

दो॰ कोउ योगीभोगीभयौ कोउ समाधि के माहिं।
परमहंससन्यासिकोउ प्रेमअचलधनपाहि ४४१ ॥

चौ॰कोउदानीकोउहोइगामानी❋ कोऊ कबेसुरअदभुतबानी ॥
कोउ भै नारि कोऊ भै मरदा ❋ प्रेम बाँन बंसी उर सरदा ॥
कोउ भै पंडित कोउ ब्रहमंडित ❋ कोउ नारी भईं चंडितमुंडित ॥
तीनि लोक बंसी सुनि मोहा ❋ रहिगा कंस क्रेस्नकर द्रोहा ॥
सकल भाव होय बंसी बाजी ❋ पद निरबाँन साजसबसाजी ॥
जाके हिर्दय जइस ब्रिस्वासा ❋ सो तस बंसीसुनि भा दासा ॥
बंसी राग बन्द ज़ब भयऊ ❋सबनिजधामनगवनतभयऊ ॥
अस्तुति करैं क्रेस्न सिरनाई ❋ धनि बंसी भल शब्द सुनाई ॥
सब पाछे शंकर अस्तुति करि ❋ चारिबेदका सार हिर्दयधरि ॥

छं॰ जैतिक्रेस्नचन्द्रबंस बंसी अवतंसफंस चारि बेदसार भार तीन लोक धारनं। जैति कान्ह मानज्ञान रूपजग्त हौ समान आतमा अखंडब्रह्मरूप तवअपारनं ॥ जैति मोहनरूप सोहन तीनि लोक बुद्धिदोहन बंस बाँसबंसिकाटि तीनिलोक मोहनं। जै २ नँद लाल ख्याल तीनिलोक डारिजाल भक्ति भावप्रघट भयो गयौ मोह कोहनं ॥ जै २ बिहारि नित हियारि सम्भुदास हैं तुम्हारि आपनी कृपा कटाक्ष मोरि ओर हेरनं। कहत सालिकराम सम्भु जैति क्रेस्न धर्म खम्भु भक्ति आनपावनी सत संग घर बसेरनं १७ ॥

दो॰ करि अस्तुति श्रीक्रेस्नकी सम्भुगयो कैलास।
हिंयँ ब्रजमहाअनन्दभये बंसीसोर प्रकास ४४२ ॥

चौ॰ बंसी नाद बन्दजब भयऊ ❋ सबकेनसा उतरि उरगयऊ ॥
सुर्जे चले जमुना बहि निकरीं ❋ घर २ ते ब्रजकी सखिनिसरीं ॥
तजि मरजाद मिलीं मनमोहन ❋ सब ब्रजभयो क्रेस्नबरभूखन ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

घर २ क्रेस्न भयो मन प्यारे * धनि २ जसुदा नन्द दुलारे॥
प्रघट भयो त्रेइलोक सोकहर * जै २ कार भई बृज घर घर॥
हिंयाँ गरीब गाय डगराई * आयो अपने धाम कन्हाई॥
बंसी कथा कह्यो सुख दायक * सुनौं गोबर्धनजससबलायक॥
पूजा इन्द्र क्रेस्न रुकवाई * इन्द्री सुर सब बिसयमिटाई॥
दो॰ लागि उपाधी करन सुर माया मेघ घुमंड।
बिसय बारि बरसन लगे इन्द्रिन सुर परचंड॥
नाम सो धन गोवर्धनं इन्द्र बहावन ताकि।
नखपर आतमक्रेस्नधरि इन्द्रीसुरगे थाकि ४४४॥
चौ॰ तबहींइन्द्रचरननसिरनाई * प्रभु महिमा मैं जानैं न पाई॥
की आतमा ब्रह्म अवतारा * आयो हरणसकलमहिभारा॥
छिमौ पाप मम सब घट बासी * कीनसाथ मैं छल अभिनासी॥
हम अजान सुर सदाँ भुलाने * आतमक्रेस्न तुम्हैं नहिंजाने॥
हम इन्द्री सुर इन्द्र जहाना * निसदिननाथरूपअभिमाना॥
तुम बिन छिमा करै को करमा * आतम क्रेस्नप्रघटहितधरमा॥
इन्द्रबचनप्रभुसुनि अस दीना * मेटेउ कर्म कृपा प्रभु कीना॥
इन्द्र क्रेस्न चरनन सिरधारी * गयो इन्द्रपुर उर सुखभारी॥
हिंयाँ क्रेस्न गै बन के माहीं * प्रेमसरूप हिर्दय मद नाहीं॥
की हम जीता इन्द्र जहाना * इन्द्री सुर हारे बलवाना॥
कहा इन्द्र ब्रह्मा ते जाई * गोकुल दूसरि ब्रह्म कन्हाई॥
सुनि बिधि चले कोपमनमाहीं * सदाँ रीति यक एक सियाहीं॥
आयौ बन बेढ़यो सब गाई * बालकसहितनजानिकन्हाई॥
करि निजहोस क्रेस्नबनमाहीं * द्याखैं बालक गइया नाहीं॥
दो॰ कौन दुसरिहा मम भयो बेढ़यो बालक गाय।
तरु २ वृन्दाबन लखैं मनमा सोच सुभाय ४४५॥
चौ॰ गइयाबालककोहरिलइगा * मोरिगरीबी लै दुखदइगा॥
CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

देहौं कौन भेद घर जाई * आयौं गइया बाल गँवाई ॥
करिउर सोच सँभारिनिजरूपा * कीन्ह्यौं प्रघट गाय बलभूपा॥
गाय गरीबी बालक बानी * आतमक्रेस्नप्रघटिसुखखानी॥
बिधिमाया नहिं लागि कन्हाई * अद्भुत भेद बरणिनहिंजाई ॥
सदाँ दीन पद क्रेस्न पियारा * बानी पालन हित अवतारा ॥
फिरि वइसे गइया भै बालक * पूरन ब्रह्म क्रेस्न के ख्यालक ॥
लखि चरित्र मोहनके ब्रह्म्मा * गयोहारि खायो मन भ्रम्मा ॥

दो॰ जैसे कोई संतजन लेंयँ गरीबी पन्थ।
सरबब्यापी मायदै हरि गरीबि बनि ग्रन्थ ॥
आतम राम न फिरिरहे निज हिरदयके माहिं।
बानी गइँ निरबान पद फँसिमायासुख नाहिं ॥
होय बुद्धि जो प्रबल भट प्रघटि गरीबी फेरि।
जसमाया आई तसगई फेरि गरीबी घेरि ४४८ ॥

चौ॰ यहिबिधिक्रेस्नगायप्रघटाई * कोउजानैं नहिं भेदकन्हाई ॥
वइगइया वइ बालक बछरे * साँझ होत लै लै घर डगरे ॥
यहिबिधि चरितब्रह्मनितखेला * सब कुछहै फिरिआपुअकेला॥
लै बंसी नित क्रेस्न बजावैं * गोइन्द्री गोपिका नचावैं ॥
सकल जगत इन्द्रियन नचाई * माया बस चर अचर भ्रमाई॥
सो इन्द्री आतम प्रभुदासी * होय गोपीरस लै अभिनासी॥
गोपी क्रेस्न खेल नित नयऊ * आतमक्रेस्नचीन्हिसुखभयऊ॥
आतमचीन्हिसो मननँदलाला * यकदिनकीन्ह्योंबृजअसख्याला॥
यक दिन खेलैं गेंद कन्हाई * खेलत गिरो जमुनमा जाई ॥
जमुना जान गेंदगिरयोज्ञाना * कूद्यो आतम क्रेस्न सुजाना॥
गयेतेहिछिनपाताल कन्हइया * गोकुल परी हाय अरुदइया॥
बूड़ि गयो जमुना नँदलाला * पहुँचि पतालसेसजहँकाला ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो॰ रूप कल्पना कालिदह तहाँनागअनुराग।
देख्योक्रेस्नविखांगतन मुनिधीरजजहँभाग ४४९ ॥

चौ॰ सोवैनागनागिनी जागी * कहा क्रेस्न जगाव अनुरागी॥
दीन जगाय नागिनी काली * फन पर बैठि नाँथि वनमाली॥
लै अनुराग नाग कर काला * निकस्यो जमुना ते नँदलाला॥
देखि क्रेस्न धायो बृजबासी *जायँनजीकनकोउअभिनासी॥
फन पर नृत्त करैं नँदलाला * सहसौ फन फुस्करैं कराला॥
सहसा सहसौ फन कठिनाई * बिना क्रेस्न को बसि कै लाई॥
लीन्हें फिरैं नाग नँदलाला * सुनत कंस भा बहुतबेहाला॥
सब अनुराग कालकरिदरसन * धन्निक्रेस्नतनमनकरिपरसन॥
जमुना जान नाग धरि दीना *पुनिनिजभवनगवनप्रभुकीना॥
सक्कि जसोदा हिर्दय लगाई * यहुका कीन्हेंउँ बाल कन्हाई॥

दो॰ तीनिलोकका कालयहु सेसनागअनुराग।
सहसासहसौफनप्रबल बच्योधन्निममभाग ४५० ॥

चौ॰तुम्हरेभयनहिंमननँदलाला*पकरतिफिरौंअपनिनिजकाला॥
काटि खात जो तुम्हैं कन्हइया *तौहमबिलखिमरितघरमइया॥
कहा क्रेस्न जननी तव दाया * का करि है काली मम माया॥
यहिबिधिक्रेस्नचरितसुखसागर* बृज मा करैं सो प्रेमउजागर॥
आतम ब्रह्म क्रेस्न अवतारा * राधा माया संग बिहारा॥
नित उठि रहस होय बृजमाहीं * तनमनधनगोपिनसुधिनाहीं॥
यक दिन राधामन अभिमाना * हमरी बसिभे क्रेस्न सुजाना॥
जाना क्रेस्न हिर्दय सब कारन *यकदिनचरितकीनदुखटारन॥
लैं प्रसाद गईं सब बन माहीं * सो प्रसाद पायो प्रभु नाहीं॥
कह वहि पार जाउ बिसवाँसा * प्रथमपवावउ रिखिदुरबासा॥
कह गोपिन जमुना मग माहीं * केहिबिधिजाईहमरिखिपाँहीं॥
पइठौ जमुनैं अस कहौ हाला * जो हम मा फँसिगे नँदलाला॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तो हम राधा राह न पाई * असकहिउतरिगईसुखदाई ॥
जाय दुरबासै भोजन दीना * पायसोप्रेमसहितरिखिलीना॥

दो० कहराधैं हम पार कस अब जाई रिखिनाथ।
पुनि दुरबासैं असकह्यो जमुनैं नायो माथ॥
जो रिखि भोजन स्वादनहिं दूबै कियो अहार।
तौ हम गोपी बूड़ैं नहिं असकहि भईं सबपार॥
कहराधैं जमुना सुनैं झूँठि गवाही दीन।
भोजनकरिकसस्वादनहिं क्रैस्नदिसउरालीन४५३॥

चौ० जमुनैं जान गवाहीदीना * माया राधैं कान न कीना ॥
राधा उर छल मोहन जाना * कीन्ह्यों त्याग हिर्दयभैज्ञाना ॥
निन्द्याअस्तुति सम निजदासा * तिनकर नाम सदाँ दुरबासा॥
ताहि कहा जो इन नहिं माना * बिनात्यागनहिं मुक्तिठिकाना॥
दुरबासैं मैं प्रघट देखावा * राधै उर बिसवाँस न आवा॥
अस बिचार उर चितभा दूरी * माया ते प्रभु कीन सबूरी ॥
राधा लछिमी कर अवतारा * करि उर त्याग बिसयसंसारा॥
उर निज भेद न कोउ कहुँजाना* करि भोजन घर कीन पयाना॥
हुँआँ कंस अस हिर्दयबिचारा * की मरि हौं की जइहौंमारा ॥

दो० बैरी मोरे सीसपर धउँसनि सही न जाय।
ममगुजरिनितेकरलियो तनकु न कालडेराय॥

चौ० यहबिचारकरिगर्गबोलाये* दोउ भाइन का नेवतपठाये॥
गर्ग गर्भ नेउता लै आये * सुनिदोउ भाइनमनसुखपाये॥
सुनि अस नेवत क्रैस्न हरखाने * आनँदनन्द जसुदामुरझाने॥
निज सुत बहुत भांतिसमुझाये * मारनहित तुम्हैं नेवतपठाये॥
कहा क्रैस्न जननी भै नाहीं * जइ हौं कसरि कंस के पाहीं॥
तुम्हरी कृपा सन्त की दाया * मूरति सालिक राम सहाँया॥



CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

लव सतसं उर सालिक रामा * तिनका सुमिरि करौं संग्रामा ॥
जमुना जान सहाँय हमारी * असबिचारिभयतजुमहतारी॥
मातु पिता पदधरि धरि सीसा * दोउभइया चलिभेजगदीसा ॥
कोउ धनु बाँन कोऊ हरु मूसर * करै सामना को जग दूसर ॥
दो॰ पीताम्बर कछनी कस्यो दोउजन भयोतयार।
मनहुँ काम निजरूपधरि जग्तबिजैऔतार ४५५ ॥
चौ॰ पद निरबान रूपबल्देऊ * आतम कैस्न साथ चल्देऊ ॥
जमुना जान उतरि भै पारा * कुबरी कूबर कुमति सुधारा ॥
लीन कसरि कंसै जय माला * आगे चले कंस के काला ॥
संखचूड़ ते परी लड़ाई * दोउ भइयन बैकुंठ पठाई ॥
संखचूड़ संका बधि डारा * दोउ भाइन आगे पगु धारा ॥
दुसरै फाटक गज भइ भेंटा * लीन प्रान खल एक चपेटा ॥
मारि गर्भ गज लीन्ह्यौं प्रांना * दै बैकुंठ सो कृपानिधाना ॥
तिसरे फाटक मल्ल लड़ाई * बिबिधि भांति भै जोर सुहाई॥
अर्थ धर्म कामादिक चारी * मल्ल मनोरथ भट सिंघारी ॥
चउथे फाटक गये नँदलाला * बैठ्यो कंस सो जहाँ नृपाला ॥
कसरि कंस कै पकरि झोटइया * पटकि दीन लैप्रान कन्हइया ॥
इन्द्रिन सुर फूलन झरिकरहीं * फूले फिरैं फूल सुख भरहीं ॥
मथुरा मनैं मनोरथ जीती * उग्रसेन उग्र भाग सो प्रीती ॥
दीन्ह्यों राज परम सुखदाई * तीनि लोक भै जीति कन्हाई ॥
कीन्ह्यों सकल सुरन के काजू * उग्रसेन दीन्ह्यों शुभ राजू ॥
दो॰ मथुरामारहे कछुकदिन करि कुबरी ते नेंह।
फेरि बसायो दोवारिका गो गोपी भइँ खेह ४५६ ॥

इति श्रीसतसंगसागरेमानसेआनन्दकन्देब्रह्मचरितेबसीशब्देत्रेइलोकमोहे गोबर्धनप्रसंगेब्रह्मागउहरणेप्रघटेनागनाथेकंसबधे उग्रसेनराजेकुबरी नेहेदोवारिकाबसेबर्णननाम दसतीसोअध्याय ॥ ४० ॥

---

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो० दोइतिरहितसोदोवारिका समसमुद्रकेमाहिं।
जुरासिंधुआदिकहन्योबेहिरुक्मिनिनजाहि॥
जुराजवाँनी सिंधुहैं तेहि बधि आतमश्याम।
रुक्मिनि आठोसिद्धिहैं मनमहलनबिश्राम॥
सांतिदया संतोखसतिजबद्रिढ़ता मन माहिं।
ज्ञान भक्ति बिस्वास उर आठसिद्धि ईआहिं ४५९॥

चौ० द्रुपदी भक्ति बढ़ायो चीरा * दुसह दुसासन मार्‍यो बीरा॥
राम नाम दुइ पद उर जाना * तेहि उर द्रुपदी रूप प्रमाना॥
आतम क्रेस्न प्रबल ब्रहमंडा * दीन्ह्यौं साथ पंचतत पंडा॥
नकुलआगिअरजुननभजानी * भिम्मसेन बरपवन बखानी॥
बारि दुधिस्ठिर सहदेव धरणी * ई पाँचौ पंडा बर करणी॥
राम नाम दुइ पद द्रुपदी बर * पाँचौ पंडनकी भँवरी पर॥
जोरसो जिरजोधन बलवाना * लै पंडनकी राजि समाना॥
क्रेस्न स्वारथी पंडन केरे * जिरजोधन दल जाय गेरे॥
दुइति सो द्रोणा चारज बीरा * कौरव पंडव गुरू अधीरा॥
भिखम भाव प्रबल बलवाना * सालिसमान बीरजिमिज्ञाना॥
हैंअभिमान्निसरिसअभिमाना * महाँ सुभटकौरवदल जाना॥
नभ अरजुन के क्रेस्न स्वारथी * समर प्रबलभये महाँभारथी॥
जिरजोधन दल सब सिंघारा * अरजुनतिलककीन श्रुतिसारा॥

कुंडेलिया। नेउते गये श्रीक्रेस्नजी जिरजोधनके धाम। देखि बिदुरका दोवार जब तहँ उतरे सुखधाम॥ तहँ उतरे सुखधाम गयौ भीतर मनरंगी। नारिबिदुरकीदीखनहाँती बैठीनंगी॥ देखि क्रेस्न केदली फल लाई। सालिकरामसो खाउ सजीवनिमूरि सोहाई॥ यह बिचारि बकलादियो केदलीफल संसार। गूदा सब नृप जानिये बकला दुखी निहार॥ बकला दुखी निहार क्रेस्न लगे बकलै नीके। आयौ हमरे धाम लगे गूदा नृप फींके॥ सालिकराम

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्रेम पथ ऐसा। नंगी माया रहित बिदुरघर ख्याल भे जैसा २॥

चौ० बिदुरसुदामेंआनँदकीन्हा * आतमक्रेस्नकस्टहरिलीन्हा॥
दया बिदुर जन स्वास सुदामा * आतम क्रेस्न दीन बिश्रामा॥
भरुही भाव बचायो अंडा * महभारथ माया दलखंडा॥
ऊधो ध्यान बृजे पहुँचाये * तिनगोपिन गो ज्ञानसिखाये॥
ऊधो ज्ञान न गोपिन लीना * ज्ञान छुटाय प्रेम भरि दीना॥
भे गोपिन के ऊधो चेला * भरा बिराग प्रेम अलबेला॥
ऊधो ज्ञान सो गोपी प्रेमा * जलमाआगिपरत भये छेमा॥
प्रेम ते ज्ञान पार नहिं पावै * आगि बहुत जलथोर बुझावै॥

दो० लाली स्याही हाथलै सा अच्छर लिखिदीन।
ऊधो कह्यो सो क्रेस्नते गोपिन अरजी कीन॥
सा अच्छर पहिंचानिकै कबहूँ अइहैं बृजे।
पातीदीन्ह्योंहाथमा ऊधो क्रेस्नके निजे ४६१॥

चौ० ऊधोगोपिनलीनकलेसा * जाय दोवारिकै कह्योसँदेसा॥
तुम्हरे बिरह सकल नँदलाला * इन्द्री गोपी फिरैं बेहाला॥
कहेनि कि दरसनदैहैं किनाहीं * तबकह क्रेस्न आवैं ममपाँहीं॥
कहा क्रेस्न बृज अबनाजइहौं * सबगोपिन का हिंयैं बोलइहौं॥
कहा क्रेस्न ऊधो सुनौं भाई * कहँआयो निज ज्ञान गँवाई॥
कह ऊधो लखि गोपिन प्रेमा * छूट्यो ज्ञान ध्यान मम नेमा॥
यतरा कहि पाती कर दीना * सा अच्छर मोहन लखिलीना॥
देखत सा भये क्रेस्न उदासा * पहुँचे बृज का हिंयाँ लहासा॥
यक टकलागिनयनझरिपानी * तब ऊधो बोले अस बानी॥
का गोपिन कुछु जादू कीना * बाँच्यो सा कुछु उतर न दीना॥

दो० ऊधो सा कर अर्थ यह मोंसे कहा न जाय।
लउटिजाउबृजफेरितुमगोपिनपूँछ्योजाय ४६२॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ऊधो कह दोउ जोरिकर सुनौं क्रेस्न ममामित्र।
गोपिन तुमते अंतकुछु तो नहिं म्याँटो चित्र॥
धरि धीरज श्रीक्रेस्नकह ऊधो सुनौं बयान।
लालीस्याहीसालिख्यो लागिलालसाकान ४६४॥
चौ० सुनि ऊधोगोपिनकरपाती* बुझा ज्ञान भै सीतलछाती॥
ऊधो प्रेम धारगये बूड़ी *गोपिन लीन्हेंउँ हमका मूड़ी॥
यक दिन लैगोपिनका अरजुन *गयौ दोवारिकै दरसनगरजुन॥
सब बाहेर गोपी बइठाई * गयेअरजुन जहँसभाकन्हाई॥
करि प्रनाम कहि गोपिनहाला *तब अस बेहँसिकहा नँदलाला॥
अरजुन जाउसखिनसमुझाई * भूसण बस्त्र हुँवें धरि आई॥
सब बे पर्द लै आवउ पासा * सरम कहाँ मैं सबघट बासा॥
मैं ब्यापक सरबत्र जहाँना * उनते मैं यहु सिखयौं ज्ञाना॥
जो जानै महिका करिमानस * तौ नहिं गोपी पइहैं दारस॥
सुनि अरजुनगयेगोपिनपासा * क्रेस्न बचन सबकीन प्रकासा॥
कहैं गोपी नहिं लाज बिहीना * चहैंदरसन चहे नहिंमनदीना॥
अससुनिअरजुनगयेप्रभुपाँहीं * कहगोपी मनतीं अस नाहीं॥
कहा क्रेस्न फिरि लै बृजजाऊ * हिंयँ गोपी नहिं दरसन पाऊ॥
अरजुन चले सोच मनमाहीं * बिनु मरजी आयेनसुखनाहीं॥
दो० लै अरजुन गोपिन चले बृज तनलिहिनितकाय।
हिंयाँ क्रेस्न काबा पठै गोपिन मगै लुटाय॥
अरजुन चला न जोर कुछु टूटिगयो उरमान।
गोपी नंगी फिरैं बन क्रेस्न प्रान दै दान॥
बूड़ि तलइयन मरि गईं तब मोहन तहँ आय।
यक २ गोपी लहास लै भेंटैं हिर्दय लगाय ४६५॥
चौ० कहैंमोंहनसुनौसबजनभाई * इनबड़ि कीन मोरि सेवकाई॥
ललिता लवलागीं उरमाहीं * सो छिन यकमनबिसरतनाहीं॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चन्द्रसखी मोहन उरलाई * मनहुँ चैंन भेंटत सुखदाई ॥
भेंटि चित्त चित रेखा गोपी * मिलि २ लेइँ जिमींमातोपी ॥
हिर्दय बिसेखा बिसरत नाहीं * बिनती समसुख प्रेमसमाहीं ॥
अगरी गोपी लागीं अंगा * लखैं अनंग प्रेम सतसंगा ॥
राधा लछिमी मम अरधंगी * चारिउ जुगन सदाँ मनसंगी ॥
देवकी देहँ जठर बसुदेऊ * मारे परे भेंटि लै तेऊ ॥
सक्ति जसोदा आनँद नन्दा * करिजदुबंस प्रलयक्रेस्नचंदा ॥
कहि महिमा सबके सुखदाई * जोयहि महिम्रतिकाकोउखाई ॥
होइहै ताहि परम निज धामा * गोपिन दीनप्रान जहँ दाना ॥
मारेउ काबा काम बहोरी * सब दोवारिका उदधिमाबोरी ॥

दो० महाँ प्रलय जदुबंस भा क्रेस्न खेलभा बन्द।
सुनिजसदासनअनदँ भै जरि२ मरे मतिमन्द ॥
साँति सहोद्राआत्मक्रेस्न पदन्निबानबल्देउ।
ऊधो ध्यानसो साथ लै वड़िया उर चल्देउ ॥
वड़िया उर त्रिपुराहन्यों तीनहुँ गुन सिंघार।
आप पिंडके माँझ धसि भयोबोद्धओतार ४६८ ॥

इति श्रीसतसंगसागरेमानसेआनन्दकन्देब्रह्मचरितेक्रेस्न
चरिते समातेनामएकचालिसोअध्याय ४१ ॥

---

चौ०कह्योंचरितमतिसरिसकन्हाई*जिमिबुँदमाँझसमुद्रसमाई ॥
जिमिसफरीसरमुख चलैधारा * तिमि मैं कह्यों क्रेस्न ओतारा ॥
जिमिपिपीलसिकतालैसरकर *तिमिकहिक्रेस्नचरितप्रभुबलवर
जिमिभवउदधिसोकिघटजाया*तिमिकाहिक्रेस्नचरितमनभाया॥
जिमि अंधेरेलठियाबलजाना*तिमिजेहिचरितताहिबलज्ञाना॥
जिमि पंछिन नभ थाह न पाई * तिमिकहँलगिजसकहौंकन्हाई ॥
सेस आदि जेहिजस नहिंपारा* सोकहँलगिकोउकही बिचारा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जिमि महि रेनुका गनि नहिं जाई * तिमि आतम जस थाह न पाई ॥
गोपीगण इन्द्री हैं जामें * हैं चैतन्य रूप हरि तामें ॥
बृज बिलास के यह चौपाई * गोपी क्रेस्न हिर्दय सुखदाई ॥
सोइ मैं कथा कह्यों उर माहीं * बेद सार छलबल मन नाहीं ॥
मति इतिश्रि भये सालिकरामा * क्रेस्न चरित पूरन बिश्रामा ॥

दो० क्रेस्न आत्मा ब्रह्म के चरित पवित्र वोदार।
कह्यों आपनी मतिसरिस सुनत जीवभवपार ४६९॥

इति क्रेस्न अवतार समाप्त ॥

---

## अथ बोध औतार ॥

चौ० क्रेस्नचरितसमाप्तसोआगरि * सुनौं बोधके चरित सोनागरि ॥
सुनौं बोध जस अब मन भावन * सुन्दर चरित दास हित पावन ॥
सतजुग प्रात पहर दिन त्रीता * तीनपहर दोवापर दिनबीता ॥
रहा पहर दिन तब कलिलागा * कलिमलमाससरिस अनुरागा ॥
एक साल सतजुग सम जाना * त्रेता दूसर साल प्रमाना ॥
तीसर सम्बत दोवापर लागा * तिनके दिन निकारि अनुरागा ॥
कलिजुग कीन्ह्यों बिधि मलमासा * हरनाकस्टिब कस्ट बिनासा ॥
मुनि बसिस्ट दोवापर करि त्रेता * सो सुधारि बिधि दीन सचेता ॥
एक ते दुइ गन्ती जग जाना * कीन बसिस्ट तीन परमाना ॥
उल्टि दीन बिधि के मरजादा * सो बिधि दीन सुधारि बिखादा ॥

दो० कलिजुग बीतैं तीनि जुग सबजुग दिनमलमास।
तीनहुं जुग के दिन चलैं कलिजुग नहिं कुछु दास ॥
पहिले यक ते तीनि गनि फिरि दुइ ते गनि तीनि।
दोवापर गत दोवापर लग्यो पुनि त्रेताजुग कीनि ॥
त्रेतागत सतिजुग लगै फिर कलकी कलिराम।
कलिजुग मा दोवापर लग्यो कीन ब्यास सुखधाम॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कहीभागवति केस्नजस भक्तिरूप सुखदाय।
तेहिसुतज्ञान बिरागभै आपपरिच्छितखाय॥
जबलगजगजगन्नाथजी तबलग दोवापर राज।
पुनि पाछे त्रेता लगै रामचन्द्र महराज ४७४॥

चौ०कलिमादोवापरपंचहजारा * बरसैं चलैं सोसुजनबिचारा॥
तेहि पाछे त्रेता जुग लागी * हनोमान प्रघटैं अनुरागी॥
दोवापर बइस कर्म सिंघारा * आतम होम जग्गि संसारा॥
पूजा जोगि जाप उठि जइहैं * घर २ आतम ब्रह्म खवइहैं॥
धाम सकल तिरथन अस्नाना * सब उठवाय देहैं हनुमाना॥
राम मई घूमैं संसारा * लोभ मोह निस्चर सिंघारा॥
सुद्ध सतोगुण सब नर नारी * हिर्दय आतमा ब्रह्म बिचारी॥
ब्यापक ब्रह्म चराचर जानीं * यह बिचार दीनन का मानीं॥
रामैं राम सकल उर माहीं * संसय सोक मोह भ्रम नाहीं॥
तीनि हजार बर्स यह रीती * अगिनि देव पूजैं श्रुतिप्रीती॥
ब्रह्मण घर प्रघटैं हनुमाना * बिस्नुलाल तेहिनाम सुजाना॥

दो० इति त्रेता कल्जुग चलै बरसै तीनि हजार।
तेहि पाछे सतजुग लगै परसराम अवतार ४७५॥

चौ०त्रेतागतसतजुगफिरिलागा* लै अवतार ब्रह्म अनुरागा॥
जग्गि कर्म सब देहैं उठाई * अपने खाये सब कोउ खाई॥
यकजिउमाँभसकलजिउबसिहैं* ब्रह्म ज्ञानलै सबजग फँसिहैं॥
होम जग्गि नहिं रहै संसारा * जबते पर्सराम अवतारा॥
सास्त्र पुराण सहस भुज मरिहैं * मत बेदांत जग्त माचलिहैं॥
ब्रह्म ज्ञान घर घर संसारा * चारि हजार बर्स यह धारा॥
तेहि पाछे कलकी अवतारा * हरिहैं सकल धरणिकेभारा॥
सुर्ज ग्रहण जब कलिमा परते * ग्यारहबर्खसो कलिजुगघटते॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चन्द्रग्रहण जब कलिमा परहीं * चउदहबर्खसोकलियुगजरहीं ॥
सूम्बारिमा स्वारह बरसै *सुजनबिचारसोकलिजुगभरसै॥
गोबिन्दुवादसी कलि पारा * बरसहजार सो कलिजुगछारा ॥

दो० यतना कलिजुग नास है जब ई परबैं परैं।
संख्याकुछुलिखिदीनमैं कलकीकलिअवतरैं ॥
धर्म हानि जब होय जग तब नहिंलेखादेखहीं।
निजदासनकेहेतकाकलकीकलिऔतारहीं ४७७ ॥

इति श्रीसतसंगसागरेमानसेआनन्दकन्देब्रह्मचरितेचारौजुग
बिभागेकलिजुगमलमासेचारौजुगबासेपंचहजारदोवापर
बीतेहनोमानऔतारेरामराजेतीनिहजारबरसेगते
परसरामजन्मेनामधर्माअवतारेफेरिकलंकी
जसेकालिजुगगतेछिन्नेपर्वबरणननाम
दुतीयेचालसोअध्याय ४२ ॥

---

चौ० कलियुगकथाकह्योंमलमासा * जगन्नाथजसकरौंप्रकासा ॥
आतम बोध बोध सोइ रूपा * वड़िया वद्र बसे जगभूपा ॥
चन्दन चैंन पिंड सुखदाई * तीनहुँ मूरति बैठि छिपाई ॥
कह ऊधो ते बचन बिचारी * हमरे पिंड करौ रखवारी ॥
जब नौमासजाँयमोहिं बीती * होइहौं प्रघट जग्तकी रीती ॥
तब हरिहौं कलिके महिभारा * करिहौं बोध सकल संसारा ॥
अस कहि ऊधो पिंड तकाई * सात मास बीते सुखदाई ॥
ढीठ होय लगका बइठइया * एक कोखिके जिमि सग भइया ॥

दो० तबऊधोके हिर्दयअस आई कुमति बिचार।
पिंड खोलि देखनलगे सतवाँसा औतार ॥
हाथ पैर जामें नहीं लोंदवारूप सो देखि।



CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

खायौंभैमनबन्दकरि कायलभयोबिसेखि ४७९ ॥

चौ० तबमन्दिरमा भइ नभबानी ❋ ऊधो कीन जग्तकै हानी ॥
खण्ड मण्ड भा गर्भ हमारा ❋ अब रहिहैं गरभै संसारा ॥
खण्ड मण्ड जस गर्भ हमारा ❋ तस अब बहुत होंय संसारा ॥
आयरबल घटिगे जगमाहीं ❋ कोउ गर्भै कोउ पंच दसाहीं ॥
जाके बद्र गर्भ नहिं ठहरे ❋ नारि पुरुसजगदीस सिधारे ॥
गाँठिजोरिकीह्योंजायदरसन ❋ दै अटका पायो सुत परसन ॥
जगन्नाथ अस भेद बतावा ❋ श्रीमुख बचनऊधो समुझावा ॥
तब ऊधो बोले सिरनाई ❋ मम सिर चढ़यो पापसमुदाई ॥
जग्त भरे का हम लै पापा ❋ ममसिर चढ़यो ब्रह्मके आपा ॥
कुछु पातक हित कहौ उपाई ❋ अस कहि ऊधोपद सिरनाई ॥
कह जगदीस देहँ करौ छारा ❋ धरि अवतारहरौ महिभारा ॥
अब तुमहीं भे जग उपकारा ❋ तजि ममदासनअउरउबारा ॥
सुनि ऊधो अकास अस बानी ❋ करिदीन्ह्यौं आपनतनहानी ॥

दो० पातक देहीं छाँड़िकै ऊधो जगमा आय।
अपनिपापनिजनासहितब्रह्मचरनसिरनाय ४८०॥

चौ०तजिऊधोअसतनुश्रुतिसारा❋ आयसूरभयेबृजअवतारा॥
कीन्ह्यों प्रघट बोधजसपावन ❋ सब उर आतमबोधठिकावन ॥
जगन्नाथ महिमा सब गाई ❋ जस देख्यो तस प्रघट सुनाई ॥
कानन सुनि देख्यो नहिं काहू ❋ भये दुरबले दीन तहँ जाहू ॥
पायौ सुख अपने मनमाना ❋ तबते जान्यों सकल जहाना ॥
जिनके आवा उर बिसवाँसा ❋ ते दरसन करि होइगे दासा ॥
पाँयनि सुख अपने मनमाना ❋ आतमबोध बसेउ उर ज्ञाना ॥
जगन्नाथ मूरति नेंहँ करमा ❋ तन सभंग समान सो धरमा ॥
मीरा करमा सोना दासी ❋ बइठीं गोद बोध अभिनासी ॥
ई गोपी आईं संसारा ❋ बोध रूप सुनि २ अवतारा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ललिता मीरा सोना चंदा * करम बिसेखा आनँद नंदा ॥
दास सुदामा दुरबल जानी * दुइति रहितभै मुक्तिनिसानी ॥

दो॰ बाल्मिीक तुलसी भयो परसराम कब्बीर।
कहि दुरबचन सो रामका पाय जोलाहसरीर ॥
जगन्नाथके हुकुम ते ई आयो संसार।
कलिकेपापमलिच्छ भट करौंजाय सिंघार ॥

चौ॰ सूरति सूरभजन दिनराती * मीरा मीर प्रेम मदमाती ॥
सोना सुधि करमा नेंहँ करमा * कलिमलमासरहितमलधरमा ॥
तुल्यमान अपिमान बिचारा * सोइ जान्यों तुलसी अवतारा ॥
पाँचौ इन्द्री कसै सरीरा * भे अवतार जोलाह कबीरा ॥
चाँम चँमार देंहँ रैदासा * साधन सकल सधनकर बासा ॥
येहिबिधिबहुतिदासजगबोधा * पठे जग्त हित आतमसोधा ॥
सोदासन कहि सुन्दर बानी * मानत नहीं दुस्ट अभिमानी ॥
तेहि हित दुख पावै संसारा * बिना अन्न जल बस्त्र बिचारा ॥
सत जुग सत्ति तीनगुण त्रेता * दोवापरदुइ कलितमों अचेता ॥
ब्रह्माके यक दिन भरि माहीं * चारो जुग आवैं अरुजाहीं ॥

दो॰ निज दासन भे दुख हरे जे कोइ बोधसरूप।
तिनके दरसन जो करै परै न सो भवकूप ४८१ ॥

चौ॰ जगन्नाथसबजगासमाना * घर बन ज्ञान जहाँ अज्ञाना ॥
जगन्नाथ जागैं जग माहीं * अउरसकलस्वावैं सुधिनाहीं ॥
जो जागै सो जग्त जगावै * माया सपन जीव दुख पावै ॥
जगे कबीर हीर श्रुति काढ़ी * दीनजगाय अनँदजगबाढ़ी ॥
तुलसी जागे करि जग बोधा * रामनाम मारग जग सोधा ॥
जगे मलूक ढोवायो भारा * कउर खवायो सब संसारा ॥
जागे सूर पूर जस गावा * स्वारा कला क्रेस्न जसछावा ॥
जहँ लगि बोध ज्ञान अनुरागा * जगन्नाथतहँलगि जगजागा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

एक निसाचर त्रिपुरा बीरा * तीनहुँ गुनबल भटरणधीरा ॥
तेहि तिहुँ पुर कोउ जीति न पाई * हारे सुर करि बिबिधिलराई ॥

दो० रहै क्रेस्न करदासवहु तेहिबलनहिं कोउजीति।
सम्भुसहित हारे सकल दै तिहुँपुर भयभीति ॥
तब संकर गये बोधपहँ करिअस्तुति सिरनाय।
त्रिपुरासुर कै कथा कहि सुना बोध हरखाय ॥
कहा बोध संकर सुनों तुम जस कहौं सुजान।
त्रिपुरादासहैक्रेस्नकर मरैजतनकरौज्ञान४८४॥

चौ०त्रिनाज्ञाननहिंत्रेइगुनकाला * तुम जानौं सिवदीनदयाला ॥
सुख मन रथ बइठौ तुम सम्भू * मारौ त्रिपुरा त्रेइ गुन दम्भू ॥
सुर्ज चन्द्रमा पहिया जोरी * ब्रह्म स्वारथी रथ बइठोरी ॥
स्यामकरण घोड़ा रथ जोरी * सेसधनुस क्रेस्न बाँन बनोरी ॥
दाहिन सुर सूरज परकासा * बाँवाँ चन्दा सुरसुख बासा ॥
स्याम करण है ज्ञान बिरागा * रजु बिसवाँस प्रेम अनुरागा ॥
समता सर्फ धनुस सुखदाई * पूरन ब्रह्म स्वारथी भाई ॥
मैं आतमा क्रेस्न हौं बाँना * तुम संकर सतसंग समाना ॥
असकरिजतन मरीअभिमानी * अउरनहीं कउनिउँ बिधिहानी॥
सुनि संकर चलि भे सिरनाई * बोध कहा सोइ कीन उपाई ॥
परा सामना त्रिपुरै जाई * तब मोहन सिव बाँन चढ़ाई ॥
इस्ट देखि पाछे मुख फेरी * मारेउ संकर खेलि अहेरी ॥
जूभयो त्रिपुरा त्रेइ गुन बीरा * उतरि गई सब सुरभवभीरा ॥

दो० तीनहुँ गुनके जूझते भये आतमआनन्द।
सालिकरामकनामचला कट्योभरमकेफन्द ४८५ ॥

चौ०जै२कार भई तिहुँलोका * छूटि बन्दि सुरभयो बिसोका ॥
बरखैं फूल सकल सुर भारी * जगन्नाथ सिव जैति पुरारी ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जगन्नाथ आतम जग राजा * दीनदुखारिनकरिनिजकाजा ॥
जगन्नाथ जानौ निजजाँना * तिहुँपुर ब्यापिक ब्रह्मसमाना॥
होय दीन जेहि कुछु नहिं सूझा * करि निजबोधदरस सबबूझा ॥
छप्पन कोटि जादँवाँ माहीं * जगन्नाथ सरमुख सोइ जाहीं ॥
कोटि जन्म होय ब्राह्मण रूपा * बिद्यामान महाँधनभूपा ॥
करि समता समुद्र अस्नाना * जीवनमुक्ति मिलै बरज्ञाना ॥
बोध कथा इति श्री सुखधामा * कह्योसरिसमतिसालिकरामा॥
जो सुनि हैं यहु जस नर नारी * ताहिसकल सुख देहैंमुरारी ॥

दो० मिलै बांछना सकलउर धरिबिस्वास नरनारि।
सालिकरामसोबोधजससुनिसुखउरभयटारि४८६॥

चौ०मनबांछनासकलसुखपाई* जो सुनिहैं मनबुधिचितलाई ॥
बोध कृपा कुछु दुरलभ नाहीं * जो सुनि कथा धरैं उरमाहीं ॥
ज्ञान बिराग भक्ति अनपावनि * प्रेमपंथ सब देये सोहावनि ॥
भक्ति भाव हिरदय प्रघटाई * जो यह कथा सुनै मनलाई ॥
चारहु बेद सार जस भाँना * सुनतै बिमल हिर्दय भै ज्ञाना ॥
निरगुण सगुण गुप्त प्रभु भेदा * खोलि दीन सज्जन हितवेदा ॥
बूड़े बेद उठे उतराई * जबते सतसंसागर आई ॥
सतसंगसागर करि सतसंगा * अगरीसुमति विमलजसगंगा॥
छं० अगरी सुमति सतसंगसागर सुनतबोधजस पावनं।
आनंदकन्द सुभावनिरमल प्रेम जस मन भावनं॥
चारि बेद श्रुति सारबर जगन्यार आनँद दुखदहे।
गिरगुण सगुण जस संत सुख मनबोधअगमजसकोकहे॥
यह जानि सालिकराम सब तजिकाम बोधचरननपरे।
अब देउ यह बरदान सतसं भक्ति अनपावनि हरे॥

दो० अउरिकामनानाहिये बसौ बोध उर माहिं।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कामक्रोध मद लोभ भ्रम करौंसोनाँसक्रुपाहिं ४८७॥

इति श्रीसतसंगसागरेमानसेआनन्दकन्देब्रह्मचरितेत्रिपुरासुरबधे संतजसेबोधमहात्मेबरणननामत्रेइचालसोअध्याय ४३॥

इतिश्रीबोधऔतार समाप्त॥

---

## अथ कलंकी अवतार।

चौ॰ कहौंकलंकीअबजसपाँवन * कथाभभिक्खिअनंतसोहावन॥
गुर प्रताप सतगुर की दाया * कलकीजस सुन्दरमनभाया॥
देस काल सुभ हिर्दय बिचारी * जसमारगगावैं श्रुति चारी॥
जब अस पाप होय संसारा * तबकीन्ह्योमनसुजनबिचारा॥
पुनि लेहैं कलकी अवतारा * हरि हैं सकलधरणिके भारा॥
जब पसु वृतिहोयजायजहाँना * तब कलकी औतार प्रमाना॥
यहु सब जग होयजाय सुपंकी * तब धरिहैं अवतार कलंकी॥
कलिके पाप करैं सिंघारा * तब कल होई सब संसारा॥

दो॰ पसुवृति असअघ जानिये पेट भरै उरज्ञान।
प्रभुबिस्वासहिरदैंनहींमायाबसअज्ञान ४८८॥

चौ॰ लखौसुपंकीसुआकीचलनी * जो पालै तेहि ते छल करनी॥
काकी दादा बातैं गढ़ै * घात पाय पिंजरा ते कढ़ै॥
कारन पेट पढ़ै सुक बानी * अंतर भरी कपट की खानी॥
तिमिपंडित होइ हैं कलिकाला * पढ़ि हैं वेद पेट के जाला॥
धर्म ज्ञान हित सपनेउँ नाहीं * ना बिवेक अभिअंतर माहीं॥
विद्या पढ़ैं पेट के कारन * निजपरिवार के हेत उबारन॥
जैसे सुआ पाठ नित करही * पेट भरै कारन हित पढ़ही॥
बन छूट्यो पिंजरा के माहीं * चित्रकोट पढ़ै देखा नाहीं॥
अपने हाथ फँसा सुक प्रानी * पोंगीपकरिन छाँड़ि अज्ञानी॥

दो॰ मालिकगुन मानैंनहीं जो वहिकै करसेव।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

घातपायकर उड़िगयो सोच द्विनतन देव ४८९ ॥

चौ० उल्टापराप्रान चिचियायें * जनिमोहिंबाँधिअउरलटकाये ॥
चिरीमार दउरा धरि काला * पेट पेटरिया डारि बेहाला ॥
कोउ नारायन मिलिगे दाया * सान्तिरूप जगजालछोड़ाया ॥
दाया सतगुरु प्रान बचाया * तबते बन बनके फलखाया ॥
येहिबिधिजिउमायाफँसिजाला * कालसोचिरीमारकरख्याला ॥
हित अनहित नहिं जानैंमानीं * जोकर हित तेहिकेसँग हानीं ॥
अस सुपङ्कि जब सब संसारा * तब होइहैं कल्की अवतारा ॥
पुनि पसु चलनि होय संसारी * ना कोउ बेटी बहिनि निहारी ॥
सदाँ काम बस मद मतवारे * पसु नहिं बेटी बहिनि निहारे ॥
माया मोह फँसे घर लैरा * जानैं नहीं नाम निज सैरा ॥
खैंचि तुरावैं दउरैं धावैं * जब लगि नीरअहारन आवैं ॥
आपन भाग न खाँय अहारा * अउरे आगे टुरावैं चारा ॥
यहि बिधि पसु होई संसार * लै परारधन खलअहंकारा ॥
नेकु न धीरज मनके माहीं * डहँकत फिरैं न पेट अघाहीं ॥

दो० काम क्रोधके बस परे ना उरमा कुछु ज्ञान।
बंस चलनि बोलीबोलैं सदाँ हिर्दय अज्ञान ४९० ॥

चौ० गलिन २ घूमैं छुछुआना * पेट भरै केहिबिधि उरज्ञाना ॥
पेट काज नित उठि जिउधावै * मानुसदेहँ कौन सुखपावै ॥
अउरु न जानैं राम रहीमा * माधो के सब कर्म करीमा ॥
नहिं बिसवाँस देहैं प्रभु चारा * अस पसु बृति होई संसारा ॥
तब प्रघटैं कल्की नारायन * हरैं सकल भ्रम जीवतरायन ॥
बरण अचार धरम नहिंज्ञाना * हिर्दय असत्तिमोहमदमाना ॥
चोर लबार उठाईगीरा * कबौं न जइहैं श्रुतिकेतीरा ॥
निज धन गाड़ैं परधन हारी * निसदिन नयनन पापखुमारी ॥
मातु पिता सुत गुरु सिखिबानी * वदर भरनकी राह सिखानी ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कोउ ना पूँछै मुक्ति निसानी * कालबलीकी खबरिभुलानी ॥
इरखा पुरखा छल भरि पूरी * दुख सुखमा नहिं नेकुसबूरी ॥
काम क्रोध ब्यापे उरमाहीं * मातु पिता गुरु मानतनाहीं ॥
निज त्रिय वचन करैं परमाना * सब उर दुबिधाअपनबिराना ॥
छुधा ब्याधि बाढ़ी संसारा * दउरैं सब चर अचरअहारा ॥
मानुखि रूप न कोहु कर देखी * राम नाम नहिं उरभरि सेखी ॥

दो० छूति पाप बेइमानि उर ज्ञान रहित संसार।
संकर बरण जहाँन भै तब कलकी अवतार ॥
सब कपटी बेइमान उर उठा धर्म करमान।
राजिनेति राजन तजी भाँड़ पतुरिया प्रान ॥
निज स्वारथ जग प्रीति रहि का साधू का ग्रेह।
राम नाम चरचा उठे मुख देखे कर नेह ॥
प्रेम प्रीति बिसवाँस गये सब निज २ मनराज।
भक्तिभाव आनन्दनहिं निसदिन मायाकाज ॥
अबला निरखैं परपुरुख पुरुखु बिरानी नारि।
नित कलेश छाती चढ़ा बैर भाव संसारि ४६५ ॥

चौ० यहिबिधिपापबढ़ाकलिमाहीं * बेद बिप्र कोउमानतनाहीं ॥
सन्त गऊ ते मति भै न्यारी * बुद्धि भ्रष्ट होइगे संसारी ॥
महा पाप कर बाप प्रमाना * जेहिउरजेहिजुगज्ञानहेराना ॥

इति श्रीसतसंगसागरेमानसेआनन्दकन्देब्रह्मचरितेकलउ बिभागेचरित्रेकलंकीनारायणहेतेवरणननामचतुर्चा- लसोऽध्याय ४४ ॥

---

चौ० कहँलगिकलिकेपापबिचारा * सुनौं हेत कलकी औतारा ॥
यक होइ प्रघट बीर बलवाना * मेंहदीहसन नाम तेहि जाना ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मुसलमान कर दल लै कोपी * हिन्दू धरम लेय सब तोपी ॥
सब हिन्दू पीड़ित संसारा * सबके लेई नेम अचारा ॥
कंठी तिलक साधु कर छोरी * सब दुजजनौं लेइ जगतोरी ॥
गाय कटाय देय मुख माहीं * तिहुँपुर कोउ भट जीतत नाहीं॥
हिन्दुन त्रियधरि२ करि भोगा * बढ़ा पाप संसार अजोगा ॥
बेद पुरान दिहिसि बोरवाई * हसन हुसन ताजिया उठाई ॥
महिजित मन्दिर देइ गिराई * पूजा जग्त नेवाज उठाई ॥
खुदा रूप प्रघटै संसारा * आप न मान सो जग्त पसारा॥

दो॰ बड़ा तेज बलवान भट सकल मानिजगहारि ।
मेंहदीहसनकनामरह धर्मसकलजगजारि ४९६ ॥

चौ॰ महाँअकच्छ भईसंसारी * कोउ जीततनहिं ताहि सुरारी॥
कोटिन दल हिन्दू नित मारै * काहु बसावै कोहू उजारै ॥
मुसलमान हिन्दू जो होई * तेहि पर रच्छया करिहै सोई ॥
मारत हिन्दू जब रहे थोरे * तब सबमिलि कलकीकरजोरे ॥
सब मिलिगे सम्भरि के माहीं * करैलागि अस्तुति छलनाहीं ॥

छं॰ लाग्यो करन दुजसकल अस्तुतिप्रेम बारिद्रिगभारिकै ।
जैति ब्रह्म ब्यापक सदाँ निज हाथ जोरि सिरधारिकै॥
बिप्र गो सुर सन्त हित अवतार तुम धाख्यो सदा ।
अब कहाँ दीनदयाल गै दुज धर्म लै खल मनमदा ॥
चारहु जुगन जबधर्महानि अवतार तुम धाख्यो तहीं ।
सकल सुर दुज दंडलखि बेलम्ब कबौं लायो नहीं ॥
येहि भाँति हरहु कलेस अब जो भक्त बत्सल नामहीं ।
आतमा परमातमा अस देत चारो श्रुति सही ॥
सुनि दीन बाँनि दयाल आनँद बाणि भै आकासनं ।
तुमधरहुसालिकराम धीर मैं हसन मेंहदी मारनं १८॥

दो॰ जाउ बिप्र निजधाम तुम मैं हरिहौं महिभार ।



CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

देवश्रमी की कोखि मा मैं लेहौं अवतार ४९७॥

चौ० बिस्नुसरिउममपितुकरनामा ॥ जन्मबिप्रघरमनबिश्रामा॥
चलति बार बिप्रन सिरनाई ॥ कछु मुख अस्तुति फेरि सुनाई॥
जै कलकी कल्यान हमारा ॥ हिन्दू धरम भयो जगछारा॥
जै आतमा ब्रह्म नारायन ॥ हनौं मलिच्छी दइतमलायन॥
नहिं हिन्दू धम गा संसारा ॥ मेंहदी हसन कीन सिंघारा॥
दीनदयाल धर्म प्रतिपालक ॥ असुरबंसके तुम नितसालक॥
तुम्हरिहि नाथ धर्म मरजादा ॥ प्रघट बेगिहोउ नाथ बिखादा॥
हम हिन्दू सब दीन पुकारी ॥ प्रघटउ दीनानाथ खरारी॥
कहप्रभु दुज मम मान्यौंबानी ॥ सत्ति २ दुख करिहौं हानी॥
मोरे बचन धरौ बिसवाँसा ॥ पंच देवस भीतर दुखनासा॥
गयौ देव दुज निजनिजधामा ॥ सुनि प्रभुबचन भयोबिश्रामा॥

दो० देवश्रमी के गर्भमा आयो कलकी राम।
अकसमादगापेटबढ़ि भयोसकलसुरकाम ४९८॥

चौ० बिस्नुसरिउदेवश्रमीअचम्भा ॥ हेनारायणयहुकाकिम्भा॥
आकसमाद पेट बढ़ि आवा ॥ को मोरे धौं गर्भ आवा॥
नहिं रतिपतिनहिंसुरलैभागा ॥ यहकाहिर्दयकलंक सो लागा॥
पंच देवस बीते यहि भाँती ॥ पुर्सनारिदोउजन बिलखाती॥
आकसमाद पीर उर माहीं ॥ बारह बर्ख रूप प्रघटाहीं॥
तेहिछिनसम्बत बरमलमासा ॥ जेठमास परचंड प्रकासा॥
तिथि सुन्दर बर पूरणवाँसी ॥ रोहिणीनछत्रजन्मअभिनासी॥
दिन मंगर सुन्दर सुभ जानी ॥ आधीराति सो रैनि भिहानी॥
यक असिलै प्रघटे भगवाना ॥ बारह बर्स रूप निज ज्ञाना॥
पीतम्बर कछनी सुभ काछे ॥ मोरमुकुट तनश्याम सो आछे॥
कँवल नयन देखत भयलागे ॥ पूरनब्रह्म रूप अनुरागे॥
उरभृगुलता परम छबि देही ॥ कालरूप अवतरे सनेही॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

माता पिता देखि भय खाये * तब कलकीदोउजन समुझाये ॥
मातु पिता भयतजौ मनंकी * मैं अवतार भयौं अकलंकी ॥
करिहौं दइतमलिच्छ सिंघारा * परलय करौं सकल संसारा ॥
सुनि माता पितु धीरज आये * करिस्तुति चरनन सिरनाये ॥

दो० खेलन निकस्यो प्रात प्रभु देख्यो सब संसार।
रूपअनूप बिलोकि सब चक्रित चितै बिचार ॥
यहु को निकरा फारि महि अदभुत रूपअखंड।
रोमरोम प्रति लाग्यो कोटिकोटि ब्रहमंड५००॥
जान्यों प्रघट्यो राम अब भार हरण संसार।
नर मनुस्सि कोउ है नहीं इनकी सरिस बिचार ॥
लागी चरचा बढ़न जग पहुँची दइतन पास।
यकप्रघट्योकोउदेवमहिनिजमनहिर्दयबिलास५०२

चौ० सम्भरिगाँउमुरादाबादा * सुनिअभिमानीभयोबिखादा ॥
एक दूत तहँ दीन पठाई * लावउ देव पकरि तुम जाई ॥
गयौ पास कहि दइत हेवाला * मार्‍योअसिकीन्ह्योंखलकाला ॥
येहिबिधि जउनुइँआवतजाई * तेहि कलकी सुर धाम पठाई ॥
सुनिअसबीरसकलदलसाजा * आई सम्भरि सकल समाजा ॥
घेरेनि नगर निसान बजाये * लै असि कलकी बाहेरआये ॥
देखि सकल दल दइतन केरा * दुस्टन सम्भरि नग्रसो घेरा ॥
तबमारन लाग्यो दलकलकी * नारायण के असिरणचमकी ॥
जेहितन घूमैं कलंकी नरायन * को दुस्टन दल करै सहाँयन ॥
दुइ २ खंड कीन सब दलके * कोउ २ कायर रनते सरके ॥
यक छिनमा सब दल सिंघारा * तुर्क मलिच्छी सब संसारा ॥
सम्भरि खून धार बहि गंगा * तुर्क मलिच्छी सबदल भंगा ॥

छं० भंग सब दल कीन कलकी धर्म हिन्दू बचि गयो।
ब्रहमांड खंडन खंडजुद्ध महि रुधिर परिपूरणभयो॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

घ्रिद्ध काग सृगाल भरि २ वद्र आमिखखावहीं ।
चंडमुंडन जोगिनी लिये हाथ खप्पर धावहीं ॥
पी रुधिरमहि संग्राम सबकलकी कृपा जय २ करैं।
जै ब्रह्म ब्यापक सरबदाँ उर पेट तुम बिनुको भरै ॥
सबदेव जयजयकारकरि आनन्दतुम बिनुको दई ।
हिन्दूधरमप्रतिपालकरि असिघूमिगैब्रहमँडमई ॥
कलिकालपापकरालभटमेंहदीहसनअवैरहिगयो ।
तेहि ढूँढ़ि मारौकृपानिधियहिहेत जगपातकभयो ॥
तब लागि कलकी रामढूँढ़न हसनमेंहदीकहँरह्यो ।
यहि बीच सैंना साथ कुछु मेंहदीहसनआवतभयो॥
परेसामना कलकीसमर सबसाथदलछिनमाहरे ।
मेंहदी हसन आगे गयो कलकी द्रिगन खूनैंभरे ॥
लागीसमरदोउजननहोनदोउहाथअसिअससमरकरि।
जिमिसूर्ज चन्द्रमपूरदिनबहि रुधिरपूरण देवसरि ॥
सुर्जकलकी चन्द्रमेंहदि घुमिघूमिअसिबरसतभई ।
तबमारिमेंहदीहसनका दुइखंडकरि महिजयलई ॥
भै तुर्कवंसजगनासि खल मेंहदीहसन जबते मरे ।
नारिपुर्स नहिं जग रहे सब तुरुक मालिच्छीहरे ॥
कलकी सकल निजधामदै पाठान पठै बैकुंठनं ।
जग हिन्दुसब आनँदभयो तिहुँलोकमाआनंदनं १९ ॥

दो० निज असि काटयोतुरुकसब पठैदीनखलभिस्त ।
जोदकसे बाहेर कियो कलकीसबै नामिस्त ५०३ ॥

चौ० भई बिखमसम्पूर लराई ✻ सबसुरसुमनबृस्टि झरिलाई ॥
नारद आदिक सब मुनि आये ✻ जयजयकरिकलकी गुनगाये ॥
जय भगवन्त अनन्त नमामी ✻ भलमारयो यहुभटजगनामी ॥
ब्रह्मा बिस्नु महेसौ आये ✻ करिअस्तुतिकलकीसिरनाये ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जय जय ब्यापक ब्रह्मदयाला * भलमार्‌यौ निजधर्मककाला ॥
हि कीन्ह्यौं चरअचर दुखारी * तुम बिनु को यहि हनैंखरारी ॥
प्रसकहिकहिसबजयजयकरहीं * पूरणब्रह्म सो पद सिरधरहीं ॥
नबजग दुज आयो तेहिंकाला * भलमार्‌यौ यहुखल चंडाला ॥
तीन उबारि धर्म प्रतिपालक * यहु होइगा तीनौं पुरसालक ॥
महा अनन्द भई जग माहीं * ढूँढ़े तुरुक रह्यौ अब नाहीं ॥
हसन हुसन जस दीन कलेसा * तिनका मार्‌यौ तुमहिंनरेसा ॥
क्रिस्न रूप धरि खल सिंघारा * तेहिबिधिमेंहदीहसनसोमारा॥

दो० तीनि लोक अस्तुति भई कलकीजयजयकार ।
सकल देव निज साथलै घूमि परे संसार ५०४ ॥

चौ०देख्योसबब्रहमांडनिहारी * पाप सकल महिछायसुरारी ॥
हुकुम फेरि निज धर्म चलावा * उजरे हिन्दू फेरि बसावा ॥
जगमा बाँध्यो धर्म कि रीती * चारौबरणसोनिजनिजप्रीती ॥
सकल पाप कलि दीन बहाई * कलकी जयजयसबमहिछाई ॥
नारि पुरुस भै ब्रह्म उपासी * घटघट बासकीन अभिनासी ॥
नहिं कोउ जग्तकाल भयमाना * जबते राजकलकी भगवाना ॥
बूड़े बेद उठे उतराई *जनुजगमानवनिधिफिरिआई॥
जो नहि मानैं बचन कृपाला * तेहि हिन्दूके होइगे काला ॥
कलजुग कलसबभयो जहाँना * कलकी नारायन दे ज्ञाना ॥
धर्म बढ़ाय लउटि गे सम्भरि * मातु पिताकेचरननसिरधरि ॥
सम्भरि बसे देव लै साथा * तिहुँपुर आय चरणधरिमाथा॥

दो० राज कलंकी रामकर सबकल भयो जहाँन ।
तिलकचढ़ायोसकलमिलिबैठितख्तभगवान ५०५ ॥

चौ०एक रह्यो भावछुजराजा * साँतिनगरबसिसहितसमाजा॥
ताके यक कन्याँ भग्त्यानँदि * कीनबिचारसोनृपउरआनँदि॥
कलकी नारायण कर ब्याहू * करि बिचार उर भयो उछाहू ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

यक दिन सम्भरि नेवत पठाये * देव सहित भगवान बोलाये॥
सभा स्वयम्बर रोंप्यो राजा * तीनिलोक सब आइ समाजा॥
दै जयमाला कर भग्त्यानँदि * सकलसभा देख्यौउरआनँदि॥
देखि रूप कलकी नारायन * बरजयमालहिर्दय पहिरायन॥
भई सभा सब सकल अनंदा * मनहुँ सुर्ज पूरण बर चंदा॥
भग्त्यानँदि कलकी भै ब्याहू * तीनि लोक सुर भयो उछाहू॥
दाइज भयो परम अधिकारी * ब्याह जनौं यक मँड़ये सारी॥
दो॰ फउजै तोप खजान सब सेवक सेवकि दीन।
माँगिबिदासुरसकलप्रभुसम्भरिकाचलिदीन ५०६॥
चौ॰ भावद्धुज राजा सिर नाई * कलकी सबदल बिदाकराई॥
भग्त्यानँदि कन्याँ लै साथा * आयो सम्भरिप्रभु जगनाथा॥
देवश्रमी करि बिमल आरती * भग्त्यानँदी पत्वाह उतारती॥
आये बेहि घर कलकी रामा * भग्त्यानँदिसँगकरि बिश्रामा॥
कछुक देवस बीते सुखदाई * भग्त्यानँदि यकसुत प्रघटाई॥
नाम ताहिधरि परम चिरंजीउ * कलकी सेवकभयो महाँजिउ॥
नित उठि धर्म सिखावैं कलकी * तीनिलोक आनँदध्रमधनकी॥
कलकी गुन गावैं नर नारी * जय भग्त्यानँदि मातुहमारी॥
बसि आनन्द कछुक दिन बीते * आईप्रलयसमय सुख बीते॥
यक दिन भग्त्यानँदी बोलाई * ताहि चरित कछुगुप्त सुनाई॥
कलकी नारायण अस भाखा * गुप्त भेद कछु गोय न राखा॥
दो॰ प्रिया बसौ बैकुंठ तुम विद्या दासि समेत।
मैं परलय संसार करि दुस्ट झरावौं खेत ५०७॥
चौ॰ भग्त्यानँदि दासी लैसाथा * जाय कीन बैकुण्ठ नेवासा॥
बर्स हजार राज प्रभु कीना * तीनौंलोक जग्त सुखदीना॥
अब देहैं दुख सब संसारा * महाप्रलयकरिसृस्टिसिंघारा॥
यहुमत प्रभुकर नाहिं कोहुँजाना * इन्द्र बोलायो तब भगवाना॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ह्यो इन्द्रते बचन बिचारी * बारह बर्ख न बरसेउ बारी ॥
ारह बर्ख बीति जब जाहीं * तबबर्खेउ जलप्रलयसमाहीं ॥
थी सुंड मेघ की धारा * बारहदिन जलझरिपरचारा ॥
तरी बात कही नारायन * कोहुतेजगनहिं इन्द्रबतायन ॥
अस कहि इन्द्र बिदा प्रभुकीना * गयो इन्द्र प्रभुपद धरिदीना ॥
ब्रह्मा बिस्नु महेस पठाये * करिअस्तुतिनिजधामसिधाये॥

दो० सुर मुनि संतन बिदाकरि आपगयो ससुरारि।
सकलफउजदैभावधुज सासुचरनसिरधारि ५०८ ॥

चौ० पित्वासासु दीनआसीसा * बाढ़ौ सुत जुगचारिबरीसा ॥
कहा सासु ते अस करजोरी * कुछु करिहौं मैं चरित बहोरी ॥
बारा बर्ख देवस बर दोवादस * कोउ नहिंदेखिगुफामामैंबस ॥
असकहि देवसचारि तहँ रहेऊ * भग्त्यानँदिके हाल सोकहेऊ ॥
बिदा माँगि सम्भरि का आये * मातु पितै बर बचन सुनाये ॥
कुछु दिन करौं गुफा मा बासू * बारह बर्ख सो अनँदानिवासू ॥
बारह दिन ऊपर तहँ रहिहौं * गुनाबाद दासनके गइहौं ॥
मोरे ढिंग कोउ आवै नाहीं * खोली गुफा काल तेहि खाहीं॥

दो० असकहि बैठ्यौ गुफामा कोउ जानैनहिंभेद।
बारा बर्खै जल नहीं भयो जग्त मा खेद ॥
बारह बर्खै जब गईं जग्त जीव भै नास।
धार छूटि ब्रहमंडते सुंड गयंद प्रकास ५१० ॥

चौ० बारहदिनमेघनझरिलाई * चढ़्योबारि ऊपर समुदाई ॥
तब निकरे कलकी नारायन * चिरंजीउ लै साथ सुहायन ॥
प्राग अक्षयबट कीन्ह्यों बासा * छुच्छिम तनधरि पात्रनेवासा॥
जस २ जल ऊपर चढ़ि गाढ़े * तस २ प्राग अछयबटबाढ़े ॥
चिरंजीउ कलकी नारायन * दोउजन पाता सैन सोहायन॥
सब परलय होइगै संसारी * आप अछयबट रहे खरारी ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

लख चौरासी जुइनि जहाना ❋ सबजिउ बसे हिर्दयभगवाना॥
चिरंजीव सुत उर बैठाई ❋ रहेकलकी अकसरि सुखदाई॥

दो० महाप्रलय संसारकरि गै बैकुंठ सो धाम।
भग्त्यानँदि त्रिय हिर्दयमा लागि करै विश्राम॥
भग्त्यानँदि दासी रहीं दोउजनि महाँ अनन्द।
कलकी अंतरध्यान उर छोंड़ि जग्तके फन्द॥
कलकीउर सब जग्त गये भक्ति हिदै भगवान।
कीन बासवैकुंठमा लखौ हिर्दय जेहिज्ञान ५१३॥

इति श्रीसत्तसंगसागरेमानसेआनन्दकन्देब्रह्मचरितेकलंकीनारायणप्रघटे
मलिच्छीबधेजग्तप्रलयअछयबटबासेबैकुंठनेवासेभक्तिदासी
हिर्दयबिश्रामेबरणननामपंचचालसोअध्याय ४५॥

---

चौ०अबनिरगुणजसकहौंबिचारी❋सरगुणजसइतिश्रीसुखकारी॥
बिस्नुसरिउ सतगुण सुखदाई ❋ देवश्रमी देहीं मन भाई॥
समता सम्भरि नम्र बिचारा ❋ मेंहदी हसन मान सिंघारा॥
भाव सो भावद्धुज हैं राजा ❋ पित्वा प्रीति सासु सब काजा॥
भग्त्यानँदि भफ्ती सुभ नारी ❋ बिद्यादासी परम पियारी॥
परलय कर्म भयो संसारा ❋ जलनिजजानबरसि सिंघारा॥
जान सो जल बाढ़्यो संसारा ❋ बट बिस्वास राम पग धारा॥
चिरंजीउ मुनि ज्ञान समाना ❋ जाइ बस्यो उर बरभगवाना॥
कलकी बसे भक्ति उर माहीं ❋ कलआतमासो कलकी पाहीं॥

दो० मंगल मंगर देवसलखि पुन्निसो पूरणवाँसि।
जेठजान आजानभुज रोहिनीउर अभिनासि॥
निन्द्याअस्तुति आधिनिसिसमजन्मेभगवान।
इतिनिरगुण अवतारउर जानैं जो विज्ञान ५१५॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor